# कैरली

2018-19

കൈരളി

KAIRALI

केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क प्रधान आयुक्त का कार्यालय, कोच्चि

OFFICE OF THE PRINCIPAL COMMISSIONER OF CENTRAL TAX & CENTRAL EXCISE, KOCHI

केंद्रीय राजस्व भवन /C.R. BUILDING, आई एस प्रेस रोड / I.S. PRESS ROAD, कोचिन /COCHIN - 682 018

## क्लब दिवस 2018 उद्घाटन/ Club Day -2018 Inauguration

केरल के माननीय राज्यपाल श्री पी सदाशिवम से प्रधान आयुक्त महोदय द्वारा राजभाषा पुरस्कार[तृतीय स्थान] की शील्ड तथा वरिष्ठ अनुवादक द्वारा प्रमाण पत्र स्वीकार करते हुए । /

**Principal Commissioner and Senior Translator receiving Rajbhasha Puraskaar[3rd position] Shield and Certificate respectively from the Honourable Governor of Kerala Shri P. Sathasivam**

# कैरली

**केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय**
**आई.एस. प्रेस रोड, कोच्चि -18**
**की**
**त्रिभाषी गृह पत्रिका**

# Kairali

**Trilingual Departmental Magazine**
**of**
**Central Tax & Central Excise Commissionerate**
**C.R.Building, I.S.Press Road, Cochin-18**

.....

विभागीय गृह पत्रिका वर्ष 2018-19

.....


| | |
|---|---|
| प्रधान संपादक | के आर उदय भास्कर, केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क प्रधान आयुक्त |
| प्रबंध संपादक | श्रीमती राजेश्वरी आर नायर, संयुक्त आयुक्त एवं राजभाषा अधिकारी |
| संपादक | डॉ टिज़ू टी, केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, लेखा परीक्षा आयुक्त |
| [मलयालम | श्रीमती राजेश्वरी आर नायर, संयुक्त आयुक्त एवं राजभाषा अधिकारी |
| रचनाएं] | श्रीमती रानी सी आर, संयुक्त आयुक्त, (मुख्य आयुक्त कार्यालय) |
| संपादक | श्रीमती रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु, वरिष्ठ अनुवादक |


.....

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं. इनमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है ।

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | रचना | रचनाकर | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| 1 | एक मुलाकात, केरल और उसकी भाषा से | राजभाषा अनुभाग | 9-15 |
| 2 | स्वच्छता अभियान | निष्का सिंह | 16-17 |
| 3 | ज़िंदगी सफ़र बड़ा, राह भी अजीब है | आशा | 18 |
| 4 | ब्रॉडवे, एर्णाकुलम | राजभाषा अनुभाग | 19-21 |
| 5 | ज़िंदगी एक किताब, बचपन का ज़माना | अंकिता कुमारी | 22 |
| 6 | गर्मी की छुट्टियां | रोसेलिंड जोस | 23 |
| 7 | कबीर की चिंता | राजभाषा अनुभाग | 24-25 |
| 8 | एक नज़र भारतीय संस्कृति की ओर | राजभाषा अनुभाग | 26-28 |
| 9 | कोई खिलौना नहीं, मैं भी एक इंसान हूँ | नितेश सैनी | 29 |
| 10 | इतना गरम — दिल्ली ..एक यात्रा विवरण | रोसेलिंड जोस | 30 |
| 11 | केरल और मैं | मोहित कुंद्रा | 31 |
| 12 | सिसकती हिंदी | संजीव कुमार | 32 |
| 13 | एक अद्भुत औरत - माँ | रोसेलिंड जोस | 33 |
| 14 | राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, नियम | राजभाषा अनुभाग | 34-35 |
| 15 | ई - महाशब्दकोश, कंठस्थ | राजभाषा अनुभाग | 36-37 |
| 16 | हिन्दी पखवाड़ा समारोह - 2018 - 19 - एक रिपोर्ट | राजभाषा अनुभाग | 38-40 |
| 17 | चुटकुले | राजभाषा अनुभाग | 40 |
| 18 | बच्चों की चित्रकला | | 41-42 |
| 19 | फोटो - 43-कोच्चि आयुक्तालय में अध्यक्ष [सीबीआईसी] का दौरा,/44-ओणम समारोह 2019,/ 45- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2019,/ 46- क्लब दिवस 2018, आयुक्तालय के विभिन्न खेल टीमों के साथ प्रधान मुख्य आयुक्त,/47- दक्षिण क्षेत्र राजस्व [खेल व सांस्कृतिकमीट 2019 - कोच्चि आयुक्तालय के अधिकारी हिंदी नाटक में भाग लेते हुए,/48- महात्मा गांधी जी की 150 वीं जयंती के अवसर पर खादी भवन द्वारा खादी की बिक्री और आयुक्तालय के अधिकारियों द्वारा खादी कैशन ली,/49- सतर्कता सप्ताह 2019,/50- जी एस टी दिवस - 2018,/ 51- जी एस टी दिवस - 2019, /52- राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता, ओलिंपियन एवं ध्यान चंद पुरस्कार 2018 विजेता श्रीमती बॉबी अलोयिस को कोच्चि आयुक्तालय द्वारा सम्मानित किया गया,/53- केरल बाढ़ 2018 - कोच्चि आयुक्तालय के अधिकारियों द्वारा राहत कार्य,/ 54- कैरली विभागीय पत्रिका विमोचन, कोच्चि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति रोलिंग ट्रॉफी-कोच्चि आयुक्तालय को प्रथम पुरस्कार, हिंदी पखवाड़ा समारोह 2018, नासिक, कोचिंग द्वारा आयोजित - कमोडोर अभिलाष टॉमी द्वारा एक प्रेरणात्मक वार्तालाप | | 43-54 |
| 20 | Unity in Diversity | Nishka Singh | 55 |
| 21 | Where there is a will, there is a way | Nishka Singh | 55 |
| 22 | Visit to a Historic place | Gayathri K.K. | 56 |
| 23 | Time shall heal it | Gayathri K.K. | 57 |
| 24 | നക്ഷത്ര കണ്ണുകളുള്ള പെൺകുട്ടി | ഡോക്ടർ റ്റിജു റ്റി | 58-61 |
| 25 | വിശിക്കാനെന്തെളുപ്പം | ഹാബ്ബി ഷിഹൻ | 61 |
| 26 | സൊഹരായി കാഴ്ചകൾ | ജിമ്മി ജോസഫ് | 62-68 |
| 27 | ചരക്കു സേവന നികുതിയും ചില വിധി നിർണയങ്ങളും | എം ആർ രാമചന്ദ്രൻ | 69-72 |


*मुख पृष्ठ - केरल के कोट्टयम जिले के कुमारकम रोड पर स्थित मलरिक्कल गाँव में 600-650 एकड़ से अधिक क्षेत्रों में गुलाबी कुमुदिनियाँ खिली हुई | /Front Cover - Pink water lilies in bloom over 600-650 acres of paddy fields at Malarikkal, a hamlet on the Kumarakom Road, Kottayam District of Kerala.*

*अंतिम कवर पृष्ठ - कोच्चि में देखा गया चीनी-[ मछली पकड़ने का जाल/ Back Cover-Chinese [fishing] nets seen at Kochi*

# संरक्षक के संदेश

कोच्चि आयुक्तालय की विभागीय पत्रिका "कैरली" प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । हिन्दी पत्रिका प्रकाशित करने का प्रमुख उद्देश्य है हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना। इस पत्रिका में हिन्दी के अलावा मलयालम एवं अंग्रेज़ी के लेख भी शामिल हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आप सबको मनोरंजक प्रतीत होगा और कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा ।

पत्रिका की सफल प्रस्तुति के लिए मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को शुभकामनाएं देता हूं ।

पु. नागेश्वरा राव

पुल्लेला नागेश्वरा राव, भा.रा.से.
प्रधान मुख्य आयुक्त

# प्रधान सपादक की कलम से

केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, कोच्चि की विभागीय पत्रिका "कैरली" आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गौरव का अनुभव हो रहा है ।

राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो सके, यह हम सबकी प्रतिबद्धता और दायित्व है । इस आयुक्तालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मेरा अनुरोध है कि वे राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए अपने कार्य में इसका अत्यधिक प्रयोग करें ।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े हुए सभी अधिकारीगण जिन्होंने पत्रिका को आप तक पहूंचाने में अथक परिश्रम किया है, वे धन्यवाद के पात्र हैं ।

के आर उदय भास्कर, भा.रा.से.
प्रधान आयुक्त

# संदेश

मुझे यह जानकार अपार हर्ष हो रहा है कि केंद्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, कोच्चि आयुक्तालय की पत्रिका "कैरली" का प्रकाशन किया जा रहा है । राजभाषा हिन्दी का प्रचार - प्रसार करने और उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि में पत्रिका का प्रकाशन एक अभिन्न अंश साबित होगा । पत्रिका मुद्रण में अधिकारियों के साथ - साथ उनके परिवार के सदस्यों ने भी अपनी बहुमूल्य रचनाएं देकर इसे और समृद्ध बनाया है ।

मैं "कैरली" के प्रकाशन में जुड़े हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देती हूँ,साथ ही पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ ।

राजेश्वरी

**राजेश्वरी आर. नायर, भा.रा.से.**

**संयुक्त आयुक्त [का. व सत.] व राजभाषा अधिकारी**

# संपादकीय

"भाषा वह साधन है ,जिससे हम अपने मन के भाव दूसरों पर प्रकट करते हैं ।"

भारत में अनेक समृद्ध भाषाएं हैं । इन भाषाओं में हिन्दी एकता की कड़ी है । हमारे संतों, समाज सुधारकों और राष्ट्र नायकों ने अपने विचारों के प्रचार के लिए हिन्दी को अपनाया, क्योंकि भारत में यही वह भाषा है जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक और राजस्थान के सुदूर पश्चिमी अंचल से असम के पूर्वी सीमावर्ती भू-भाग तक समान रूप से समझी जाती है । चाहे किसी भी प्रदेश का कोई भी व्यक्ति देश के किसी भी भाग में चला जाए वह टूटी-फूटी हिन्दी के माध्यम से अपने विचारों को दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने में सफल हो सकता है ।

भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार लगभग 1000 वर्ष पहले हिन्दी का विकास अपभ्रंश से हुआ । वस्तुतः संस्कृत का पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के माध्यम से विकसित रूप ही हिन्दी है । इस एक हज़ार से भी अधिक वर्षों की अवधि में हिन्दी निरंतर विकसित होती गई है । प्राचीन काल में संस्कृत राजभाषा थी । अशोक के शिलालेख पालि और प्राकृत में लिखे गए हैं । आचार्य कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राजपत्र और राजभाषा पर विस्तारपूर्वक महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं । उनकी मान्यता है कि शासन की भाषा में अर्थक्रम, संबंध, माधुर्य, औदार्य और स्पष्टता का होना नितांत आवश्यक है । इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि भारतवर्ष में प्राचीन काल में राजभाषा और राजपत्रों के संबंध में विचार-विमर्श होता रहा है ।

स्वतन्त्रता मिलने के बाद भारत की संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 के दिन हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई । संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार *"संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागिरी होगी ।"*

सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी उपकरणों के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया एवं संप्रेषण करता है । इस अंक में इस विषय पर एक लेख है जिसमें सी डाक व राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई - महाशाब्दकोश वेबसाइट व कंठस्थ सॉफ्टवेयर के संबंध में उल्लेख है | उम्मीद करती हूं कि आप सभी उनका सदुपयोग करेंगे|

इस पत्रिका के संबंध में आपके मूल्यवान विचारों और आलोचना से हमें अवश्य अवगत करायें, ताकि कैरली के आगामी अंक को और अधिक सुरुचिपूर्ण और उपयोगी बना कर आपके हाथों में सौंपा जा सके ।

रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु
वरिष्ठ अनुवादक

## एक मुलाकात, केरल और उसकी भाषा से :-

भारत की दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर अरब सागर और सह्याद्रि पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य एक खूबसूरत भूभाग स्थित है, जिसे केरल के नाम से जाना जाता है । स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व केरल में राजाओं की रियासतें थीं। जुलाई 1949 में तिरुवितांकूर और कोच्चिन रियासतों को जोड़कर 'तिरुकोच्चि' राज्य का गठन किया गया। उस समय मलबार प्रदेश मद्रास राज्य (वर्तमान तमिलनाडु) का एक जिला मात्र था। नवंबर 1956 में तिरुकोच्चि के साथ मलबार को भी जोड़ा गया और इस तरह वर्तमान केरल की स्थापना हुई। इस प्रकार 'ऐक्य केरलम' के गठन के द्वारा इस भूभाग की जनता की दीर्घकालीन अभिलाषा पूर्ण हुई।

पौराणिक कथाओं के अनुसार परशुराम ने अपना परशु समुद्र में फेंका जिसकी वजह से उस आकार की भूमि समुद्र से बाहर निकली और केरल अस्तित्व में आया। यहां 10वीं सदी ईसा पूर्व से मानव बसाव के प्रमाण मिले हैं।

इसके इतिहास का प्रथम काल 1000 ई. पूर्व से 300 ईस्वी तक माना जाता है। केरल में आवास केन्द्रों के विकास का दूसरा चरण संगमकाल माना जाता है। यही प्राचीन तमिल साहित्य के निर्माण का काल है। संगमकाल सन् 300 ई. से 800 ई तक रहा। प्राचीन केरल को इतिहासकार तमिल भूभाग का अंग समझते थे। सुविधा की दृष्टि से केरल के इतिहास को प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक कालीन - तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं।

विज्ञापनों में केरल को 'ईश्वर का अपना घर' (God's Own Country) कहा जाता है, यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। केरल का समशीतोष्ण मौसम, समृद्ध वर्षा, सुंदर प्रकृति, जल की प्रचुरता, सघन वन, लम्बे समुद्र तट और चालीस से अधिक नदियाँ ही इसका मुख्य कारण है । केरल की भौगोलिक प्रकृति को पर्वतीय क्षेत्र, मध्य क्षेत्र और समुद्री क्षेत्र नामक तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है | केरल को जल समृद्ध बनाने वाली 41 नदियाँ पश्चिमी दिशा में स्थित समुद्र अथवा झीलों में जा मिलती हैं। इनके अतिरिक्त पूर्वी दिशा की ओर बहने वाली तीन नदियाँ, अनेक झीलें और नहरें हैं।

आयुर्वेद दो हज़ार वर्ष पुरानी भारतीय चिकित्सा-पद्धति है। इस पद्धति का विकास स्वास्थ्य, जीवन-शैली एवं चिकित्सा की दृष्टि से हुआ था। केरल की आयुर्वेद परंपरा अत्यंत प्राचीन है। यह आज भी विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं। पर्यटन के क्षेत्र में भी आयुर्वेद पर आधारित पर्यटन (Health Tourism) केरल की विशेषता है। 'पंचकर्म चिकित्सा' जो कि पुनर्यौवन चिकित्सा कहलाती है, इस केलिए सैकड़ों विदेशी पर्यटक प्रतिवर्ष केरल आते हैं।

केरल की भाषा मलयालम है जो द्रविड़ परिवार की भाषाओं में एक है।

मलयालम, केरल के अलावा ये तमिलनाडु के कन्याकुमारी तथा उत्तर में कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिला, लक्षद्वीप तथा अन्य कई देशों में बसे मलयालियों द्वारा बोली जाती है। मलयालम, भाषा और लिपि के विचार से तमिल भाषा के काफी निकट है। इस पर संस्कृत का प्रभाव ईसा के पूर्व पहली सदी से हुआ है। संस्कृत शब्दों को मलयालम शैली के अनुकूल बनाने

के लिए संस्कृत से अवतरित शब्दों को संशोधित किया गया है। अरबों के साथ सदियों से व्यापार संबंध, अंग्रेजी तथा पुर्तगाली उपनिवेशवाद का असर भी भाषा पर पड़ा है।

मलयालं का संधि-विच्छेद है - *मलै*(मूलशब्द : मलय - अर्थ : पर्वत) + *अळम*(मूलशब्द : आलयम - अर्थ : स्थान)। इस भाषा के भाषिक भारत के पश्चिमी घाट के गर्भ में निवास करते हैं और इसी कारण यह नाम पड़ा है। इसका सही उच्चारण 'मलयाळम्' होता है।

मलयालम भाषा अथवा उसके साहित्य की उत्पत्ति के संबंध में सही और विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त नहीं हैं। फिर भी मलयालम् साहित्य की प्राचीनता लगभग एक हजार वर्ष तक की मानी गई हैं। भाषा के संबंध में हम केवल इस निष्कर्ष पर ही पहुँच सके हैं कि यह भाषा संस्कृतजन्य नहीं है - यह द्रविड़ परिवार की ही सदस्या है। परंतु यह अभी तक विवादास्पद है कि यह तमिल से अलग हुई उसकी एक शाखा है, अथवा मूल द्रविड़ भाषा से विकसित अन्य दक्षिणी भाषाओं की तरह अपना अस्तित्व अलग रखनेवाली कोई भाषा है। अर्थात् समस्या यही है कि तमिल और मलयालम् का रिश्ता माँ-बेटी का है या बहन-बहन का।

मलयालम भाषा के उद्‌गम के बारे में अनेक सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए हैं। एक मत यह है कि भौगोलिक कारणों से किसी आदि द्रविड़ भाषा से मलयालम एक स्वतंत्र भाषा के रूप में विकसित हुई। इस के विपरीत दूसरा मत यह है कि मलयालम तमिल से व्युत्पन्न भाषा है। ये दोनों प्रबल मत हैं। सभी विद्‌वान यह मानते हैं कि भाषाई परिवर्तन की वजह से मलयालम उद्भूत हुई। तमिल, संस्कृत दोनों भाषाओं के साथ मलयालम का गहरा सम्बन्ध है। मलयालम का साहित्य मौखिक रूप में शताब्दियाँ पुराना है। परंतु साहित्यिक भाषा के रूप में उसका विकास 13 वीं शताब्दी से ही हुआ था। इस काल में लिखित 'रामचरितम्' को मलयालम का आदि काव्य माना जाता है।

यद्‌यपि मलयालम के प्रारंभिक काव्य के रूप में 'रामचरितम्' को माना जाता है फिर भी केरल की साहित्यिक परंपरा उससे भी पुरानी मानी जा सकती है। प्राचीन काल में केरल को 'तमिळकम्' का भाग ही समझा जाता था। दक्षिण भारत में सर्वप्रथम साहित्य का स्रोत भी तमिळकम की भाषा को ही माना जाता है । तमिल का आदिकालीन साहित्य 'संगम कृतियाँ नाम से जाना जाता हैं। संगमकालीन महान रचनाओं का सम्बन्ध केरल के प्राचीन चेर-सामाज्य से रहा है। 'पतिट्टिप्पत्तु' नामक संगमकालीन कृति में दस चेर राजाओं के प्रशस्तिगीत है। 'सिलप्पदिकारं' महाकाव्य के प्रणेता इलंगो अडिगल का जन्म चेर देश में हुआ था। इसके अतिरिक्त तीन खण्डों वाले इस महाकाव्य का एक खण्ड 'वंचिक्काण्डम' का प्रतिपाद्‌य विषय चेरनाड में घटित घटनाएँ हैं। संगमकालीन साहित्यिकों में अनेक केरलीय साहित्यकार हैं।

रामचरितम् काव्य

मलयालम् साहित्य के इतिहास का प्रभात गीतों से गुंजायमान है। इनमें भक्ति, वीररस और हास्यरस के गीतों के साथ साथ प्रौढ़ काव्य भी विद्‌यमान हैं। इन प्रौढ़ रचनाओं में "रामचरितम्" का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसकी विषयवस्तु रामायण के लंका कांड की कथा है। केरल के चीरामन नामक कवि ने इसकी रचना की है। अनुसंधानकर्ताओं का यही मत है कि रामचरितम् का रचनाकाल 13वीं शताब्दी है।

रामचरितम् की रचना उस काल में हुई थी जब संस्कृत का प्रसार केरल में जम चुका था और मणिप्रवालम् नामक मिश्र भाषा विकसित हो रही थी। रामचरितम् में संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है। परंतु द्रविड़ अक्षरों द्वारा लिखे जाने के कारण इनके रूपों में थोड़ा परिवर्तन आया है।

**मणिप्रवाल साहित्य**

सातवीं सदी ईसवी से लेकर आगे कुछ समय तक केरल के सांस्कृतिक क्षेत्र में आर्यवंशज नंपूदिरियों का काफी प्रभाव रहा। अधिकतर शोधकर्ताओं का यही मत है कि वे बहुत पहले ही केरल में आ चुके थे। इन्हीं के प्रभाव से केरल में मणिप्रवालम् नामक मिश्र भाषा का विकास हुआ। 10वीं और 15वीं सदी ईसवी के मध्य मणिप्रवाल साहित्य की अत्यधिक पुष्टि हुई। इसी मणिप्रवाल के माध्यम से संस्कृत के अनेक काव्यरूपों का संक्रमण मलयालम् में हुआ। चंपू काव्य, संदेश काव्य इत्यादि का उदाहरण हम ले सकते हैं। "उण्णियच्ची चरितम", उण्णिच्चिरुतेवीचरितम्" और उण्णियाटी "चरितम्" प्राचीन मणिप्रवाल चंपू हैं। जैसा इनके नामों से विदित होता है, इनकी विषयवस्तु कुछ विख्यात सुंदरियों की प्रशस्ति है।

10वीं और 15वीं सदियों के बीच कुछ लघु मणिप्रवाल कृतियों की भी रचना हुई। इनमें से अधिकतर कुछ विलासवती सुंदरियों से संबद्ध श्रृंगारस की रचनाएँ हैं। इलयच्चि, चेरियच्चि, उत्तराचंद्रिका, कौणोत्तरा, मल्लीनिलाव, मारलेखा इत्यादि नायिकाओं का वर्णन इनमें सम्मिलित है।

मणिप्रवाल साहित्य के प्रसार ने उस भाषारूप के व्याकरण नियमों एवं साहित्यिक लक्षणों का विवरण देनेवाली एक शास्त्रग्रंथ की रचना को प्रेरणा दी। इस ग्रंथ का नाम है " लीलातिलकम्"। यह अनुमान किया जा सकता है कि "लीलातिलकम्" 14वीं सदी में लिखा गया है।

यदि एक तरफ मणिप्रवाल साहित्य का विकास होता गया तो दूसरी तरफ "पाट्टु" (गीत) नामक काव्यशाखा की भी वृद्धि होती गई। जैसा ऊपर कहा गया है, इस शाखा में धार्मिक एवं खेती और अन्य पेशों से संबद्ध अनेक लोकगीत हैं। तोरम् पाट्टु (अवतारगीत--कालीस्तुति), सर्पम् पाट्टु (सर्पस्तुति गीत), अय्यप्प पाट्टु (अय्यप्प देवता का स्तुतिगीत) इत्यादि का संबंध आचार मर्यादाओं और धार्मिक विषयों से है। कृषिप्पाट्टु (कृषि-गीत), आररुपाट्टु (धान के पौधे लगाते वक्त गाया जानेवाला गीत), वल्लप्पाट्टु (नौका गीत) इत्यादि दूसरे वर्ग में आते हैं। इन गीतों के मूल घटक हैं--स्वर, ताल और लय।

उपर्युक्त सारे काव्य पुराणकथाओं के पुनराख्यान हैं। परंतु पंद्रहवीं शताब्दी में आविर्भूत "कृष्णगाथा" केवल पुराण का पुनराख्यान मात्र नहीं है। इसमें भागवत के दशम स्कंध में वर्णित कृष्णगाथा का अन्वाख्यान इस प्रकार साबित हुआ है कि संस्कृत महाकाव्यों का रूपशिल्प मंजरी छंद में--जो द्राविड छंदों के परिणत प्रकारों में से एक है--अवतरित हुआ है। अत: कृष्णगाथा को मलयालम् का सर्वप्रथम स्वतंत्र महाकाव्य मान सकते हैं। ऋतुओं के कवि के नाम से प्रख्यात कृष्णगाथाकार ने प्रकृतिवर्णनों द्वारा नूतन सौंदर्य प्रपंचों का साक्षात्कार कराया। सुरीली

गानविधा, ललित और कोमल पदावली, चिरनूतन कल्पनाएँ--इनके कारण कृष्णगाथा एक सम्मोहनकारी रचना बन गई है।

**प्रसिद्ध कवि एषुत्तच्छन्**

पाट्टु शाखा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विभाग "किलिप्पाट्टु" है। तुँचत्त एषुत्तच्छन को इस विधा का संस्थापक मानते हैं। इसमें "किलि" अर्थात् तोते की जबानी कथाख्यान होता है, इसलिए इसे किलिप्पाट्टु कहते हैं। एषुत्तच्छन् का काल 16वीं शताब्दी का पूर्वार्ध है। इस जमाने में केरल एक प्रकार की राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक शिथिलता का अनुभव कर रहा था। इस अध:पतन से केरल का अभ्युत्थान कराने हेतु अवतरित दिव्य पुरुष के रूप में ही केरल की जनता आज भी एषुत्तच्छन् को मानती है। उन्होंने भक्ति के उद्बोधन से जनता को प्रबुद्ध किया। नामदेव, कबीर, चैतन्य, सूरदास, तुलसीदास, माणिक्कवाचकर, कंपर इत्यादि भक्त कवियों से भास्वर नभोमंडल में केरल की दिशा से उदित तारक एषुत्तच्छन हैं। उन सबकी भाँति एषुत्तछन् भी जनता को जाग्रत एवं उद्बुद्ध करने में सफल हुए। रामायण, महाभारत और भागवत, इन तीनों के संक्षिप्त अनुवाद के माध्यम से एषुत्तच्छन् ने समस्त केरलवासियों के हृदयों में सीधे प्रवेश पाया। कैरली को एक नूतन गरिमा, गंभीरता, शालीनता और स्वावलंबन प्राप्त हुआ। इसी अर्थ में एषुत्तच्छन् को मलयालम् साहित्य का पिता मानते हैं। वे ही ऐसे कवि हैं जो झोपड़ियों और महलों में समान रूप से समादृत हैं।

पाट्टु विभाग में दूसरा भक्तिप्रधान गानकाव्य "पूंतानम्" की "ज्ञानप्पाना" है। पूंतानम् के अन्य स्तोत्र भी ललित, कोमल और भक्तिसुधा से ओतप्रोत है।

इस विभाग की अन्य उल्लेखनीय रचनाएँ कुछ लोकगीत और "वटक्कन पाट्टु" (उत्तरी गीत) तथा "तेक्कन पाट्टु" (दक्षिणी गीत) के नामों से विख्यात कुछ आख्यानात्मक गान काव्य हैं। जैसा नामों से विदित होता है, ये गीत क्रमश: उत्तर और दक्षिण केरल की वीरगाथाएँ हैं। उत्तरी गीतों की भाषा आधुनिक मलयालम् से मिलती जुलती है, परंतु दक्षिणी गीतों में भाषा का तमिल से सामीप्य अधिक है।

**तुल्लल साहित्य उद्भावक कुंचन नंप्यार**

18वीं सदी के ऊषाकाल में एक महान तेज:पुंज का उदय हुआ--तुल्लल्-साहित्य के उपज्ञाता कुंचन नंब्यार का। संभव है, तुल्लल जैसे कलारूप पहले भी रहे हों। परंतु इसमें संदेह नहीं कि इसी प्रतिभाशाली कवि ने तुल्लल को एक आंदोलन के रूप में विकसित किया। एक प्रकार से तुल्लल को नृत्यात्मक एकाभिनय कह सकते हैं। तुल्लल गीत इसका आधारस्वरूप साहित्य है। नंप्यार ने तुल्लल गीतों के कथानक के रूप में पुराणों के उपाख्यान ही लिए हैं। फिर भी वर्णनों में आनेवाला वातावरण पौराणिक न होकर केरल के समसामयिक जनजीवन से मेल खानेवाला है। नंप्यार ने पौराणिक इतिवृत्तों के माध्यम से तत्कालीन जीवन की वैयक्तिक और सामाजिक विकलाताओं पर तीखे व्यंगबाण चलाए हैं। इनके इस परिहास की तेज धार का लक्ष्य समाजशरीर के व्रणों की चीर फाड़ करना था। तुल्लल् साहित्य में हास्य -व्यग्य विधा का अत्यधिक संपन्न काव्यालोक दर्शनीय है। इस विषय में कोई भी इनके समक्ष नहीं आता, न इनके पहले, न बाद में। यदि परिहास को सफल बनाना है तो सूक्ष्म, निर्मम और व्यापक मर्मबोध

अपेक्षित है। यह सिद्धि प्रचुर मात्रा में होने के कारण नंब्यार का हास्य आदर्श है। उनके हास्य और मर्मोक्तियों में विद्वेष की ज्वाला हीं चुभती, वरन् हार्दिक सहानुभूति और मानव प्रेम का चैतन्य भी स्फुरित होता है।

कुंचन नंप्यार के बाद कुछ समय तक की अवधि मलयालम् के लिये अंधकारमय है। करीब आधी शताब्दी तक को इस अवधि में किसी ज्योति का उदय नहीं हुआ। बाद में स्वाति तिरुनाल (राजा) के युग का सुप्रभात हुआ। इरयिम्मन तंपि (1783-1856) किलिमानूर कोयित्तंपुरान इत्यादि आट्टक्कथाकारों ने स्वातितिरुनाल् का प्रश्रय पाया। स्वाति तिरुनाल स्वयं कवि थे और उन्होंने हिंदी में भी गीत लिखे थे।

नाटक, महाकाव्य, तथा उपन्यास

इसके बाद केरल वर्मा कोयित्तपुरान के काल (1845) से मलयालम् साहित्य के आधुनिक युग का प्रारंभ हो जाता है। साहित्यसार्वभौम की उपाधि से विभूषित इस प्रतिभाशाली लेखक के नेतृत्व में साहित्य में एक नवजागरण आ गया। "मयूरसंदेशम्" नामक संदेश काव्य, "शाकुंतलम्" नाटक का अनुवाद और अकबर नामक उपन्यास उनकी रचनाओं में मुख्य हैं। उनके शाकुंतल अनुवाद के साथ मलयालम् में संस्कृत नाटकों के अनुवादों की बाढ़ सी आई। चात्तुक्कुट्टि मन्नाटियार, कुंजिक्कुट्टन तंपुरान, कोट्टारत्तिल शंकुण्णि इत्यादि ने इस शाखा की पुष्टि की। संस्कृत नाटकों की ही तरह स्वतंत्र मलयालम् नाटक भी लिखे गए। केरल वर्मा के भागिनेय राजराज वर्मा ने भी कालिदास आदि के ग्रंथों को अनुवाद किया। इन्हीं राजराज वर्मा ने मलयालम् को "केरलपाणिनीयम्" नामक व्याकरण ग्रंथ और "वृत्तमंजरी" नामक छंदशास्त्र ग्रंथ प्रदान किया था।

गद्य- साहित्य में उपन्यासों का उदय भी उन्नीसवीं सदी में केरल वर्मा युग में ही हुआ था। प्रथम उपन्यास अप्पु नेटुंङ्याटि लिखित "कुदलता" है। एक दो साल में (1889 में) चंतु मेनन ने इंदुलेखा का प्रकाशन किया। चंतु मेनन ने "शारदा" नामक उपन्यास का प्रथम भाग लिखा--और दूसरे भाग की रचना करने के पहले ही स्वर्ग सिधार गए। इंदुलेखा और शारदा आज भी मलयालम् के सामाजिक उपन्यासों की प्रथम श्रेणी में स्थित हैं। सामाजिक उपन्यासकारों में चंतु मेनन की प्रतिभा अद्वितीय है।

तीन ऐतिहासिक उपन्यासों "मार्तंड वर्मा" (1891) "धर्मराजा" (1913) और "रामराजा बहादुर" (1917-20) के लेखक सी. वी. रामन पिल्ला ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र में विशेष प्रसिद्ध हैं। उनके सामाजिक "प्रेमामृतम्" का महत्व इतना अधिक नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके जीवन का उद्देश्य ही ऐतिहासिक उपन्यासों द्वारा मलयालम् की गरिमा बढ़ाने का था।

स्वच्छंतावादी आंदोलन

अब हम मलयालम् के स्वच्छंदतावादी आंदोलन (अर्थात् रोमांटिसिज़्म, जो मलयालम् में काल्पनिक प्रस्थानम् के नाम से प्रसिद्ध है) के युग में आ जाते हैं। वी. सी. बालकृष्ण पणिक्कर का "ओरु विलापम्" (1895) इत्यादि इस प्रसंग में स्मरणीय हैं। परंतु कुमारन् आशान् का "वीण पूवु" (पतित कुसुम) ही इस आंदोलन की प्रारंभिक रचनाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मलयालम् का स्वच्छंदतावाद आशान् की कविताओं के रूप में पल्लवित और पुष्पित हुआ। नलिनि, लीला,

चिंताविष्टयाय सीता, चंडालभिक्षुकी, प्ररोदनम्, दुरवस्था, करुणा इत्यादि इनकी मुख्य रचनाएँ हैं। आशान् जिस काव्य प्रपंच को अनावृत्त करने में सफल हुए वह गंभीर दार्शनिकता, जीवनदर्शन का अदम्य कौतूहल और तीव्र भावविभोरता से भास्वर है। आशान् ही वह कवि थे जिन्होंने श्रृंगार को सामान्य धरातल से स्वर्गिक विशुद्धता तक पहुँचाया। आध्यात्मिक प्रेम की सुन्दर कल्पना ने उनकी कविता को प्रभापूरित किया है।

वल्लत्तोल् की सफलता इसमें थी कि वे मानव के मानसिक भाव को काल्पनिकता का परिधान देकर सुंदर रूप में प्रस्तुत कर सके। उन्होंने 1909 में बाल्मीकि रामायण का अनुवाद किया। 1910 में "बधिरविलापम्" नामक विलापकाव्य लिखा। इसके बाद उन्होंने अनेक नाटकीय भावकाव्य लिखे--गणपति, बंधनस्थनाय अनिरुद्धन्, ओरू कत्तु (एक खत), शिष्यनुम् मकनुम् (शिष्य और पुत्री), मग्दलन मरि यम्, अच्छनुम् मकनुम (पिता पुत्री) कोच्चुसीता इत्यादि। सन् 1924 के बाद रचित साहित्यमंजरियों में ही वल्लत्तोल के देशभक्ति से ओतप्रोत वे काव्यसुमन खिले थे जिन्होंने उनको राष्ट्रकवि के पद पर आसीन किया। एन्ने गुरुनाथन (मेरे गुरुनाथ) इत्यादि उन भावगीतों में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। जीवन के कोमल और कांत भावों के साथ विचरण करना वल्लत्तोल को प्रिय था। अंधकार में खड़े होकर रोने की प्रवृत्ति उनमें नहीं थी। यह सत्य है कि पतित पुष्पों को देखकर उन्होंने भी आहें भरी हैं, परंतु उनपर आँसू बहाते रहने के बजाय विकसित सुमनों को देखकर आह्लाद प्रकट करने की प्रवृत्ति ही उनमें अधिक हैं।

"उमाकेरलम्" नामक महाकाव्य की रचना करके काव्यजगत् में अपना नाम अमर करनेवाले उल्लूर ने अनेक खंडकाव्यों और भावगीतों की भी रचना की। पिंगला, कर्णभूषणम्, भक्तिदीपिका, चित्रशाला इत्यादि खंडकाव्यों और किरणावली, ताराहारम् तरंगिणि इत्यादि कवितासंग्रहों द्वारा उन्होंने मलयालम् की श्रीवृद्धि की है। परंतु इस महाविद्वान् और भाषाभिमानी साहित्यकार की स्मृति मलयालम प्रेमियों के हृदयों में शायद केरल साहित्य चरित्रम् के लेखक के रूप में ही मुख्य रूप से रहेगी।

इस समय के अन्य कुछ कवियों के नाम ये हैं - नालप्पाट्टु नारायण मेनन (इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना कण्णुनीरतुल्लि अश्रुबिंदु नामक विलापकाव्य है); करिरप्पुरत्त, केशवन नायर (काव्योपहारम् नव्योपहारम् इत्यादि भावगीत संग्रह); के के राजा (अनेक भावगीत और एक विलापकाव्य, बाष्पांजली, इन्होंने लिखी है), इत्यादि।

जी शंकर कुरुप, वेण्णिक्कलुम् गोपाल कुरुप, पी कुंञिरामन् नायर इत्यादि कवियों का जन्म 20वीं सदी के प्रथम दशक में हुआ है। इटप्पल्लि कविद्वय (इटप्पल्लि राघवन पिल्ला और चडङंपुषा कृष्ण पिल्ला), वैलोप्पिल्लि श्रीधर मेनन इत्यादि इनके थोड़े ही साल बाद के हैं। इटप्पल्लि कवियों ने, खासकर चङ्ङम्पुषा ने डेढ़ दशाब्दियों की अवधि में जितना कार्य करके संसार से बिदा ली है उतना पूर्ण पुरुषायु में भी किसी कार्य के द्वारा असाध्य है। मलयालम् के स्वच्छंतावाद के आंदोलन के लिये उनकी देन अमोघ है। जी. शंकर कुरुप, बालामणि अम्मा, पी. कुंञिरामन् नायर इत्यादि ने भी इस आंदोलन को संपन्न किया है।

प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार के विजेता जी. शंकर कुरुप के भावगीतों में 20वीं सदी के भारतीय जनजीवन में अनुभूत पीड़ाओं, व्यामोहों, मोहभंगों, प्रतीक्षाओं, अभिलाषाओं, इच्छा साक्षात्कारों का ऐसा चित्रण हुआ है कि वे अंतरात्मा की गहराइयों तक पहुँच जाते हैं। इसके अतिरिक्त वे गीत मानव की आध्यात्मिक एवं मानसिक भावानुभूतियों को प्रतीकात्मक या अन्य रूप में व्यक्त करते हैं। मलयालम् की आत्मगीत शाखा को आज की ऊँचाइयों तक उठानेवाले कवियों की श्रेणी में जी. शंकर कुरुप का स्थान सर्वोपरि है। (ओटक्कुषल, पाथेयम्, जीवनसंगीतम् इत्यादि जी. के मुख्य कवितासंग्रह हैं। विश्वदर्शनम् नामक संग्रह ने साहित्य अकादमी का पुरस्कार पाया है।

**आधुनिक गद्य साहित्य**

मलयालम् के उपन्यास साहित्य, नाटक साहित्य और कहानी साहित्य का विकास भी 20वीं सदी में हुआ। चंतु मेनन और सी. वी. रामन पिल्ला के बाद कुछ समय तक उपन्यास शाखा में अनुकरणों का प्रधानता रही। अप्पन् तंपुरान् द्वारा लिखित "भूतरायर" नामक ऐतिहासिक उपन्यास और "भास्कर मेनन" नामक जासूसी उपन्यास, टी. रामन नंपीशम का केरलेश्वरन्, केइएम. पणिक्कर के "केरलसिंहम्" और "परंकिपटयालि" (पुर्तगाली सैनिक) इत्यादि इस जमाने के मुख्य उपन्यास हैं।

मलयालम् का कहानी साहित्य भारत के किसी भी कहानी साहित्य की तुलना में ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकता है। बशीर, अंतर्जनम्, वर्कि इत्यादि कहानीकार सामाजिक अनाचारों और अत्याचारों के विरुद्ध क्रांति की आवाज उठानेवाले लेखक थे। वे अपनी जातियों में पाई जानेवाली अनैतिकाओं को प्रकाश में लाने में सफल हुए। तकषि केशवदेव इत्यादि कहानीकारों ने मनुष्य की सामाजिक और आर्थिक परतंत्रताओं तथा व्यक्ति की दुर्बलताओं और परिमितियों को अपनी कहानियों का विषय बनाया।

ऊपर के अनुच्छेदों में मलयालम् साहित्य का बहुत ही संक्षिप्त परिचय दिया गया है। आज मलयालम् साहित्य भारत की किसी अन्य भाषा के साहित्य से पीछे नहीं है। काव्य और कहानी के क्षेत्रों में शायद मलयालम् साहित्य अन्य भाषा साहित्यों से उच्चतर स्थान पाने के लिये होड़ सी कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में मलयालम् साहित्य की श्रीवृद्धि के लिये बहुत सी योजनाएँ बनी हैं और बहुत सी संस्थाएँ भी कायम की गई हैं। विज्ञान परिषद्, इतिहास परिषद्, संगीत परिषद्, कला परिषद्, आदि अच्छी योजना बनाकर काम कर रही हैं। इसके अलावा केरल विश्वविद्यालय तथा केरल सरकार मलयालम् विश्वकोश बनाने की बहुत बड़ी योजनाएँ चला रही हैं। केरल में बहुत से युवक विद्वान् रचनाकार्य में लगे हुए हैं और मलयालम् साहित्य का भविष्य बहुत उज्जवल है।

**********

सम्पादन :राजभाषा अनुभाग

आभार : विविध माध्यम

## *स्वच्छता अभियान*

1) हमारा देश प्राचीन काल में सोने की चिड़िया के नाम से पुकारा जाता था, जो अपने वैभव और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध था / लेकिन समय के बदलाव के साथ स्वच्छता पर अधिक ध्यान न देने के कारण, देश में गंदगी बढती गई/ आपने देखा होगा कि हमारे देश का कोई भी राज्य हो,शहर हो, गांव हो, या कोई गली-मोहल्ला हो, वहां पर आपको कूड़े-करकट का ढेर अवश्य दिख जायेगा।

2) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने लोगों को अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने की शिक्षा दी थी /स्वच्छता को उन्होंने ईश्वर की भक्ति के बराबर माना था / महात्मा गांधी ने "स्वच्छ भारत" का एक ऐसा सपना देखा था जहां सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने का कार्य करेंगे। गाँधी जी ने देश को गुलामी से मुक्त तो किया, परन्तु 'स्वच्छ भारत' का उनका सपना पूरा नहीं हो सका।

3) यह लिखते हुए मुझे बहुत दुख होता है कि लोगों का खुले में शौच करना, देश की एक बड़ी समस्या है। भारत में 70 प्रतिशत से ज्यादा लोगों को शौच के लिए घर से बाहर जाना पड़ता है। इससे संक्रमण व अन्य बीमारियां फैलती हैं/ भारत की जनसख्या 130 करोड़ है और जिसमे करीब 50 प्रतिशत लोगों के पास शौचालय नहीं है। हमारे देश में बहुत सारी छात्राएं स्कूल में शौचालयों की कमी के कारण अपनी शिक्षा को बीच में ही छोड़ देती हैं/

केंद्रीय प्रदुषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार शहरी भारत में हर साल 4.7 करोड़ टन ठोस कचरा उत्पन्न होता है। इसके अलावा 75 प्रतिशत से ज्यादा सीवेज का निपटारा नहीं होता है, ठोस कचरे की रिसाइकलिंग भी एक बड़ी समस्या है। भविष्य में और बड़ी समस्या से बचने के लिए, आज इन समस्याओं से निपटना जरुरी है।

4) स्वतंत्रता के सत्तर साल बाद, महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करने के लिए, भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छता अभियान की शुरुवात की और इसकी सफलता हेतु भारत के सभी नागरिकों को इस अभियान से जुड़ने की अपील की।

5) इस अभियान का उद्देश्य 2014 से पांच वर्ष के अंदर, स्वच्छ भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना है, ताकि बापू की 150वीं जयंती को इस लक्ष्य की उपलब्धि के रूप में मनाया जा सके। माननीय प्रधानमंत्री ने सचिन तेंदुलकर, कमल हसन जैसी नौ प्रसिद्ध हस्तियों को आमंत्रित किया ताकि वह भी स्वच्छता अभियान में अपना सहयोग दें, और वे अपने साथ और नौ लोगों को जोड़ें, ताकि एक मानव श्रृंखला बन सके।

6) स्वच्छता अभियान एक बड़े पैमाने पर जन आंदोलन है। इस मिशन में सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को शामिल किया गया है।

7) शहरी क्षेत्रों के लिए इस अभियान का उद्देश्य है कि हर परिवार के पास शौचालय की सुविधा हो, इसके अलावा पर्यटन स्थलों, बाजारों, बस स्टेशनों व रेलवे स्टेशनों जैसे प्रमुख स्थानों पर भी सार्वजनिक शौचालय का निर्माण हो । यह कार्यक्रम पांच साल की अवधि में 4401 शहरों में लागू किया जाएगा।

8) ग्रामीण क्षेत्रों के लिए इस अभियान का उद्देश्य है कि लोगों को स्वच्छता सम्बन्धी सुविधाएं उपलब्ध कराना, जिससे उनका जीवन बेहतर हो सके/ इस अभियान का उद्देश्य है कि पांच वर्षों में भारत को खुले में शौच से मुक्ति दिलाना है। इस अभियान में प्रत्येक घर में शौचालय बनाने के लिए 12,000 रुपये दिए जाते हैं /

9) विद्यालयों के लिए इस अभियान का उद्देश्य है कि कक्षाओं , प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों आदि की सफाई हो, खेल के मैदान, स्कूल के बगीचों का रख-रखाव व सफाई और स्वच्छता के ऊपर निबंध, वाद-विवाद, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं का योजन हो ।

10) भारत के इस स्वच्छता अभियान को देश-विदेशों में सराहा गया है, परन्तु इस अभियान ने अबतक मात्र 80 प्रतिशत लक्ष्य को ही प्राप्त किया है / सिर्फ सरकार इसे सफल नहीं बना सकती, लोगों की भागीदारी और जिम्मेदारी सबसे ज्यादा जरूरी है। सरकार और लोगों के प्रयासों से, भारत अवश्य ही एक दिन स्वच्छ देश बनेगा / कविता की ये पंक्तियां सभी को स्मरण करने की आवश्यकता है :

ये सच है की आज़ाद हैं हम,
मिट्टी से सुगंध ये आती है,
ऐ जान से प्यारे हमवतनों,
अभी काम बहुत कुछ बाकी है
अभी काम बहुत कुछ बाकी है /

निष्का सिंह
कक्षा छठी
केंद्रीय विद्यालय, एन ए डी, अलुवा
सुपुत्री श्री शशि कान्त सिंह
निरीक्षक

## जिंदगी सफर बडा, राह भी अजीब हैं।

जिंदगी सफर बडा, राह भी अजीब हैं।

हर एक मुकाम के लिए, मुश्किलें खडी भी हैं।

इस पथ को चुनू या लौट जाऊं यहां से,

मन के सामने विडम्बना अजीब है।

फिर ख्याल आता कभी, कि क्यूं विराम की तलाश में, मन मचल रहा मेरा

ऊँचाई कितनी भी हो, फासला तय कदम ही करे।

मन जो ठान ले एक बार तो चोटियाँ भी मैदान बनें।

**..आशा, निरीक्षक**

# ब्रॉडवे, एर्णाकुलम

ब्रॉडवे शब्द जब सुनेगा तब लोग सोचने लगेंगे -"न्यूयॉर्क शहर में स्थित ब्रॉडवे (ब्रॉडवे थिएटर) - के बारे में मैं कुछ कहने वाली हूँ | ..जी नहीं जनाब|
हम कहना चाहते हैं हमारी अपनी - ब्रॉड़वे सड़क ..
बचपन में, माँ के साथ आई थी यहाँ .. अब माँ नहीं है ..फिरभी उनकी यादें लेकर अब मैं अक्सर आती हूं यहाँ..यहाँ का **कॉफ़ी हाउस** ख़ास जगह थी उनकी, उनके पिताजी भी उन्हें लेकर यहाँ आये करते थे | कई पीढ़ियों की कहानी बताती है हमारी ब्रॉडवे |

ब्रॉडवे एक शॉपिंग स्ट्रीट है जो भारत के केरल राज्य में कोच्चि (एर्णाकुलम) में स्थित है। यह शहर के सबसे पुराने खरीदारीवाले क्षेत्रों में से एक है। शहर के अन्य खरीदारी स्थलों की तुलना में, यहाँ कीमतें भी कम हैं |

ब्रॉडवे एर्णाकुलम शहर की एक साधारण सड़क मात्र नहीं है. यह इस शहर का नब्ज है. नाडी है, धड़कन तत्रिका है | हर कोने में एक आश्चर्यचकित कर देने वाली बात होती है | चाहे आप इसे पसंद करें या न करें, आप, लोगों के समुद्र में होंगे और आरामदायक खुशबू आ रही होगी | 20 वीं सदी से ब्रॉडवे ने व्यापारियों और ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित किया है ।

20 वीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रॉडवे, एर्णाकुलम की एकमात्र खरीदारी सड़क थी। शुरुआत में शापिंग स्ट्रीट मट्टानचेरी में स्थित था। जब अंग्रेजों ने डच से कोचीन पर कब्जा कर लिया, तो बाजार मट्टानचेरी से निकलकर कोच्चि चला गया, जिसमें सेफ्टी पिन से लेकर कपड़े और हार्डवेयर तक सब कुछ था। यहाँ की **"हार्डवेयर स्टोर** 140 साल पुरानी है | अपने शुरुआती दिनो में, दुकान ने सभी प्रकार की निर्माण सामग्री और पानी की बाल्टी सहित सेनेटरी वेयर बेचे, जिनमें से अधिकांश जर्मनी से आयात किए गए थे। अब, यह जन शक्ति और जगह की कमी के कारण अकेले हार्डवेयर बेचता है। फायरवर्क्स यूनिट अभी भी दुकान के भीतर काम करती है।

लगभग 40 साल पहले, ब्रॉडवे (सड़क) जहां समाप्त होता है (जहां नहर के ऊपर छोटा पुल है) बैलगाड़ी के लिए एक पार्किंग स्टेशन था। षणमुखम रोड़ और वर्तमान का मरीन ड्राइव तब नहीं थे । आज के **बेकरी** के स्थान पर, एक विशाल बरगद का पेड़ था। यह छोटी छोटी नौकाओं के लिए एक घाट भी था। इस जगह को **आलिंनकडवु** नाम से जाना जाता था।

ब्रॉडवे की ओर जाने वाली सड़क एर्णाकुलम की पहली मैकडैम (गिट्टी डाली गई सड़क) सड़कों मे से एक थी और यही कारण बताया जा रहा है कि ब्रॉडवे को **'ब्रॉडवे'** नाम मिलने के लिए|

ब्रॉडवे शॉपिंग स्ट्रीट में दो किलोमीटर के दायरे की सड़क है, जो मरीन ड्राइव, कोच्चि और एम.जी. रोड के बीच स्थित है। इस क्षेत्र में संकीर्ण सड़कें है, जो इसके नाम से काफी विपरीत है। मार्केट कैनाल, ब्रॉडवे और मार्केट रोड से गुजरती है। खरीदारी सडक एक कार-मुक्त पैदल क्षेत्र है। ब्रॉडवे एर्णाकुलम मार्केट के समीप है जहां कई थोक दुकानें भी हैं।

ब्रांडवे एक ऐसी जगह थी जहाँ व्यापार पनपता था। जैसे कि यहां का **एक दूकान** सड़क के शुरुआत से यहाँ पर है। वे एर्णाकुलम में सबसे पुराने तंबाकू और कपडा व्यापारी थे। वे विनीज़ सिल्क्स के थोक व्यापारी भी थे |

20 वीं सदी की शुरुआत से ही प्रतिष्ठित दर्जियों का एक गुट ब्रॉडवे में था । उनमें से प्रमुख थे **एक कंपनी**, जिसने उस समय सबसे अच्छे थ्री-पीस सूट बनाए, एक दो अन्य कंपनियां भी थीं जिस में एक राज्य शोफरों(वर्दी धारी सरकारी मोटर चालकों) के लिए बनाई गई वर्दी के लिए प्रसिद्ध थी। एक **सिल्क पैलेस**, 1920 के दशक में पालक्काड़ के एक व्यापारी द्वारा स्थापित किया गया था जो कपड़ों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान(हॉटस्पॉट)था |

कुछ व्यवसाय मर गए या समय के साथ अप्रासंगिक हो गए। यहाँ पर एक भवन है **(हॉल)** जो एक पूर्व एंग्लो इंडियन लकड़ी व्यापारी अल्फ्रेड लुईस का घर था। 1915-16 में निर्मित इस भवन के भूतल को इंडियन कॉफी हाउस और पहली मंजिल को इंडियन एयरलाइंस किराए पर दिया गया था।

शादी के कार्ड के लिए प्रसिद्ध यहाँ का एक **कंपनी** सही मायने में एक सफल व्यापारी है, उन्होंने सौ वर्षों से अधिक काल इस स्थान पर व्यापार किया है| 1899 में शुरू हुई, इस दुकान ने यूरोप से आयातित कागज, टायर और शराब का कारोबार किया। वर्ष 1940 से ही वे शादी के कार्ड पर ध्यान केंद्रित करने लगे |

समय के साथ, सड़क ने अधिक व्यापारियों का स्वागत किया। मट्टाचेरी में केंद्रित मसाला व्यापार ब्रॉडवे में स्थानांतरित हो गया। आज, यह थोक दरों पर मसाले खरीदने के लिए एक केंद्र है।

समय के साथ चलना महत्वपूर्ण है, तमिलनाडु से पधारे भाइयों ने 1917 में क्लॉथ बाजार रोड पर एक कपड़ा स्टोर की स्थापना की। कंपनी ने दो नए स्टोर खोले हैं | तमिलनाडु के तिरुनेलवेली के कपडा व्यापारियों का परिवार कोच्चि आया था। यह कहा जाता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, केरल में कपड़े की कमी थी।

यहाँ के दुकानदार कई बाधाओं का सामना करते हैं, जैसे कि पार्किंग स्थान की कमी, भीड़ आदि | फिर भी उनके पास एक वफादार ग्राहक गण है जो पीढ़ियों से चलते आ रहे हैं क्योंकि ब्रॉडवे अभी भी उपभोक्ताओं के लिए आनंददायक स्थान है |

ब्रॉडवे में, कोई भी लगभग सब कुछ पा सकता है - पुराने तांबे के बर्तनों से लेकर नवीनतम फैशन के कपड़ों, आभूषणों, किताबों, इत्र, मसालों तक। यहां तक कि शहर की सबसे अच्छी फर्नीचर दुकानों में से एक भी मिल सकती है। ब्रोडवे में इलेक्ट्रॉनिक सामान, चमड़े की वस्तुएं, स्टेशनरी, घड़ियां, आभूषण और छतरियां बेचने वाली कई सड़क किनारे दुकानें हैं। ब्रॉडवे सड़क पर कोच्चि का मसाला बाज़ार एक थोक बाज़ार है जहाँ कोई अच्छी गुणवत्ता के मसाले खरीद सकता है।

क्रिसमस स्टार की दुकानों की एक सड़क

आज ब्रॉडवे में नई पीढ़ी की दुकानें भी देखने को मिलती है | एर्णाकुलम में पीक शॉपिंग सीजन विशु, ओणम और क्रिसमस के त्योहारो के दौरान होता है।

कॉरपोरेशन ने ब्रॉडवे के लिए कई नवीकरण योजनाएं शुरू की हैं। वर्ष 2013 में, ब्रॉडवे का संरक्षण प्रयास हेतु JNNURM परिवर्तन काल निधिकरण अवधि के तहत निधिकरण (धन प्राप्ति) के लिए एक संशोधित विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) प्रस्तुत की गई थी, जिस में परियोजना के लिए अनुमानित लागत रु 25 करोड़ थी।

उम्मीद करती हूँ कि ब्रॉडवे का स्वर्ण काल फिर से देखने को मिलेगा |

**संपादन :रोसेलिंड जोस**

**[विविध माध्यमों से संपादित]**

## ज़िन्दगी : एक किताब

काश, ज़िंदगी, सचमुच एक किताब होती |
पढ़ सकता मैं, कि आगे क्या होगा,
क्या पाऊँगा मैं और क्या दिल खोयेगा ||
कब थोड़ी खुशी मिलेगी, कब दिल रोयेगा, |
काश ज़िंदगी सचमुच एक किताब होती ||

फाड सकता उन लम्हों को,
जिन्होंने मुझे रुलाया है |
जोड़ सकता कुछ पन्नों को,
जिनकी यादो ने मुझे हँसाया है ||

हिसाब तो लगा पाता कि
कितना खोया और कितना पाया है |
काश जिंदगी सचमुच एक किताब होती ||

वक्त से आँखें चुराकर पीछे चला जाता
टूटे सपनों को फिर से अरमानों से सजाता,
कुछ पल के लिए थोडी खुशी और बटोर लाता |
काश ज़िंदगी सचमुच एक किताब होती ||

ज़िंदगी के सभी अनुभव,
खट्टे - मीठे, कड़ुवे - तीखे, शब्दों की माला में पिरोता,
खुद भी पढता औरों को भी पढाता |
आने वाले कल को बीते कल की याद दिलाता,
काश जिंदगी सचमच एक किताब होती ||

**********

## बचपन का ज़माना

एक बचपन का ज़माना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था |
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दिवाना था |
खबर न थी कुछ सुबह की,
न शाम का कोई ठिकाना था |
थक कर आना स्कूल से,
माँ की कहानी थी, परियों का फ़साना था |
वारिश में कागज़ की नाव थी,
मौसम सुहाना था |
रोने की वजह न थी,
न हँसने का बहाना था |
न अच्छे -बुरे का ज्ञान था,
न शुभ - अशुभ की चिंता थी |
क्यों हो गये हम इतने बड़े,
इससे अच्छा, वो बचपन का ज़माना था|

**********

श्रीमती अंकिता कुमारी
श्री रवि रंजन[निरीक्षक] की पत्नी

## गर्मी की छुट्टियां

बच्चों के साथ साथ बड़े भी गर्मी की छुट्टियों के इंतजार में रहते हैं ताकि हम बाहर कहीं घूम सके | शहरी जीवन ने हमें यांत्रिक बना दिया है | प्रकृति की खुली हवा में हम स्वच्छंद जाना चाहते हैं | इस बार हमें ऐसा लगा कि पहाड़ों ने हमें बुलाया है |

केरल के पूर्वी ओर पहाडी है | इस इलाके में मून्नार सबसे सुन्दर है | यह चाय बागानों के लिए प्रसिद्ध है | लेकिन हम केवल मून्नार के सौन्दर्य की तलाश में नहीं थे | इस बार हम रुक रुक कर पहाड़ चढ़ेंगे यही इच्छा लेकर चले थे हम | कोचिन - मून्नार के रास्ते में कई ऐसे सुन्दर जगह हैं, जहां की प्रकृति के साथ हम विलीन हो जाते हैं | उनमें से एक है भूतत्तानकेट्टु बाँध **जो** कोतमंगलम शहर से केवल 10 किलीमीटर दूरी पर है | असल में यह पेरियार नदी के ऊपर बनी एक बैराज (आड़) है और मेरे ख्याल से पेरियार नदी यहाँ बहुत सुन्दर दिखती है | घास मैदानों का एक मनोरम दृश्य हमें देखने को मिलता है | यहाँ हमें नदी मार्ग से बोट में चढ़कर जंगल के अन्दर जाने की सुविधा मिलती है | वह एक अद्भुत अनुभव है, जंगली जानवारों को उनके प्राकृतिक वास स्थलों में देखना |

उसी प्रकार यहाँ का जंगल पार्क का भी एक अलग अनुभव है | मोर, बन्दर, सांप, मछली आदि यहाँ है | उल्लू की एक विशाल प्रतिमा है यहाँ जो लोहे के छडों से बनाया गया है, सेल्फी खींचने वालों की एक भयंकर भीड़ वहां होती है | उसके बगल में ही एक तितली पार्क भी है, यहाँ का गाइड हमें हर एक तितली का नाम, रंग और विशेषताएं कितनी अच्छी ढंग से समझाता है | कौन सी तितली कौन से फूल पर बैठता है ..यह तो कुदरत का अनोखा खेल ही है | फूल भी सुन्दर..तितली भी अति सुन्दर |

कोई आयुर्वेद से रुची रखता है तो उस के लिए एक आयुर्वेद बाग़ भी यहाँ है | रोग का नाम लो, निवारण के लिए पेड़ या पौधा हाज़िर | पास ही तट्टेक्काड पक्षी अभयारण्य है, जो विश्वप्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी डॉ सलीम अली की कल्पना से, वर्ष 1983 में स्थापित है | तीन सौ पक्षी प्रजातियां हमें यहां देखने को मिलती है | अभयारण्य के अन्दर गाडी नहीं जायेगी, लेकिन पैदल ही क्यों नहीं पक्षियों के जीवन करीब से देखने पर हम एक अलग दुनिया में चले जाते हैं | सुबह का समय या शाम को यहाँ आना बेहतर होगा | हम पक्षियों को अपने अपने घोंसलों से या तो जाते हुए देख सकते हैं या घोंसलों की ओर वापस आते हुए देख सकते हैं |

अब मून्नार की ओर गाडी निकली है | मून्नार के रास्ते में हम नेल्लिमट्टम गाव, नेरियामंगलम, अडिमाली आदि सुन्दरपहाडी कस्बों से गुजरते है | फिर आता है पल्लिवासल गाव जो मुन्नार से दो किलोमीटर दूरी पर है | इस बार हम पल्लिवासल में ही ठहरे थे | हमारे रिसोर्ट के पिछवाड़े में ही प्रसिद्ध "आट्टुक्काड" झरना बहता है जो हमारे लिए एक आश्चर्यजनक बात बन गई थी | इतनी सुन्दर जगह थी यह, कहीं और जाने का मन ही नहीं था | लेकिन हमारी 12 साल की बेटी को दिखाने के लिए "टी म्यूजियम" देखने गए थे हम | "टी म्यूजियम" भी एक अद्भुत जगह है | बच्चों के लिए खास कर | मून्नार का इतिहास एक डाक्यूमेंट्री फिल्म के ज़रिए यहाँ दिखाया जाता है, और पौधे से चाय के कप तक की चाय का सफ़र असल में हम यहाँ देखते हैं, यहाँ कप में या प्लेट में हमारी फोटो चिपकाने की सुविधा भी है जो इस यात्रा के लिए अच्छा स्मृति चिह्न है| यह सोचकर हम वापस आये थे कि कब अगली गर्मी की छुट्टियां आयेगी और अगली बार हमें कौन बुलाएगा, पहाड़ या समंदर !!!

**रोसेलिंड जोस**
**वरिष्ठ अनुवादक**

## कबीर की चिंता

कबीरदास मध्यकालीन भक्तिकाव्य के महामानव हुए हैं जिन्होंने ब्रह्म रस और उसके सौन्दर्य का भरपूर आनंद स्वयं तो लिया ही है, उसे सर्वत्र प्रदान भी किया है | संसार के कण कण में अलौकिक सत्ता विद्यमान है, उसी की अनुभूति का नाम ब्रह्मज्ञान है |

काल की कठोर आवश्यकताएं महात्माओं को जन्म देती है | कबीर का जन्म भी समय की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए हुआ था | जिस समय कबीर आविर्भूत हुए थे, वह समय ही भक्ति की लहर का था | बाहर के लोगों के भारत में आ बसने से परिस्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया | यहाँ की जनता का नैराश्य दूर करने के लिए भक्ति का आश्रय ग्रहण करना आवश्यक था |

कबीर की मान्यता थी कि मनुष्य इस धरती पर ईश्वर की बेहतरीन रचना है | मानो वह स्वयं ही धरती पर उतर आया हो | मानव देह में वह सब कुछ विद्यमान है, जो बाहर ब्रह्माण्ड में है | बस मनुष्य को थोडा इस ओर सचेत होना है | मनुष्य अपने भीतर की इस सम्पदा से बेखबर बाहर भटकता -ढूंढता रहता है भगवान् को | वह धर्म -ग्रंथों में लिखे को इतना महत्त्व देता है कि जीवन में - अपनी देह, मन और आत्मा के भीतर जो कुछ विद्यमान है, उसे बिना जाने कस्तूरी -मृग की तरह बाहर की ढूंढ में निढाल हो जाता है | कबीर देह -मन -प्राण की महिमा का बखान भी करते हैं :-

*इस घट अंतर बाग़ बगीचे,*
*इसी में सिर्जन हारा |*
*इस घट अंतर सात समुन्दर,*
*इसी में नौलाख तारा |*
*इस घट अंतर पारस मोटी,*
*इसी में परखन हारा |*
*इस घट अंतर अनहद गरजै,*
*इसी में उठत फुहारा |*
*कहत कबीर सुनो भाई साधो,*
*इसी में सांई हमारा |*

जैसे धरती के जीवन का केंद्र सूर्य है, वैसे ही मानव के जीवन का केंद्र उसका मन है | इसीलिए यह उक्ति भी सार्थक है कि मन के हारे, हार है और मन के जीते, जीत | मन के

हार जाने से ही हार होती है, मन के जीतने से जीत होती है | अन्यथा जीत -हार का कोई और अर्थ या अभिप्राय नहीं है | देह का केंद्र मन है और फिर मन से भी सूक्ष्म आत्मा या चेतना है | इसी भांति सूर्य और उसके भीतर ऊर्जास्वित शक्ति इस धरती के अस्तित्व का कारण -आधार है | कबीर मनुष्य के भीतर ही सबको देखते - मानते हैं | उनका मानना है कि मनुष्य की इस देह के भीतर ही वे सुन्दर बाग़ -बगीचे विद्यमान हैं जो धरती पर हमें दिखाई देते हैं, या जिनकी हम लोग कल्पना करते हैं कि वे स्वर्ग में हैं | इसी देह में सिरजनहार यानी हमारा प्रभु है, भगवान है, अल्लाह है | धरती पर दिखाई देने वाले गहन - अतल सात समुन्दर भी तुम्हारी इस छोटी-सी देह में ही हैं | नौ लाख तारे भी इतनी -बड़ी संख्या में, तुम्हारी देह में विद्यमान है | पारस पत्थर, जब किसी धातु को छू जाय तो उसे सोना बना देता है, वह भी तथा उसकी परख रखने वाला विवेक भी तुम्हारे घट में ही रखा हुआ है | इतना ही नहीं अनहत् नाद भी तथा आनंद के चरम क्षणों में उठने वाला फुहारा भी शरीर के भीतर ही है | कबीर जी का कहना है इसी देह में तुम्हारा साईं भी बसता है | अर्थात् जो ब्रह्माण्ड में है, वही पिंड में भी है | ब्रह्माण्ड यदि पूर्ण इकाई है, पूर्ण रचना है, तो तुम्हारा पिंड भी उसी का लघु रूप है, पूर्ण है |

इसी प्रकार मानवीय स्वभाव की कमजोरियों का उल्लेख भी कबीर करते हैं और मानवों को आगाह करते हैं कि उनसे बचने में भलाई है :

*काम, क्रोध, मद, लोभ की, जब लग घट में खान |*

*क्या मूरख क्या पंडिता, दोनों एक सामान ||*

काम वासना, क्रोधभाव, धन -पद आदि का मद जब तक ये आपके मन में स्थान बनाए रखते हैं तब तक मूर्ख और ज्ञानी में कोई अंतर नहीं | अर्थात् दोनों एक समान दुर्गति के शिकार होते हैं | विद्वान लोगों को चाहिए कि वे इनसे बचें, अपने मन को इनके प्रभाव से मुक्त कर लें तभी वे सुखी रह सकते हैं |

*गोधन गजधन वाजिधन और रत्न धन खान |*

*जब आवे संतोष धन, धन धुरि समान ||*

जिनके मन में संतोष -रूपी धन आ गया है, वे वास्तव में दुनिया के शहनशाह हैं | अन्यथा गाएँ, हाथी, घोड़े और रत्नों की खानें भी मिल जाएँ तो भी मन में शान्ति नहीं मिलती | चैन नहीं पड़ता | व्यक्ति इनके लिए मन का सुख -चैन बर्बाद करके मारा -मारा फिरता रहता है, किन्तु जब मन में संतोष भाव का उदय हो जाता है तो उस अत्यंत मूल्यवान धन की प्राप्ति हो जाने पर सभी अन्य प्रकार के धन व्यर्थ लगने लगते हैं |

## एक नज़र ..भारतीय संस्कृति की ओर

भारतीय संस्कृति का क्षेत्र बहुत विस्तृत है | मनुष्य -जीवन के समस्त धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि कार्य -व्यवहार सदा से संस्कृति को प्रभावित और स्वरुप प्रदान करते आए हैं | संस्कृति में हमारे जीवन की समग्रता झलकती है | इसमें हमारी जीने की कला, हमारी चित्तवृत्ति, चिंतन - पद्धति, दर्शन, जीवन -मूल्य, मानवीय सम्बन्ध, आस्था और विश्वास, आचरण, सदाचार , शिष्टाचार आदि अनेक पक्ष समाहित हैं | भारतीय भारतीय संस्कृति मूलतः धर्मप्रधान रही है, अतः धर्म विषयक चिंतन और आचार -विचार इसमें विशेष रूप से प्रतिबिंबित है | साथ ही साथ इस संस्कृति के निर्माण में जीवन को प्रभावित करने वाले सभी पक्षों का, जैसे कि इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीती, धर्म -दर्शन, साहित्य, कला, नैतिक मूल्य आदि का, योगदान रहता है |

उक्त विषयों से कुछ जानकारी कैरली के इस अंक में प्रस्तुत हैं :-

1. अंकोरवाट :

कंबोदिया या कंपूचिया का एक नगर जो भव्य और कलात्मक विष्णु मंदिर के कारण प्रसिद्द है | इस मंदिर का 213 फुट ऊंचा शिखर दूर से ही दर्शनार्थियों को आकृष्ट करता है | इसका निर्माण कंबुज के राजा सूर्य वर्मा (1049-66ई.) ने कराया था | इस क्षेत्र में हिंदु धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रवेश ईसा

की प्रथम शताब्दि से आरम्भ हो चुका था | दक्षिण भारत के पल्लव राजवंश के लोग इसके प्रथम वाहक थे | बौद्धों का प्रवेश बाद में हुआ | ग्यारहवीं शताब्दि में बने स्थापत्य और मूर्तिकला के अनुपम उदाहरण इस मंदिर से प्रकट होता है कि इस्लाम के प्रवेश के पूर्व इस क्षेत्र में वैष्णव धर्म का पूरा प्रभाव था | यह मंदिर तीन मंजिल का है और इसकी रक्षा के लिए चारों ओर दीवार और 700 फुट चौड़ी खाई बनाई गई है |

2. अशोक :

प्राचीन भारत के मौर्य सम्राट बिन्दुसार का पुत्र जिसका जन्म लगभग 297ई. पूर्व में माना जाता है | भाईयों के साथ गृहयुद्ध के बाद 272ई. पुर्व में अशोक को राजगद्दी मिली और 232 ई. पूर्व तक उसने शासन किया | आरम्भ में अशोक भी अपने पितामह चन्द्रगुप्त मौर्य और पिता बिन्दुसार की भांति युद्ध के द्वारा साम्राज्य विस्तार करता गया | कश्मीर, कलिंग तथा कुछ अन्य प्रदेशों को जीतकर उसने सम्पूर्ण भारत में अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया जिसकी सीमाएं पश्चिम में ईरान तक फ़ैली हुई थीं | परंतु कलिंग युद्ध में जो जनहानि हुई उसका अशोक के हृदय पर बड़ा प्रभाव पडा और वह हिंसक युद्धों की नीति छोड़कर धर्मविजय की ओर अग्रसर हुआ | अशोक की प्रसिद्धी इतिहास में उसके साम्राज्य विस्तार के कारण नहीं धार्मिक भावना और मानवतावाद के प्रचारक के रूप में अधिक है |

उसने बौद्ध धर्म ग्रहण किया, इस धर्म के उपदेशों को न केवल देश में वरन् विदेशों में भी प्रचारित करने के लिए प्रभावशाली कदम उठाए | अपने पुत्र महेंद्र और पित्री संघमित्रा को अशोक ने इसी कार्य के लिए श्रीलंका भेजा था |

अशोक ने अपने कार्यकाल में अनेक शिलालेख खुदवाए जिनमें धर्मोपदेशों को उत्कीर्ण किया गया | राजशक्ति को सर्वप्रथम उसने ही जनकल्याण के विविध कार्यों की ओर अग्रसर किया | अनेक स्तूपों और स्तम्भों का निर्माण किया गया | इन्हीं में से सारनाथ का प्रसिद्ध सिंहशीर्ष स्तंभ भी है जो अब भारत के राजचिह्न के रूप में सम्मानित है |

कुछ इतिहासकारों का मत है कि अशोक ने धार्मिक क्षेत्रों की ओर ध्यान देकर राष्ट्रीय दृष्टि से अधिक हित साधन नहीं किया | इससे भारत का राजनीतिक विकास रुका जबकि उस समय रोमन साम्राज्य के समान विशाल भारतीय साम्राज्य की स्थापना संभव थी | इस नीति से दिग्विजयी सेना निष्क्रिय हो गयी और विदेशी आक्रमण का सामना नहीं कर सकी | इस नीति ने देश को भौतिक समृद्धि से विमुख कर दिया जिससे देश में राष्ट्रीयता की भावनाओं का विकास अवरुद्ध हो गया |

दूसरी ओर अन्य का मत इससे विपरीत है | वे कहते हैं इसी नीति से भारतीयता का अन्य देशों में प्रचार हुआ | घृणा के स्थान पर सहृदयता विकसित हुई, सहिष्णुता और उदारता को बल मिला तथा बर्बरता के कृत्यों से भरे हुए इतिहास को एक नई दिशा का बोध हुआ | लोकहित की दृष्टि से अशोक ही अपने समकालीन इतिहास का एकमात्र ऐसा शासक है जिसने न केवल मानव की वरन् जीवमात्र की चिंता की |

इस मत -विभिन्नता के रहते हुए भी यह विचार सर्वमान्य है कि अशोक अपने काल का अकेला सम्राट था जिसकी प्रशस्ति उसके गुणों के कारण होती आई है बल के दर से नहीं |

3. कौटिल्य :

एक आचार्य जिसका नाम विष्णुगुप्त था| यह 'चाणक्य' के गोत्रज नाम से तथा राजनीतिशास्त्र में कुटिलनीति का प्रवर्त्तक होने के कारण 'कौटिल्य' भी कहलाता है | यह तक्षशिला का निवासी एक ब्राहमण था | एक बार जब यह पाटलिपुत्र आया तो राजा नंद ने इसका अपमान किया| इस अपमान का बदला लेने के लिए यह चन्द्रगुप्त मौर्य से मिल गया और नंद को पराजित करने तथा चन्द्रगुप्त को गद्दी पर बैठाने में सफल हुआ | कुछ का मत है कि वे चन्द्रगुप्त मौर्य को शासन कार्य चलाने में भी सहयोग देते थे | कुछ लोग उन्हें चन्द्रगुप्त का मंत्री भी बताते हैं |

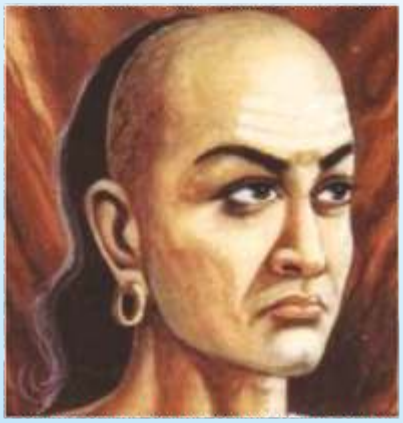

कौटिल्य की सबसे बड़ी देन संस्कृत साहित्य का राजनीतिशास्त्र विषयक ग्रन्थ 'कौटिल्य अर्थशास्त्र' है | इसमें राज्यशासन के अंतर्गत आनेवाले परराष्ट्रीय, युद्ध शास्त्रीय, वैधानिक, वाणिज्य, राजस्व आदि सभी अंगों पर

विस्तृत विवेचना की गयी है | दीर्घकाल तक यह ग्रन्थ अप्राप्त था | दक्षिण के विद्वान डॉ. शाम्शास्त्री ने इसे खोजकर 1909ई. में प्रकाशित किया |

4. आयुर्वेद :

भारत में विकसित चिकित्सा की प्राचीन पद्धति | एक परंपरा के अनुसार इस विद्या का आरम्भ ब्रह्मा से हुआ था | ब्रह्मा ने इसे दक्ष प्रजापति को दिया | दक्ष प्रजापति से अश्विनी कुमारों को और उनसे इंद्र को यह विद्या प्राप्त हुई | पुराणों की परंपरा के अनुसार प्रजापति ने चारों वेदों पर विचार करने के बाद पंचम वेद की रचना की जो आयुर्वेद कहलाया | प्रजापति से भास्कर को तथा उनसे धनवन्तरि आदि को इसका ज्ञान मिला |

वेदों में भी इस विषय का वर्णन मिलता है | ऋग्वेद में अश्विनी कुमारों का उल्लेख है जिन्होंने एक स्त्री को नकली टांग लगा दी थी | अथर्ववेद में अनेक वनस्पतियों तथा उनसे दूर होनेवाले रोगों का वर्णन किया गया है | इसी प्रकार ब्राह्मण, उपनिषद तथा रामायण -महाभारत में भी आयुर्वेद से सम्बंधित अनेक विवरण मिलते हैं | चरक, सुश्रुत और बाणभट्ट रचित ग्रन्थत्रयी आयुर्वेद के प्रसिद्द ग्रन्थ हैं | इनके अतिरिक्त आयुर्वेद -संहिता के नाम से विभिन्न रचनाकारों के 18 ग्रन्थ भी प्रसिद्ध हैं | चरक -संहिता सबसे प्राचीन मानी जाती है | इसकी रचना चरक ने ईसा की पहली शताब्दि में की थी | कुछ लोग चरक को सम्राट कनिष्क का राजवैद्य बताते हैं | आयुर्वेद का प्राचीन अर्थ चिकित्साशास्त्र तक सीमित न था | भारत में इसका बड़ा व्यापक अर्थ लिया जाता था | इसका उद्देश्य था - शरीर, इन्द्रीय, मन तथा आत्मा के संयोग की रक्षा करना |

सम्पादन :राजभाषा अनुभाग
आभार : विविध माध्यम

# कोई खिलौना नहीं, मैं भी एक इंसान हूँ

किसी पिता की दुलारी, किसी माँ की जान हूँ,
कोई खिलौना नहीं, मैं भी एक इंसान हूँ ।।
किसी की बेटी बन कर आती हूँ,
किसी की बहन कहलाती हूँ ।।
फिर एक दिन, अपना ही घर छोड़ कर,
किसी की पत्नी बन जाती हूँ ।।
और भी बहुत से रूप है मेरे,
जिनसे मैं अनजान हूँ,
कोई खिलौना नहीं, मैं भी एक इंसान हूँ ।।
रामायण का अपहरण,
महाभारत वस्त्रहरण !!
कोई जगह महफूज़ नहीं,
जहाँ मैं ले सकूं शरण ।।
ऐसी घिनौनी सोच से मैं,
युगों युगों से परेशान हूँ,
कोई खिलौना नहीं, मैं भी एक इंसान हूँ ।।
जली मैं दहेज़ के कारण कहीं,
बनी किसी दरिन्दे का शिकार कभी !!
पूजते रहे जो देवी बना कर लोगो के सामने,
वो ही मेरे दुश्मन बन चुके है अभी !!
झूठे वहशी लोगो के लिए मैं,
खिलौना सा एक सामान हूँ,
आज एक बार फिर बता दूं उन्हें, की मैं भी एक इंसान हूँ ।।
कभी झूठी मोहब्बत के नाम पर,
कभी दफ्तर में, कभी काम पर !!
जीने दे, ना लूट मुझे तू,
न मुझको यूं बदनाम कर !!
मत सोच की मैं लड़की हू तो,
तेरे कदमो की गुलाम हूँ,
कोई खिलौना नहीं तेरे हाथों की, मैं भी एक इंसान हूँ !!
मत कर मेरी पूजा तू,
मत बोल मैं देवी का रूप हूँ !!
बस इतना सा कर दे करम,
की सांस भर के जी सकूं ।।
मेरा रूप तेरे घर में भी है,
तेरे घर की भी मैं शान हूँ,
अब मान इस बात को तू, मैं तेरे जैसी इंसान हूँ

**नितेश सैनी, निरीक्षक**

# इतना गरम ...दिल्ली ..एक यात्रा विवरण

जीवन में कुछ बातें अचानक हो जाती है | जैसे कि मेरी दिल्ली यात्रा पिछले जून महीने की| ..बात दफ्तर की थी ..तब क्या जून क्या जुलाई ..जाना ही है | अब दो हफ्तो दिल्ली में | साथ में अपनी प्यारी सहेली भी थी .. तो मन उतना व्याकुल भी नहीं था | देखते हैं हम इस यात्रा को कितने मज़ेदार बना सकते हैं | यह सोचकर फ्लाइट से बाहर निकले | हवाई अड्डा तो वातानुकूलित है, ठंडा ठंडा कूल कूल है | धीरे-धीरे हम बाहर आते गए हमें गर्मी का एहसास होने लगा | सुना था जून में दिल्ली गरम है ..लेकिन इतना गरम 48 ..सचमुच !!!

आने जाने के लिए कोई तकलीफ नहीं हुई, ऊबर टैक्सी हर जगह मौजूद थी, चाहे वे बहुत पुरानी और टूटी फूटी दिख रही थीं, वातानुकूलित ज़रूर थीं |पैदल चलना ना मुमकिन सा हो गया था | मानो हम ने जलती हुई एक भट्टी में प्रवेश कर लिया हों | मेरी अपनी पसंद तो रिक्शा है, ऑटो या साइकिल-रिक्शा | उसमें चढ़ने से हम सही मायने में उस स्थान की नब्ज का अनुभव करेंगे। एक दिन चढ़े भी थे, हाथ जल गए, बिना सोचे हम ने सीट के सामने दिखे लोहे के छड़ को पकड़ लिया था | दफ्तर दक्षिण दिल्ली में साकेत में था और उसके पास एक **शॉपिंग मॉल** भी था. सोचा शुरुआत उससे करते हैं | मॉल तो मॉल है हर जगह एक प्रकार दिखती है | कोइ बात नहीं. लाजपत नगर, कॉन्नाट प्लेस, पालिका बाज़ार, इंडिया गेट सब हमारे इंतज़ार में हैं न |

अगले दिन दफ्तर से जल्दी मुक्ति मिली, चलो **लाजपत नगर** | अरे वाह !! यह तो बहुत अच्छा शॉपिंग कार्नर है | गर्मी तो हम भूल गए | चीज़ें खरीदती गई ..कभी कभी जूस का ख्याल भी आता है, पी लिया ..फिर शॉप्पिंग | हम ये सब वापस कैसे ले जाएँगे फ्लाइट में !!! सोचने के लिए समय नहीं था |

दिल्ली आकर एक भी प्राचीन स्मारक नहीं देखा, यह क्या बात हुई | कब चलेंगे कैसे चलेंगे, बीच में एक शनिवार और रविवार है | और **कुतब मीनार** पास भी है | शनिवार का शाम कॉन्नाट प्लेस के नाम कर दिया | लेकिन हम इतने भाग्यहीन भी नहीं थे क्योंकि रविवार को थोड़ी सी बारिश हुई तब तापमान 34c हुआ |शुक्र है भगवान् का | हम फुरसत से कुतब मीनार देख पायें | अब हमारा मन इंडिया गेट की ओर चला | एक और हफ्ता है, जाना ज़रूर था |

एक और दिन दफ्तर से जल्दी निकले थे हम, तब **इंडिया गेट** और वहां **राष्ट्रीय युद्ध स्मारक** भी देखने का मौक़ा मिला | इस बार दिल्ली कितना भी गरम क्यों न था, हमें बहुत सारी अच्छी यादें दे गया |

रोसेलिंड जोस, वरिष्ठ अनुवादक

# केरल और मैं

बचपन मे सामान्य ज्ञान अधययन करते हुए जब मैंने केरल के विषेय में पढा की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार केरल का निर्माण ऋषि परशुराम, जिन्होंने इक्कीस बार पृथ्वी से अत्याचारी क्षत्रिय राजाओं का संहार करके अपना शस्त्रफरसा को समुद्र में समर्पित कर दिया था और उस शस्त्र के आकार सा केरल नामक एक प्रदेश उत्पन हुआ !जब यह ज्ञात हुआ तो बाल मन में इस स्थान को देखने का कोतुहल जागृत हुआ , परन्तु समय व्यतीत होते-होते यह इच्छा शांत होने लगी !किन्तु जब मेरी नियुक्ति केरल में हुई तब भाग्याधीन समय ने मेरे इस बाल्य कोतुहल का साक्षात दर्शन करने तथा यहाँ पर रहने का अवसर प्रदान किया।

मन में अनेको आकांक्षाओ के साथ मैंने दिल्ली से केरल की यात्रा रेल गाडी से प्रारंभ की ! तब मुझे यह ज्ञात नहीं था की यह यात्रा मुझे अपने देश के सबसे विशिष्ट गुण'अनेकता में एकता' का वास्तिविक अनुभव करवाएगी ! इस यात्रा मार्ग में विभिन्न प्रदेशो यथा - उत्तर प्रदेश , मध्य प्रदेश , महाराष्ट्र , कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और अन्य राज्यों की संस्कृति की झलक देखने का अवसर मिला और विभिन्न स्टेशनों में उस स्थान के प्रसिद्ध व्यंजनों का स्वाद प्राप्त करने का सुअवसर भी मिला ! अखंड भारत की अभिन्न सायासिक संस्कृति का साक्षात्कार करते हुए यात्रा के त्रितीय तथा अंतिम दिन रेल गाडी ने निलगिरी पर्वत माला व् अन्नामलाई की पहाडियों के मध्य स्थित पालघाट दर्रे से होते हुए केरल में प्रवेश किया, यहाँ की सुरमय छटा व् हरियाली अति लुभावनी थी ! यहाँ की विस्तृत जैव विविधता यानी की बायो डाइवर्सिटी देखकर मुझे यह एहसास हुआ की इसे इश्वर का देश क्यों कहा जाता है ! यहाँ नियुक्ति के पश्चात अरब-सागर के सुंदर तट जेसे कोवलम, वर्कला, चेराई इत्यादि का आनंद प्राप्त किया !

यहाँ रहते हुए मुझे केरल की विशिष्ट संस्कृति के अनेक उदहारण देखने को मिले! यहाँ के अद्वितीय पर्व ओणम , विशु इत्यादि को हर्ष-उल्लास के साथ मनाया ! केरल की विशिष्ट कला कथकली व् शास्त्रीय नृत्यमोहिनी-अट्टम, जिसे हमेशा टी.वी. पर ही देखा था इनका भी सजीव प्रदर्शन देखने को मिला ! यहाँ की रोमांचकारी युद्धकला कलारिपयट्ट के प्रदर्शन में कलाकारों की चुस्ती-फुर्ती व् कौशलता देखते ही बनते है ! यहाँ पर होने वाली विश्व प्रसिद्ध नौका-दौड़ प्रतियोगिता का उत्साह भी आश्चर्यचकित करने वाला है !

मैं स्वयं को अत्यंत भाग्यशाली समझता हूँ की मुझे 'ईश्वर के देश' के भाव दर्शन ही नहीं अपितु यहाँ कार्य करते हुए आत्मसात करने का अवसर मिला !

**मोहित कुंद्रा**
कर सहायक
अलुवा डिवीज़न

# सिसकती हिंदी

हिंदी है आज हिरासत में, आजाद इसे कराना है,

नीरवता का अर्थ कभी अवसान नहीं बनाना है |

ऊर्जा युक्त संस्कार धनी बंद पड़ी है बोतल में ,

बस हमें आवश्यकता है इसे प्रयोग में लाने के |

हिंदी आज सिसक रही, जिसकी वजह हम आप हैं,

विदेशज भाषा यदि हावी रही तो विनाश हमारा है |

आओ मिलकर आज शपथ ले, विदेशज भाषा का अवसान करे,

क्यों हिंदी आज सिसक रही इसकी हम सम्मान करे|

हिंदी को हम सब अपने-अपने कर्मक्षेत्र में खूब लाएँगे,

राजभाषा अधिनियम को अधिक से अधिक सफल बनाना है|

हिंदी को अपनाएंगे, देश का मान बढ़ाएंगे,

*हिन्दी ही हिन्द का नारा है, प्रवाहित हिन्दी धारा है।*

**संजीव कुमार, निरीक्षक**
**कियक्कमबलम रेंज, पेरुम्बावूर मंडल**

# एक अद्भुत औरत .. माँ'

एक बच्चे के लिए माँ निस्संदेह अद्भुत है, लेकिन एक अद्भुत औरत जब हमारी माँ बन जाती है तो .. ऐसी एक माँ की याद करती हूँ मैं |

79 वर्ष की थी वे, जब उनकी मृत्यू हुई थी, उनके मृत शरीर को देखते हुए मेरा मन कुछ साल पीछे चला गया | हमारे बचपन में भारत में कामकाजी महिलायें बहुत कम थीं | इसीलिए मेरी माँ का दफ्तर जाना मुझे बिलकुल पसंद नहीं था | उम्र बढ़ती गई, तब पता चला औरत के लिए दफ्तर जाना बेहतर है |

माँ की बात अलग थीं | 23 साल की थे वे, जब उन्होंने अपने परिवार में पिताजी का स्थान ले लिया था | उस उम्र में युवतियां साज सवरने में अपना अधिकाँश समय को बिताती थीं, उस समय वे परिवार को आगे बढाने के संघर्ष में लगीं हुई थीं | आठ जन का परिवार और ये एकमात्र कमानेवाली व्यक्ति, वह भी औरत, तब समाज ने स्त्री को परिवार की मुखिया माना ही नहीं था |

पिताजी के पेंशन मिलने के लिए समय लगेगा | कृषी से तो क्या आमदनी मिलती होगी | दफ्तर से आकर पड़ोस के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना, उसके बाद पड़ोस के बच्चों के फ्रॉक, ब्लाउज आदि की सिलाई ...जो कुछ मिलता था एक समय के सब्जी के लिए तो काम आयेगा | क्योंकि 8 जन के पेट का सवाल था |

बाद में जब शादी हुई तो शौहर तो उन्हें बहुत अच्छे ही मिले, और खुदा ने हम तीन बेटियों को भी उनके देखभाल में रखा | 32 साल के उनके सरकारी सेवा काल में उन्होंने 13 दफ्तरों में काम किया है, केरल के इस ओर से उस ओर तक | लेकिन उन्होंने हमारा पालन पोषण बखूबी किया | पढ़ाया, लिखाया, और तो और अपने जैसे बनाया ...आत्मनिर्भर || आज जब मैं अपने दफ्तर में काम रही हूँ, मेरे मन में यह ख्याल आता है क्या मैं अपनी माँ का अच्छा काम आगे तो नहीं बढ़ा रही हूँ |

सचमुच वे एक अद्भुत औरत थीं..हमेशा के लिए !!!

**********

रोसेलिंड जोस, वरिष्ठ अनुवादक

# राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) से उद्धरण

(3) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही-

(i) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में/के या नियंत्रण में/के किसी नियम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कंपनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं;

(ii) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज-पत्रों के लिए;

(iii) केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में/के या नियंत्रण में/के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा-प्रारूपों, के लिए प्रयोग में लाई जाएगी ।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अनुसार सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित है-

(1) ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार प्रकार के हों;

(2) ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हों या उनके लिए हों;

(3) ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

## राजभाषा नियमावली, 1976 के महत्वपूर्ण अंश कौन-कौन से हैं ?

*नियम-1 - सीमा और प्रारंभ आदि, नियम-2 - परिभाषाएं*

*नियम – 3 - केंद्र सरकार के कार्यालयों के अलावा राज्य के साथ पत्राचार*

*(क) एक मंत्रालय और दूसरे मंत्रालय के साथ पत्राचार का माध्यम हिंदी या अंग्रेज़ी हो सकता है*

*नियम -4 - मंत्रालय तथा विभाग के बीच पत्राचार प्रतिशतता केंद्र सरकार द्वारा समय समय पर निर्धारित किए जाने वाले लक्ष्य के अनुसार होगी। (क्षेत्र क 55%)*

*नियम-5 - हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर*

*हिंदी में प्राप्त किसी भी पत्र का उत्तर किसी भी हालत में हिंदी में ही दिया जाना अनिवार्य है*

*कार्यालय के सभी शाखाओं और अनुभागों को हिंदी में प्राप्त होने वाले सभी पत्रों और दिए गए उत्तरों के संबंध में एक रजिस्टर रखना होगा*

*जारी सभी द्विभाषी पत्रों को हिंदी में जारी समझा जाएगा*

*नियम-6 – हिंदी व अंग्रेज़ी का प्रयोग:*

*राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी प्रकार के कागजातों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का यह दायित्व है कि उक्त कागज़ात को हिंदी में तैयार करवाए और हिंदी में भी जारी करवाएं।*

*नियम-7 हिंदी में आवेदन पत्र और अभ्यावेदन आदि।*

*एक सरकारी कर्मचारी अपना आवेदन पत्र या अभ्यावेदन आदि हिंदी में या अंग्रेज़ी में प्रस्तुत कर सकता है।*

*हिंदी में प्राप्त किसी भी आवेदन पत्र, अपील या अभ्यावेदन या हिंदी में हस्ताक्षरित सभी पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिया जाना अनिवार्य है।*

*नियम-8 – टिप्पणी लिखना*

*कोई भी सरकारी कर्मचारी अपनी टिप्पणियाँ हिंदी में या अंग्रेज़ी में लिख सकता है, उसका अंग्रेज़ी या हिंदी में अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए उनसे नहीं कहा जाएगा।*

*रजिस्टरों में हिंदी में भी प्रविष्टियाँ किया जा सकता है।*

*(सभी कर्मचारी हिंदी में अधिक से अधिक पत्र लिखें, हिंदी में बातचीत करें, और दिन प्रतिदिन के कार्यों को हिंदी में निपटाने का प्रयास करें।)*

*नियम-9 – हिंदी में प्रवीणता*

*हिंदी एक मुख्य विषय के रूप में या हिंदी माध्यम से स्नातक या उच्च परीक्षा पास कर्मचारियों को हिंदी में प्रवीण समझा जाएगा।*

*नियम-10 हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान*

*केंद्र सरकार के सभी कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान होना अनिवार्य है।*

*(क) यदि किसी कर्मचारी ने हिंदी एक विषय के रूप में स्नातक की परीक्षा या मैट्रिक की परीक्षा पास की हो उन्हें हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त समझा जाएगा*

*(ख) जिन कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है, उन्हें भारत सरकार के राजभाषा विभाग, हिंदी शिक्षण योजना द्वारा आयोजित किए जा रहे हिंदी प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण करना होगा।*

*नियम – 11 – मैनुअल, कोड और प्रक्रिया साहित्य आदि*

*सभी मैनुअल, कोड और प्रक्रिया साहित्यों, स्टेशनरी की मदों, फार्मों, प्रपत्रों और रजिस्टरों आदि को द्विभाषी रूप में ही तैयार करें*

*निम्नलिखित मदों को द्विभाषी रूप में ही तैयार करें*

| | | | |
|---|---|---|---|
| *1.* | *रबड़ की मोहरें* | *2.* | *साईन बोर्ड* |
| *3.* | *सील* | *4.* | *पत्र शीर्ष* |
| *5.* | *नाम पट्ट* | *6.* | *वाहनों पर साईन बोर्ड* |
| *7.* | *विज़िटिंग कार्ड* | *8.* | *बैज और बिल्ले* |
| *9.* | *लोगो* | *10.* | *मोनोग्राम* |
| *11.* | *चार्ट/नक्शे* | *12.* | *निमंत्रण पत्र, बैनर* |
| *13.* | *प्रकाशनें* | *14.* | *पत्रिकाएँ, पर्चियां आदि* |
| *15.* | *सभी प्रकार के फ़ार्म* | *16.* | *कार्यालय में प्रयोग किए जा रहे सभी प्रपत्र* |
| *17.* | *सभी प्रकार के रजिस्टर* | *18.* | *लिफ़ाफ़े/फाईल कवर* |

*नियम-12 अनुपालन का उत्तरदायित्व*

*राजभाषा नीति के अंतर्गत सभी प्रावधानों का समुचित अनुपालन की ज़िम्मेदारी प्रत्येक सरकारी कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का होगा।*

# ई -महाशाब्द्कोश / E-Mahashabdkosh

**ई-महाभाष्यकोश** उच्चारण के साथ द्वि-भाषी और द्वि-दिशात्मक हिंदी / अंग्रेजी शब्दकोशों पर आधारित है। ... ये शब्दकोश बहुत आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं जो एक सामान्य शब्दकोश में उपलब्ध नहीं है, जैसे कि उच्चारण, विभक्त रूप, शब्द का उपयोग और वर्णन।

**e-Mahashabdkosh** is domain based Bi-Lingual and Bi-Directional Hindi/English dictionaries with pronunciation. ... These dictionaries provide much essential information that is not available in a general dictionary, such as the pronunciation, inflected forms, usage and description of a word.

| क्रम सं. | मुख्य विशेषताएं | Salient Features |
|---|---|---|
| 1 | देवनागरी लिपि के लिए यूनिकोड फॉन्ट का सपोर्ट करता है। | Supports Unicode Font for Devanagari script. |
| 2 | खोजे गए शब्द का उच्चारण। | Pronunciation of searched word. |
| 3 | स्पष्ट लेआउट / जीयूआई, आसान नेविगेशन। | Clear layout/GUI, Easy navigation. |
| 4 | शब्द- 3 वर्ण संयोजन में सूचीबद्ध | Words Listed at 3 character combination. |
| 5 | प्रत्यक्ष शब्द खोज। | Direct word search. |
| 6 | द्विदिशिक खोज। | Bidirectional search. |
| 7 | शब्दों की खोज की गई सूची में खोज करने की सुविधा। | Facility to search within the searched list of words. |
| 8 | सही (मूल) उच्चारण और प्रासंगिक जानकारी। | Correct (native) spoken pronunciations and relevant information. |
| 9 | अर्थ और प्रासंगिक जानकारी। | Meanings and relevant information. |
| 10 | शब्द / वाक्यांशों का उपयोग। | Usage of the word/phrases. |

**सम्पादन : राजभाषा अनुभाग**

# कंठस्थ/ Kanthasth

राजभाषा विभाग ने अनुवाद और सरल बनाने के लिए अंग्रेजी से हिंदी और इसके विपरीत सभी प्रकार की आधिकारिक फाइलों के अनुवाद के लिए "कंठस्थ" नामक एक कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर विकसित किया है।
The Official Language department has developed a computer software called "Kanthasth" for translating the all kinds of official files from English to Hindi and vice versa to make the translation work simpler and quicker.

**कंठस्थ क्या है ?**

उत्तर: 'कंठस्थ' वस्तुतः ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) पर आधारित इस मशीन अनुवाद सिस्टम को दिया गया एक नाम है। ट्रांसलेशन मेमोरी मशीन-साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा (Source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target language) में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक-साथ रखा जाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः-प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है।

**What is Kanthasth?**

Ans. Kanthasth is basically a name given to this Machine Translation (MT) system. This MT system is based on Translation Memory (TM) approach.Translation memory is a feature of computer aided translation system which helps in the translation process. A translation memory is basically a database which stores the translated data in the form of aligned source language and target language segments. The main characteristic of the Translation memory system is that it allows a translator to re-use the already translated segments while translating a new file, either through complete match or partial match in TM.

2. **स्टैंडअलोन टी.एम. एप्लिकेशन का उपयोग करने के लिए पूर्वापेक्षाएँ क्या हैं?**

ऑपरेटिंग सिस्टम: 32 या 64 बिट के साथ विंडोज 7 और ऊपर
JAVA SE
MS OFFICE 2007 और ऊपर
एन्वाइरनमेन्ट वेरीएबल सेट करना होगा

**What are the Prerequisite for using Standalone TM application?**

Operating System : Windows 7 and above with 32 or 64 bit
JAVA SE
MS-OFFICE 2007 and above
Must set Environment variable

3. **कंठस्थ स्टैंडअलोन सॉफ्टवेयर को डाउनलोड करने के लिए हमें लिंक कहां मिल सकता है?** ..वेब साइट http://kanthasth rajbhasha.gov.in पर जाएं

**Where can we get the link for downloading kanthasth standalone software?**

Visit web site http://kanthasth –rajbhasha.gov.in

**सम्पादन : राजभाषा अनुभाग**

# हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाड़ा समारोह, 2018 पर संक्षिप्त रिपोर्ट

केन्द्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, आयुक्तालय, कोच्ची ने केन्द्रीय कर एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, लेखा परीक्षा आयुक्तालय, कोच्ची के साथ संयुक्त रूप से दिनांक 17.09.2018 से 28.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया। हिन्दी दिवस मनाते हुए समारोह का शुभारंभ हुआ। श्री के आर उदय भास्कर, प्रधान आयुक्त महोदय ने अपने संदेश में कहा कि " हिन्दी की प्रगति के लिए इस आयुक्तालय में हिन्दी पखवाड़ा समारोह विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा। सभी अधिकारियों से अनुरोध है कि आप अपने-अपने कार्यालय कार्य जैसे टिप्पणी और मसौदा, पत्राचार, बिल तथा रजिस्टरों में प्रविष्टि आदि कार्यों को जितना हो सके हिन्दी भाषा के माध्यम से निपटाने का प्रयास करें। हिंदी में बात-चीत करें और बैठकों में चर्चा के लिए हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। राजभाषा अधिनियम 1963 का विशेष ध्यान रखें और राजभाषा नियम 1976 के विभिन्न नियमों का अवश्य पालन करें।"

हिन्दी पखवाड़ा समारोह के दौरान अधिकारियों के लिए कुल 6 प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं जिसमें गैर हिन्दी भाषी अधिकारियों तथा हिन्दी भाषी अधिकारियों के लिए भी विभिन्न प्रतियोगिताएं चलायी गयीं । अधिकारियों के बच्चों के लिए चार ग्रूपों में दो प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं थीं ।

चलायी गयीं प्रतियोगिताओं के नाम और विजेताओं के नाम निम्नलिखित हैं।

| | प्रतियोगिताएं | स्थान | अधिकारियों के नाम |
|---|---|---|---|
| 1 | हिन्दी हस्तलेखन प्रतियोगिता | प्रथम | श्री शशिकान्त सिंह (के.उ.शु.) |
| | | द्वितीय | कु.महिमा दीक्षित (के.उ.शु.) |
| | | तृतीय | श्रीमती आशा (के.उ.शु.) |
| | | सांत्वना | श्री दुर्गेश कुमार जांगिड (लेखा परीक्षा) |
| | | सांत्वना | श्री सोमिल रस्तोगी(पी ए ओ) |
| 2 | हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता | प्रथम | श्री सुमित नेहरा (के.उ.शु.) |
| | | द्वितीय | श्रीमती आशा (के.उ.शु.) |
| | | तृतीय | श्री सोमिल रस्तोगी(पी ए ओ) |
| 3 | हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता | प्रथम | श्री सुमित नेहरा (के.उ.शु.) |
| | | द्वितीय | श्रीमती आशा (के.उ.शु.) |
| | | तृतीय | श्री गौरव प्रताप सिंह(लेखा परीक्षा) |
| 4 | हिन्दी सुगम संगीत प्रतियोगिता | प्रथम | श्री गौरव प्रताप सिंह(लेखा परीक्षा) |
| | | द्वितीय | श्री प्रजीत के पी(के.उ.शु.) |
| | | तृतीय | श्री आशिष कुमार सिंह |
| 5 | हिन्दी अंताक्षरी प्रतियोगिता | प्रथम | श्रीमती जिनी रज़ाक (के.उ.शु.) |
| | | | श्रीमती नाजिया सुल्ताना (के.उ.शु.) |
| | | द्वितीय | श्री गौरव प्रताप सिंह(लेखा परीक्षा) |
| | | | श्री दीपक कुमार (के.उ.शु.) |
| | | तृतीय | कु किरण शर्मा(के.उ.शु.) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | कु महिमा दीक्षित(के.उ.शु.) |
| 6 | प्रश्नोत्तरी | प्रथम | श्री प्रदीप तँवर (के.उ.शु.) |
| | | द्वितीय | श्री सुमित नेहरा (के.उ.शु.)<br>श्री आनंद बाबु (के.उ.शु.) |
| | | तृतीय | श्री विनोद मकोल(के.उ.शु.)<br>श्री गौरव प्रताप सिंह(लेखा परीक्षा) |
| 7 | बच्चों की प्रतियोगिताएँ | | श्री सोमिल रस्तोगी(पी ए ओ) |
| | कविता पाठ ग्रुप -4 | प्रथम<br>द्वितीय | मेघना महेश<br>सौपर्णिका पी |
| | कविता पाठ ग्रुप -2<br>कविता पाठ ग्रुप -1 | प्रथम<br>प्रथम | अनुपमा सूसन कोरुत<br>अयान फिरोस हुसैन |
| | कविता पाठ ग्रुप - नर्सरी<br>हस्तलेखन ग्रुप -4 | प्रथम<br>प्रथम | नेहान फिरोस हुसैन<br>मेघना महेश |
| | हस्तलेखन ग्रुप -2 | द्वितीय<br>प्रथम | सौपर्णिका पी<br>अनुपमा सूसन कोरुत |
| | हस्तलेखन ग्रुप -1 | प्रथम | अयान फिरोस हुसैन |

सभी विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए गए ।

हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 28.09.2018 को अपराह्न 3.30 बजे आयुक्तालय के सभागार में श्री पुल्लेला नागेश्वरा राव, आई आर एस, मुख्य आयुक्त, कोच्चि की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । श्री मुहम्मद यूसफ, आई आर एस, लेखा परीक्षा आयुक्त, कोच्चि भी समारोह में उपस्थित थे। सभी वरिष्ठ अधिकारी तथा बहु संख्या में कनिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी पखवाड़े के समापन समारोह में उपस्थित थे । प्रार्थना गीत के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ तथा कार्यक्रम संचालक श्रीमती रोसेलिन्ड जोस थॉमस कोरुत, कनिष्ठ अनुवादक द्वारा प्रारंभिक परिचय देने के बाद श्री अमरनाथ केसरी, संयुक्त आयुक्त ने सभी व्यक्तियों का स्वागत किया।

इस समापन समारोह में श्री पुल्लेला नागेश्वरा राव, मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क कोच्चि क्षेत्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आयुक्तालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे विभिन्न कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया और राष्ट्रीय एकता और बोलचाल के लिए हिन्दी और अँग्रेजी के साथ साथ प्रांतीय भाषा के महत्व के बारे में भी बताया ।

श्री पुल्लेला नागेश्वरा राव, मुख्य आयुक्त, कोच्चि क्षेत्र के कर कमलों से प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत सभी अधिकारी और बच्चों को को पुरस्कार प्रदान किए गए ।

इस समारोह में उपस्थित व्यक्तियों के मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया । श्री गौरव प्रताप सिंह, प्रजीत के पी. और आशिष कुमार ने गीत प्रस्तुत किया । सभी उपस्थितों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई थी । कार्यक्रम के अंत में श्रीमती सुजाता एस., अधीक्षक, लेखा परीक्षा आयुक्तालय ने हिन्दी पखवाड़ा समारोह से जुड़े विभिन्न

कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए अधिकारियों को धन्यवाद किया । सायं 4.30 बजे राष्ट्रीय गान के साथ समारोह सम्पन्न हुआ ।

राजभाषा अनुभाग

## चुटकुले

1. टीचर : मैं 2 वाक्य दूंगा आपको उसमें अंतर बताना है

1. उसने बर्तन धोये

2. उसे बर्तन धोने पड़े

संजू : पहले वाक्य में कर्ता अविवाहित है और दुसरे वाक्य में कर्ता विवाहित है। टीचर अभी तक बेहोश है।

2. टीचर: घर की परिभाषा बताओ ।

टीटू: जो घर हौसले से बनाये जाते हैं उसे "हाऊस" कहते हैं...
जिन घरों में होम-हवन होते हैं उन्हें "होम" कहते हैं...
जिन घरों में हवा ज्यादा चलती है उन्हें *"हवेली"*कहते हैं...
जिन घरों में दीवारों के भी कान होते हैं उन्हें "मकान" कहते हैं...
जिन घरों के लोन के इंस्टॉलमेंट भरते-भरते आदमी लेट जाता है उन्हें "फ्लैट" कहते हैं...
और जिन घरों में यह भी न पता हो कि बगल के घर में कौन रहता है उन्हें "बंगला" कहते हैं

टीटू को student of the year चुना गया

3. टीचर:- "क्लास में लड़ाई क्यों नही करनी चाहिए..?"

संजू:-"क्योंकि पता नही एग्जाम में कब किसके पीछे बैठना पड़ जाये..।

4. पत्नी- शादी से पहले तुम मुझे होटल,
सिनेमा, और न जाने कहां- कहां घुमाते थे
शादी हुई तो घर के बाहर भी नहीं ले जाते..
पति- क्या तुमने कभी किसी को...
चुनाव के बाद प्रचार करते देखा है...

सम्पादन : राजभाषा अनुभाग

# बच्चों की चित्रकला/ Paintings by Children

कु. संगीत रोशन, कक्षा - 3
संयुक्त आयुक्त, श्रीमती राजेश्वरी आर नायर का सुपुत्र

कु.पृथ्वी प्रदीप, कक्षा - 1
अधीक्षक, श्रीमती ए उषा का पोता

कु.पावना प्रदीप, कक्षा - यू.के.जी.
अधीक्षक, श्रीमती ए उषा की पोती

कु.अनुश्री शंकर, कक्षा - 8
निरीक्षक, श्रीमती सुधा आर एस की सुपुत्री

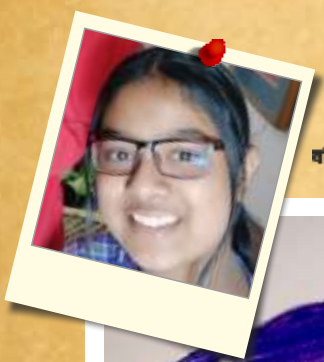

कु.अनुपमा सूरज कोरतु, कक्षा - 7
वरिष्ठ अनुवादक, श्रीमती रोसेलिंड जोस कोरतु की सुपुत्री

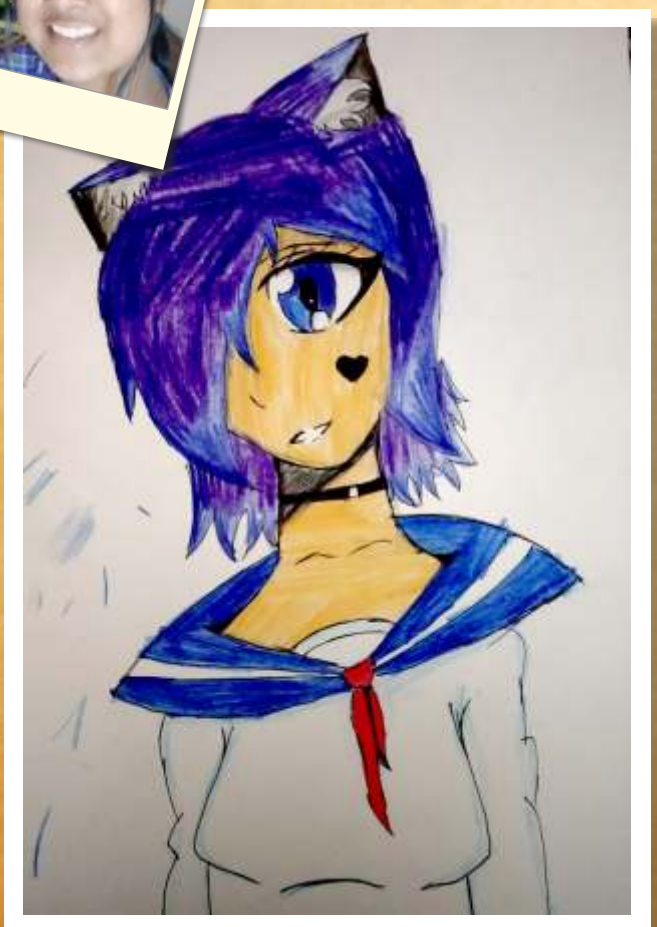

कु.अरुंधती शंकर, कक्षा - 12
मुख्य लेखा अधिकारी, श्रीमती एम के यशोदा की सुपुत्री

कोच्चि आयुक्तालय में अध्यक्ष [सीबीआईसी] का दौरा /
**Chairman's [CBIC] visit at Kochi Commissionerate**

# ओणम समारोह 2019/ Onam Celebrations 2019

## अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 2019/
## International Women's Day Celebrations 2019

# क्लब दिवस 2018 / Club Day -2018

आयुक्तालय के विभिन्न खेल टीमों के साथ प्रधान मुख्य आयुक्त /
**Principal Chief Commissioner with various sports teams of the Commissionerate**

दक्षिण क्षेत्र राजस्व [खेल व सांस्कृतिक]मीट 2019 - कोच्चि आयुक्तालय के अधिकारी हिंदी नाटक में भाग लेते हुए /
**Officers of Kochi Commissionerate participating in the Hindi Drama – South Zone [Sports and Cultural] Meet 2019**

महात्मा गांधी जी की 150 वीं जयंती के अवसर पर खादी भवन द्वारा खादी की बिक्री और आयुक्तालय के अधिकारियों द्वारा खादी फैशन शो /
**Khadi Sale & Fashion Show by the Khadi Bhavan and officers of the Commissionerate respectively on the occasion of 150th birth anniversary of Mahatma Gandhiji**

# सतर्कता सप्ताह 2019 / Vigilance Week 2019

श्री ई.के.भरत भूषण, सदस्य (प्रशासनिक), केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण, एर्णाकुलम
Shri E.K. Bharat Bhushan, Member(A) , CAT, Ernakulam

One Year of GST
1 NATION
TAX
GST MARKET
एक भारत - सशक्त भारत

CELEBRATING ONE YEAR OF GST
Making the country prosper
and everyone happy
GST
GST, Central Excise & Customs

## जी एस टी दिवस - 2019 / GST DAY -2019

राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता / Presidential Awardees
डॉ टिजु टी, आयुक्त व श्री प्रसाद पी., सहायक आयुक्त
Dr.Tiju T.,Commissioner & Shri Prasad P, Asst.Commissioner

ओलिंपियन एवं ध्यान चंद पुरस्कार 2018 विजेता श्रीमती बॉबी अलोयिस को
कोच्चि आयुक्तालय द्वारा सम्मानित किया गया /
Olympian and Dhyan Chand Award 2018 winner
Smt. Bobby Aloysius was felicitated by
the Kochi Commissionerate.

केरल बाढ़ 2018 - कोच्चि आयुक्तालय के अधिकारियों द्वारा राहत कार्य/
**Kerala Floods 2018 – Relief work by the Officers of Kochi Commissionerate**

## कैरली विभागीय पत्रिका विमोचन / Kairali Departmental Magazine Release

**कोच्चि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति रोलिंग ट्रॉफी-कोच्चि आयुक्तालय को प्रथम पुरस्कार।**
**Kochi Tolic Rolling Trophy –First prize To Kochi Commissionerate.**

## हिंदी पखवाड़ा समारोह 2018 / Hindi Fortnight Celebrations 2018

**नासिन, कोचिन द्वारा आयोजित कार्यक्रम - कमोडोर अभिलाष टॉमी द्वारा एक प्रेरणात्मक बातचीत**
**Motivational talk by Cmr. Abhilash Tomy organised by NACIN, Cochin**

# Unity in Diversity

28 states, 8 union territories, 720 districts, 6,49,481 villages, 9 religions, hundreds of sects, 3,000 castes, 25,000 sub-castes, 880 languages, 22 official languages, over 700 dialects, over 13 scripts, thousands of festivals, different customs, traditions, food habits, attires, cultures, different geography, different history, 1.30 billion people, yet, we are one nation, that is Bharat. This is the essence of 'Unity in Diversity'. This is our uniqueness; this is our strength. And this is why, every day in school, we pledge that we are proud of its rich and varied heritage.

Since beginning of civilization, Bharat has been a home for settlers. Various races came to our country and became part of this diversity. After independence, this uniqueness was preserved by us, the people. Today, we celebrate this unity in diversity with pride. Our constitution guarantees equality before law to each and every citizen of this country irrespective of caste, creed, religion or gender.

We cherish individual thoughts & dreams. We are separated by geographical and linguistic barriers, yet, we all stand united for our national cause. A soldier defends our frontiers, an engineer builds dams, a doctor treats patients, and a policeman safeguards us, each one of them does it for his motherland. They don't have a caste or religion. Our national flag is a union of three colours, which symbolizes 'unity in diversity'. Our lives would have been so colourless had we were not born in this diverse land of ours. Every right comes with a responsibility too. While enjoying the fruits of diversity, let us not be an impediment in our path to glory. Interestingly, those 52 seconds which we stand together for national anthem is what is called 'unity in diversity'.

# Where there is a will, there is a way.

1. Once upon a time, there was a king of Scotland. His name was Robert Bruce. He was a brave king. But the King of England, had a big army. He wanted to win the Scotland. Six times, Bruce had to fight against the mighty English army. And every time, he was defeated. He was forced to hide himself in the woods and the mountains.He was mentally and physically tired. One day, when he was hiding in a cave, he saw a spider making her web. Six times, she tried but failed. With some more care, she tried for the seventh time. And this time, she was successful. Inspired by this, Bruce fought for the seventh time and won his kingdom back. The moral of the story is that where there is a will, there is a way.
2. With strong willpower, nothing is impossible in the world. Even the word impossible is written as “I-m-possible”. Do you remember how we learnt the bicycle riding? Many a times, we fell and hurt ourselves, but we tried again. Those who showed the will, they mastered the skill.
3. Our history is full of people, who achieved great things because of their willpower. Our freedom struggle is a good example of strong willpower of our freedom fighters. For hundreds of years we were oppressed. Freedom from the mighty British Empire, seemed impossible. Many a times, people stood up, but they were beaten and killed. But struggle never stopped… Finally, we got our independence.
4. If a person really wants to do a thing, he will certainly find the way to do it. There are persons who believe in fate. They do not give their best. Ultimately, they fail. No mission is impossible, if we have hunger for it. Edison failed thousand times before he made a filament of bulb. Sudha Chandran's leg was cut, but she wanted to dance and she did it with a prosthetic leg. Gandhi ji was thrown out of train in South Africa, but he never gave up. Shri APJ Abdul Kalam went on to become the President of India, despite being born in a poor family. The list is long and without these people our history would have been incomplete.
5. A river finds its way, because it has to reach the ocean. Victory blesses only those, who dare to dream, and try to achieve.

Miss Nishka Singh, Class-VI
KV NAD, Aluva
D/o-Shri Shashi Kant Singh,
Inspector of Central Excise.

# VISIT TO A HISTORIC PLACE

A warm up session was organised for the 56 students of my class. It was conducted on 3rd April,2019 and the pace fixed was Hill Palace, Tripunithra. We were accompanied by Principal K.V.Port Trust Sri Prabhakaran Sir, our Vice Principal Sri Pyarelal Sir, Prem Kumar Sir and Krishna Madam.

The group got into the bus exactly at 9.30 am after showering blessings from our Principal Sri P.Asok Sir. We reached the destination at 10.15 am and soon after waited on a line as the teacher in charge went to get the tickets. After getting the tickets we reached the top and headed to the cloak room to remove our footwear and entered to the Palace Museum. We were whole heartedly welcomed by Sudeesh Sir, officer in charge as well as our guide.

The area consists of 52 acres with 49 buildings and the Palace consists of more than 16 galleries. Due to tight time schedule we could only visit a few. Each room of the Gallery is a part of the Palace with vibrant flooring and hangings. Each exhibit was shown within the Palace.

The most interesting gallery was the Jewellery Gallery as it displayed varieties of chains, belts, bangles, earrings, rings, coins all made with gold, pearls, gems, precious stones and even rudrakshams. The centre of attraction was the crown made from gold with emerald, ruby and diamonds that weighed 1 ¾ kg and is more than 500 years old. Another part of the Museum was the balcony as we could see the Cochin Port Trust.

At 12.10 pm everyone was exhausted due to the heat and all were boarded to Hotel Wyte Fort. A very interesting and interactive session was lectured by Prabhakaran Sir on benefits of being an Arts student. He provided us with ideas to brighten our future. By the end we were accompanied by P. Asok Sir, Biju Sir, Karthikeyan Sir and Geeta Warrier Madam. Thereafter we moved on for the lunch session. It was buffet with starters, main course and desserts. We really enjoyed the food and a day to learn the subject with experience. The we returned to school for the drop –out point and reached by 3.10 pm.

**********

## Time Shall Heal It..

Time shall heal it
As it should be
For the heart to lit
By one for me

Now I listen my mind
For believing you blind
I move on today
As for till the day
Until I forget
The first day we met

Little you did care
For catching the fire
That burnt up to ashes
That reached my eye lashes

**********

Kum.Gayathri K.K.
D/o Smt.Sindhu M.S.,Inspr.

# നക്ഷത്രക്കണ്ണുകളുള്ള പെൺകുട്ടി

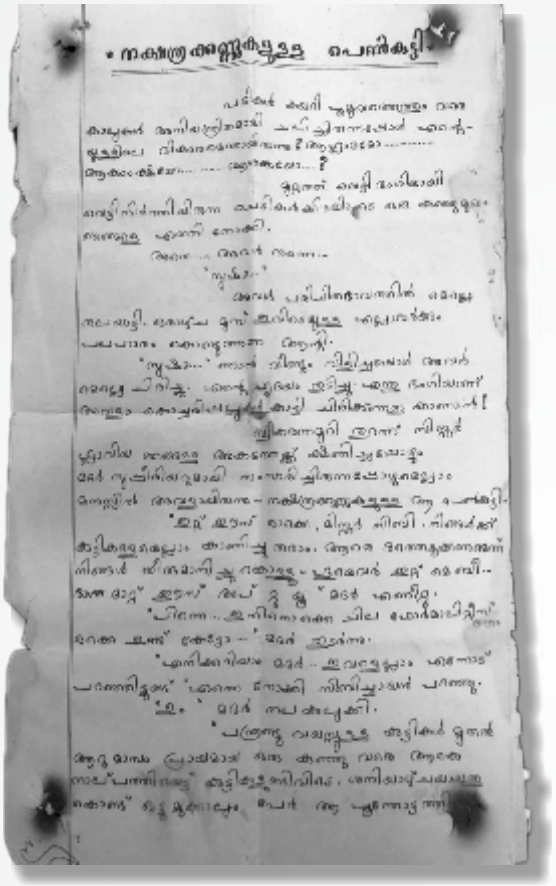


**ഡോ. ടിജു തോമസ്സിന്റെ നോട്ട് ബുക്കിൽ കണ്ടത്**

**30 വർഷങ്ങൾക്ക് മുമ്പ് എഴുതിയ ഒരു ചെറുകഥ**

പടികൾ കയറി പൂമുഖത്തെത്തും വരെ കാലുകൾ അനിയന്ത്രിതമായി ചലിച്ചിരുന്നപ്പോൾ എന്റെയുള്ളിലെ വികാരമെന്തായിരുന്നു? ആഹ്ലാദമോ.. ആകാംക്ഷയോ.. ആശങ്കയോ.....?

മുറ്റത്ത് ഭംഗിയായി വെട്ടിനിർത്തിയിരുന്ന ചെടികൾക്കിടയിലൂടെ ഒരു കുഞ്ഞുമുഖം ഞങ്ങളെ എത്തിനോക്കി.

അതെ.... അവൾ തന്നെ....

"സുഷാ...."

അവൾ പരിചിതഭാവത്തിൽ മെല്ലെ തലയാട്ടി. ഒരാഴ്ച മുമ്പ് ഇവിടെയുള്ള എല്ലാവർക്കും പലഹാരം കൊണ്ടുത്തന്ന ആന്റി.

"സുഷാ...." ഞാൻ വീണ്ടും വിളിച്ചപ്പോൾ അവൾ മെല്ലെ ചിരിച്ചു. എന്റെ ഹൃദയം തുടിച്ചു. എന്തു ഭംഗിയാണ് അവളാ കൊച്ചരിപ്പല്ലുകൾ കാട്ടി ചിരിക്കുന്നതു കാണാൻ!

സ്വീകരണ മുറി തുറന്ന് സിസ്റ്റർ ഫ്ളാവിയ ഞങ്ങളെ അകത്തേക്ക് ക്ഷണിച്ചപ്പോഴും മദർ സുപ്പീരിയറുമായി സംസാരിച്ചിരുന്നപ്പോഴുമെല്ലാം മനസ്സിൽ അവളായിരുന്നു– നക്ഷത്രക്കണ്ണുകളുള്ള ആ പെൺകുട്ടി.

"ഇറ്റ് ഈസ് ഓക്കെ, മിസ്റ്റർ സിബി. നിങ്ങൾക്ക് കുട്ടികളെയെല്ലാം കാണിച്ചു തരാം. ആരെ ദത്തെടുക്കണമെന്ന് നിങ്ങൾ തീരുമാനിച്ചുകൊള്ളൂ.... ഹൂയെവർ ഇറ്റ് മെ ബീ ദാറ്റ് ഈസ് അപ് റ്റു യു" മദർ എണീറ്റു.

"പിന്നെ, ഇതിനൊക്കെ ചില ഫോർമാലിറ്റീസ് ഒക്കെ ഉണ്ട് കേട്ടോ...." മദർ തുടർന്നു. "എനിക്കറിയാം മദർ..... ഇവളെല്ലാം എന്നോട് പറഞ്ഞിട്ടുണ്ട്."

എന്നെ നോക്കി സിബിച്ചായൻ പറഞ്ഞു.

"ഉം" മദർ തല കുലുക്കി.

"പന്ത്രണ്ടു വയസ്സുള്ള കുട്ടികൾ മുതൽ ആറുമാസം പ്രായമായ ഒരു കുഞ്ഞുവരെ ആകെ നാൽപത്തിയെട്ട് കുട്ടികളുണ്ടിവിടെ. ശനിയാഴ്ചയായതുകൊണ്ട് ഒട്ടുമുക്കാലും പേർ ആ പൂന്തോട്ടത്തിൽ കാണും.... ഗോ ഓൺ ..... ആന്റ് ഫൈൻഡ് വൺ ഓഫ് യുവർ ചോയ്സ്" ' കൊച്ചു കുട്ടികളെ കൊണ്ട് സജീവമായ ഉദ്യാനം ചൂണ്ടിക്കാട്ടി മദർ കൂട്ടിച്ചേർത്തു.

സിബിച്ചായന്റെ കൂടെ കുട്ടികളുടെ അടുത്തേയ്ക്ക് നീങ്ങിയപ്പോൾ എന്റെ കണ്ണുകൾ നക്ഷത്രക്കണ്ണുക ളുള്ള ആ കൊച്ചു സുന്ദരിയെ തിരയുകയായിരുന്നു. ഒരു ബോഗയൻവില്ലയുടെ ചുവട്ടിൽ അവളെ ഞാൻ കണ്ടെത്തിയപ്പോൾ അവൾ വീണ്ടും ചിരിച്ചു.

"സുഷാ ..... മോളെന്റെ കൂടെ വരുന്നോ?" അവളുടെ തലമുടിയിഴകളിലൂടെ വിരലോടിച്ചു കൊണ്ട് ഞാൻ ചോദിച്ചു.

"എവ്ടെയാ?"
"ദൂരെ.... എന്റെ വീട്ടിലേയ്ക്ക്.... ഇനി മോൾക്കവിടെ കഴിയാം..."
"അവിട്യാരൊക്കെണ്ട്?"
"മോളുണ്ടാവും..... ഞാനുണ്ടാവും..... പിന്നെ ദാ.... ആ നിയ്ക്കണ അങ്കിളുമുണ്ടാവും....."
"അവിട്യെന്തൊക്കെണ്ട്?"

"മോൾക്കെന്തൊക്കെ വേണ്ടേന്വച്ചാ, അതെല്ലാമുണ്ടാവും...."
"കളറൊള്ള ഉടുപ്പ്?"

"ഉം"
"പാവക്കുട്ടി?"
"ഉം"
"കേക്കുണ്ടാക്കി തര്വോ?"
"ഉം"
"ബലൂൺ?"
"വാങ്ങിത്തരാം"
"ശരിക്കും"
"ങാ ശരിക്കും"

അവളുടെ നക്ഷത്രക്കണ്ണുകൾ തിളങ്ങുന്നുണ്ടായിരുന്നു.
"ന്റെ ക്ലാസ്സിലെ റിങ്കുനെ അറ്വോ? റിങ്കൂന് അവൾടെ അപ്പ ഒരു പട്ടിക്കുട്ടീനെ വാങ്ങിക്കൊടുത്തു.... പഞ്ഞി പോലത്തെ ഒരു പട്ടിക്കുട്ടി....."
"മോൾക്കും പട്ടിക്കുട്ടിയെ വേണോ?"
"നിക്ക് വാങ്ങിത്തരാൻ അപ്പയില്ലല്ലോ...."

"ആരു പറഞ്ഞു മോൾക്ക് അപ്പയും മമ്മയും ഇല്ലെന്ന് ?ഇനി ഞാനാ മോൾടെ മമ്മ" എന്റെ കണ്ണു നിറഞ്ഞു പോയി.

സിബിച്ചായനും മദർസുപ്പീരിയറും കൂടി അടുത്തേയ്ക്ക് വരുന്നതു കണ്ട് ഞങ്ങളെഴുന്നേറ്റു

"ഞാൻ പറഞ്ഞില്ലേ സിബി, ഇതാണ് സുഷ. എട്ടു വർഷങ്ങൾക്കു മുമ്പ് അവളുടെ ഗ്രാന്റ് പാ അവളെ ഇവിടെ ഏൽപ്പിച്ചതാണ്. ഹി ഈസ് നോ മോർ... മദർ

"ഇവളുടെ മാതാപിതാക്കൾ?"

“മകൾ ജനിച്ച വിവരമറിഞ്ഞ് അവളെ കാണാൻ ധൃതികൂട്ടിയ അച്ഛന് ഒരിക്കലും അവളെ കാണാനായില്ല..... ഒരു ബൈക്ക് ആക്സിഡന്റ് . ഇരുപത്തെട്ടു കെട്ടുന്നതിനു മുമ്പേ ആ കുഞ്ഞിനെ അതിന്റെ ഗ്രാന്റ് പാ ഇവിടെ കൊണ്ടു തന്നു. തന്റെ മകൾക്ക് മറ്റൊരു കല്യാണം ഒത്തു വരുന്നതിൽ യാതൊന്നും തടസ്സം നിൽക്കരുതെന്ന് അദ്ദേഹത്തിന് നിർബ്ബന്ധമുണ്ടായിരുന്നു. ഒട്ടേറെ നിർബന്ധത്തിന് വഴങ്ങി ആ യുവതി വീണ്ടും വിവാഹിത യായി എന്ന് കേട്ടു..... മറ്റൊന്നും അറിയില്ല. അവർ എവിടെയെങ്കിലും സുഖമായി കഴിയുന്നുണ്ടാവും. ഈ കുട്ടി മാത്രം ഇവിടെ....”

ഈ കദനകഥ കേട്ട് എന്റെ കണ്ണുകളിൽ നീർ നിറഞ്ഞു.

“എന്താ സുമ ഇത്..., കരയുകയാ?” മദർ.
“ആർക്കാണെങ്കിലും സങ്കടം വരാതിരിക്യോ ? പിന്നെ... ഇവളൊരല്പം തൊട്ടാവാടിയും ആണല്ലോ.” സിബി ച്ചായൻ എന്റെ തോളത്തുകൂടി കൈയിട്ട് എന്നെ ആശ്വസിപ്പിക്കാൻ ശ്രമിച്ചു.

“സിബിച്ചായാ...”
“ഉം?”
“നമുക്കിവളെ മതി”
“മോൾക്കിഷ്ടപ്പെട്ടോ?”
‘സിബിച്ചായനെ ചൂണ്ടിക്കാട്ടി ഞാൻ ചോദിച്ചു.
“അങ്കിൾ” വിടർന്ന മുഖത്തോടെ അവൾ

സുഷയെ സിബിച്ചായൻ അല്പനേരം നോക്കി നിന്നു. ഞാൻ കുനിഞ്ഞ് സുഷയോടു പറഞ്ഞു.
“മോളോട് ഞാൻ പറഞ്ഞില്ലേ.... ആരാ.. ആരാ ഈ നിയ്ക്കണേന്ന് പറഞ്ഞേ”

“അങ്കിൾ, അല്ലേ ആന്റീ..... മദർ, ഈ ആന്റി പറയ്യാ.... എന്നെ”
സിബിച്ചായൻ തിരിഞ്ഞു നടന്നു.
“സിബിച്ചായാ..”
സിബിച്ചായൻ തിരിഞ്ഞു നോക്കാതെ നടന്നു. ഞാൻ ഓടി അദ്ദേഹത്തിന്റെ അടുത്തെത്തി. “ആ കുട്ടിയേ നമുക്ക് വേണ്ട മോളെ” എന്റെ കണ്ണുകളിലേയ്ക്ക നോക്കി സിബിച്ചായൻ, പറഞ്ഞപ്പോൾ ഞാൻ ഞെട്ടിപ്പോയി.
“സിബിച്ചായാ”
“അതു വേണ്ട മോളേ....
അവൾക്ക് എട്ടു വയസ്സു പ്രായമായില്ലേ.... പറഞ്ഞ് കേട്ട് അവൾക്കറിയാം അവളുടെ അപ്പ മരിച്ചു പോയെന്ന് അവളൊരിക്കലും നമ്മെ ‘അപ്പ’ ‘മമ്മ’ എന്ന് വിളിക്കില്ല.... നമ്മൾ അവളെ നിർബന്ധിച്ച് വിളിപ്പിച്ചാൽ തന്നെ അവളുടെ മനസ്സിൽ എന്നും നമ്മളവൾക്ക് ഒരു ‘അങ്കിളും’ ‘ആന്റിയും’ ആയിരിക്കും..... അതു കൊണ്ട് നമുക്ക് തിരിച്ചറിവിന് പ്രായമായിട്ടില്ലാത്ത ഒരു കുഞ്ഞിനെ മതി മോളേ...”
“പക്ഷേ ....” സിബിച്ചായൻ പറയുന്നതു മുഴുവൻ ശരിയാണെന്ന് അറിയാമായിരുന്നിട്ടും എന്റെയുള്ളം തേങ്ങിപ്പോയി.
എങ്കിലും അവളായിരുന്നു എന്റെ മനസ്സു മുഴുവൻ..... നക്ഷത്രക്കണ്ണുകളുള്ള ആ പെൺകുട്ടി,
നിസ്സഹായതയോടെ, വിങ്ങുന്ന പൃദയത്തോടെ, ഒന്നു രണ്ടു മണിക്കൂറുകൾക്കു ശേഷം ഏഴെട്ട് മാസം പ്രായ മായ കൈക്കുഞ്ഞിനേയും എടുത്ത് ആ അനാഥാലയത്തിന്റെ പടികളിറങ്ങുമ്പോൾ വെട്ടി ഭംഗിയാക്കിയിരുന്ന

ചെടികൾക്കിടയിലൂടെ രണ്ടു നക്ഷത്രക്കണ്ണുകൾ ഞങ്ങളെ ഉറ്റു നോക്കുന്നുണ്ടായിരുന്നു.
ആ കണ്ണുകളിലെ വെളിച്ചം കെട്ടിരുന്നു. ആശ കൊടുത്ത ഞാൻ തന്നെ അവളോട് ''നിനക്കു തരാൻ ഇതു മാത്രമേയുള്ളൂ സുഷാ...'' എന്ന് പറഞ്ഞ് അവളെ ചുംബിച്ചപ്പോൾ ഞങ്ങളുടെ കണ്ണുകളിൽ നിന്നൊലിപ്പിച്ചിറങ്ങിയ കണ്ണീരിന്റെ നനവ് എന്റെ കവിളത്തു നിന്ന് പോയിട്ടു പോലുമില്ലായിരുന്നു.
എന്റെ ആ കണ്ണീർത്തുള്ളികൾ
എന്റെ ആ നെടുവീർപ്പുകൾ
എന്റെ ആ ചുടുചുംബനങ്ങൾ

അവയിലൊളിഞ്ഞിരുന്ന കൊടിയ രഹസ്യം എന്തായിരുന്നുവെന്ന് നക്ഷത്രക്കണ്ണുകളുള്ള ആ പെൺകുട്ടി ഒരിക്കലും അറിഞ്ഞില്ല.

ഡോ. ടിജു തോമസ്
ഓഡിറ്റ് കമ്മീഷണർ

# വിധിക്കാനെന്തെളുപ്പം

ഒരാളുടെ അസാന്നിധ്യത്തിന്, മൗനത്തിന്, നൂലറ്റ പട്ടം പോലുള്ള ഗതികിട്ടാ സഞ്ചാരങ്ങൾക്ക്, പാലായനങ്ങൾക്ക്, കാരണങ്ങൾ കണ്ടെത്താൻ എന്തെളുപ്പം ! നിങ്ങളുടെ ഭാവനയുടെ വ്യഥകളുടെ, പരിചിത നഷ്ടങ്ങളുടെ രാശി പലകയാൽ ഗണിച്ചെടുത്താൽ മതി..... 'അതിങ്ങനെ ആവാ'മെന്നും 'അതിനാലാവാം' ഇങ്ങനയെന്നും 'ഇതല്ലാതെ മറ്റെന്ത്?' എന്നും തഞ്ചത്തിൽ ഓർത്തും അടുക്കി പെറുക്കിയും കൂട്ടിയും കുറച്ചുമങ്ങനെ എന്നാൽ, ആ ലളിത സമവാക്യങ്ങളിലും ഒതുങ്ങാത്ത ചിലരുണ്ട്..... ജീവിതം പരസ്യമാക്കാൻ ആഗ്രഹിക്കാത്തവർ.... 'എന്റെ ചോര കിനിയുന്ന മുറിവുകൾ' എന്ന് ക്യാൻവാസിൽ കോറി വരച്ചു ഒരു ഗാലറിച്ചുമരിലും തൂക്കാൻ ഇഷ്ടമില്ലാത്ത, തനിക്കായ് വിരുന്നെത്തിയ വേനലും, വർഷവും, ശൈത്യവുമെല്ലാം സ്വയം നനഞ്ഞും പൊള്ളി പിളർന്നും ഖനീഭവിച്ചും കൊണ്ടു തീർക്കുന്നവർ....

മണ്ണിടിയലുകളും ഉയർത്തെഴുന്നേൽപ്പുകളും നിലക്കാത്ത സങ്കടപെയ്ത്തുകളും ഒരേ ഹൃദയമിടിപ്പോടെ കണ്ണു പോകുന്നവർ അവരെ വിധിക്കുമ്പോൾ പതിവു സമവാക്യങ്ങളെ കൂട്ടുപിടിക്കരുത്. കഴിയുമെങ്കിൽ വിധിക്കാതിരിക്കുക. എല്ലാ അതിജീവനങ്ങളും സുവർണ്ണ ലിപികളിൽ കൊത്തേണ്ടവയല്ല. ഒരു കാല്പാടുപോലും അവശേഷിപ്പിക്കാതെ കടന്നു പോകാൻ ആഗ്രഹിക്കുന്നവരുടെ അതിജീവനങ്ങൾ പ്രത്യേകിച്ചും

ഹാബ്ബി ഷീഭൻ
സ്റ്റെനോഗ്രാഫർ ഗ്രേഡ് – 2

സൊഹരായി

# കാഴ്ചകൾ

ഉപ്പുമാവിനുള്ള ചേരുവകകൾ തയ്യാറാക്കി കനകലോചൻ മണ്ണെണ്ണ സ്റ്റൌവിന് മുകളിൽ വച്ചു. പാകമാവാൻ അരമണിക്കൂർ സമയമെടുക്കും. അതുവരെ കായലോരത്തെ പുതിയ നടപ്പാതയിൽ കാഴ്ച കണ്ടിരിക്കാമെന്ന് കരുതി അയാൾ പുറത്തേക്കിറങ്ങി. മുന്നിലും പുറകിലും നിരയായി കിടന്നിരുന്ന മറ്റ് ലോറികളിലെ ഡ്രൈവർമാർ മിക്കവരും റൊട്ടിയും ദാളും ഉണ്ടാക്കുവാൻ തയ്യാറെടുത്തു വരുമ്പോഴേക്കും കനകലോചന്റെ സ്ഥിരം പ്രഭാത ഭക്ഷണം ആയ ഉപ്പുമാവ് വേവാൻ തുടങ്ങിയിരുന്നു.

നടപ്പാതയിൽ ആളുകൾ പല വിധത്തിലുള്ള കസർത്തുകളിൽ ഏർപ്പെട്ടിരിക്കുകയാണ് . ഓടുന്നവർ, ഓടുന്നതിനിടയി ൽ ചാടുക കൂടി ചെയ്യുന്നവർ , കൈ വല്ലാത്ത ആയത്തിൽ വീശി നടക്കുന്നവർ എന്നിവരൊക്കെ അവിടുണ്ട് . ഓരോ മിനിട്ടും പ്രയോജനപ്പെടുത്താൻ വേണ്ടി ചെവിയിൽ ഇയർ ഫോൺ വച്ച് പാട്ടും കേട്ടു ഓടുന്നവർ വരെ അവിടുത്തെ ആൾക്കാരിൽ പ്പെടുന്നു.

കനക ലോചൻ ഒരു സിഗറിറ്റിന് തീ കൊളുത്തി. സന്തോഷകരവും രസകര വുമായ കാര്യങ്ങൾ ചെയ്യു മ്പോളും അങ്ങന ത്തെ കാര്യങ്ങൾ കണ്ടു നിൽക്കു മ്പോളും ചുണ്ടത്ത് ഒരു സിഗരറ്റ് അയാളെ സംബന്ധിച്ചിടത്തോളം പണ്ടേ ഒരു ഹരമാണ്. വ്യായാമം ചെയ്യുന്നതിനെക്കാൾ സുഖം അത് ചെയ്യുന്നവരെ നോക്കി നിൽക്കുന്നതാണെന്ന് അയാൾക്കു തോന്നി.

പല നിറങ്ങളിലുള്ള ടൈലുകൾ മനോഹര ഡിസൈനിൽ വിന്യസിച്ചിരിക്കുന്ന കായൽ കരയിലെ പുതിയ പാതയിൽ ആളുകൾ നിർബാധം ഒഴുകുന്നതിനിടെ ഒരാൾ ഒരു സ്ത്രീയുടെ കൈയ്യി ൽ പിടിച്ചുകൊണ്ടു നടന്നു വരുന്നതു അയാളുടെ ശ്രദധയിൽ പെട്ടു. യുദ്ധ വാർത്ത വായിക്കാൻ വേണ്ടി ടെലിവിഷനിൽ വന്നിരിക്കുന്ന ആളെ പോലെ കനത്ത വീർത്ത മുഖമാണ് അയാൾക്കു . അവർ കൈ പരസ്പരം കോർത്ത് പിടിച്ചിട്ടുണ്ടെങ്കിലും മനസ്സുകൾ ഒട്ടും ചേർന്നിട്ടിലെന്ന് വ്യക്തം. അതിനാൽ അവർ അയാളുടെ ആരായിരിക്കും എന്നു പറയാൻ വിഷമം. മുന്നിൽ കൂടി കടന്നു പോകുന്ന ഓരോരുത്തരേയും കുറിച്ച് ഇങ്ങനെ ഓരോന്നൊക്കെ ചിന്തിച്ചു പുകയൂതി നിന്നു രസിക്കുന്നതിനിടെ ഒരു കിഴവൻ പതുക്കെ നടന്നു വന്നു ഒരു സിമൻറ് ബെഞ്ചിൽ ഇരുന്നു. അയാൾ ചില ചെറിയ ശ്വാസന ക്രിയകൾ ചെയ്യാൻ ആരംഭിച്ചു. വയർ അകത്തേക്ക് ശക്തിയിൽ വില്ല് പോലെ വലിച്ചു പിടിച്ചു ശ്വാസ കോശത്തിൽ നിമിഷ നേരത്തേക്ക് ബന്ധനത്തിലാകുന്ന വായുവിനെ ശക്തിയി ൽ പുറത്തേക്ക് മൂക്കിലും വായിലും കൂടി തള്ളി

വിടുന്നതാന് ക്രിയ. അതിനിടെ ഓരോ തവണയും ഭും ഭും എന്ന ശബ്ദവും ഉറക്കെ കേൾപ്പിച്ചു കൊണ്ടിരുന്നു. ഈ പ്രായത്തിലും അയാളുടെ ആരോഗ്യത്തിന്റെ കാരണം ഈ വ്യായാമം ആകാം. അയാളെ കണ്ടു രസം പിടിക്കുന്നതിന് മുന്പെ ആ കാഴ്ചയെ ഒരു സെക്കണ്ട് നേരത്തേക്ക് മറച്ചു കൊണ്ട് മസ്സിൽ പെരുപ്പിച്ച ഒരു ചുള്ളൻ അവർക്കിടയിലൂടെ ഓടി പ്പോയി. അപ്പോൾ കനകലോചൻ തന്റെ പേശികളിലേക്ക് നോക്കി. ചിത്രം വരക്കലും വളയം പിടിക്കലും അല്ലാതെ വേറെ ജോലികൾ ഒന്നും ചെയ്തിട്ടില്ല. എങ്കിലും നല്ല ആകൃതിയും ബലവും. അഭിമാനം മൂലം അയാളുടെ മുഖത്ത് നേരിയ പുഞ്ചിരി വിടർന്നു.

അവിടെ വന്നിട്ട് അരമണിക്കൂറായി. നാസ്ഥ കാലായിട്ടുണ്ടായിരിക്കും എന്നു കണക്ക് കൂട്ടി അയാൾ വണ്ടിയിലേക്ക് തിരിച്ചു. വടക്കൻ ഭാരതത്തിലെ ഹസാരിബാഗ് എന്ന സ്ഥലത്തു നിന്നാണ് ഇത്തവണ ലോഡുമായി അയാൾ വന്നത്. അങ്ങോട്ട് തന്നെ തിരിച്ചു പോകാനുള്ളതാണ്. ഒരാഴ്ച്ചയെങ്കിലും കഴിഞ്ഞിട്ടേ ഇനി ലോഡുള്ളൂ, അതിനാൽ അടുത്ത ദിവസങ്ങളിലും ഈ ചര്യ തന്നെ തുടർന്നു. കുറഞ്ഞ ദിവസങ്ങൾ കൊണ്ട് തന്നെ കനക ലോചന് അവിടെ വരുന്ന എല്ലാവരുടെയും മുഖം പരിചയമായി. ഏറ്റവും കൃത്യമായി അവിടെ എത്തിയിരുന്നത് ആ വയസ്സൻ ആണ്. അയാളുടെ ചില കാര്യങ്ങൾ കനകലോചൻ ശ്രദ്ധി ക്കാതിരുന്നില്ല, പ്രത്യേകിച്ചു മനോഹരമായ അയാളുടെ വേഷം. അതിരാവിലെയാണെങ്കിലും നന്നായി ക്ഷൌരം ചെയ്തു മിനുക്കിയ മുഖത്തിന് ചേരുന്ന കൊമ്പൻ മീശ. തൊപ്പിക്കു പോലും ഉണ്ട് ഒരു ആഡ്യത്വം.

അവിടെ വന്നതിന്റെ ഏഴാമത്തെ ദിവസമാണ് കനക ലോചൻ നോക്കി നിൽക്കേ അത് സംഭവിച്ചത്. പുറകോട്ടു നടന്നു കൊണ്ടുള്ള വിചിത്ര വ്യായാമത്തിൽ ഏർപ്പെട്ടിരുന്ന ഒരു ആളെ നോക്കി കൌതുകം പൂണ്ടിരിക്കുകയായിരുന്നു അപ്പോൾ അയാൾ. ഭും ഭും എന്നു ശബ്ദമുണ്ടാക്കിക്കൊണ്ടു വായു തള്ളി നിന്നിരുന്ന കിഴവൻ അപ്രതീക്ഷിതമായി നിലത്തു വീണു. നിലം പറ്റിയ കിഴവനെ ആദ്യം കണ്ടത് സിഗരറ്റും വലിച്ചു കസർത്തുകൾ വീക്ഷിച്ചു കൊണ്ടിരുന്ന കനകലോചനാണ്. അയാൾ ഓടിച്ചെന്നു കിഴവനെ വാരിയെടുത്ത് നേരെ നിറുത്തി. ഓടിക്കൂടിയ മറ്റ് ചിലരും സഹായിച്ചു. വീണ ആൾ നേരെ നിൽക്കുന്നുണ്ട് എന്നു മനസ്സിലാക്കിയപ്പോൾ അവരെല്ലാം ഒട്ടും സമയം കളയാതെ അവരവരുടെ വ്യായാമം തുടരാൻ വേണ്ടി വേഗം അവിടെ നിന്നു പോയി. കിഴവനും ആ അന്യ നാട്ടുകാരൻ ഡ്രൈവറും മാത്രമായി അവിടെ . ഏതാനും നിമിഷം അനങ്ങാതെ ഇരുന്നിട്ട് വിറച്ച് വിറച്ച് പോക്കറ്റിൽ നിന്നു കാറിന്റെ കീ എടുത്തു നീട്ടി വീട്ടിൽ പോകാൻ ഹെല്പ് ചെയ്യുമോ എന്നു ദയനീയ സ്വരത്തിൽ പകുതി ആങ്ഗ്യത്തിൽ കിഴവൻ ചോദിച്ചു. ഒരു ഡ്രൈവർ ആയ തനിക്ക് ഇതൊരു കാര്യമാണോ എന്നു അർത്ഥം വരുന്ന ഒരു ചിരി മുഖത്ത് വരുത്തി അയാ ൾ പഞ്ചറായ ഒരു ടയർ പൊക്കി എടുക്കുന്ന ലാഘവത്തോടെ കിഴവനെ എടുത്തു കാറിലെത്തി. കിഴവൻ പറഞ്ഞ പ്രകാരം അയാളുടെ താമസ സ്ഥലത്തു കൊണ്ട് ചെന്നു ആക്കി പെട്ടന്നു പോകാമെന്നാണ് ഉദ്ദേശിച്ചിരുന്നതെങ്കിലും പോകുന്നതിനു മുന്പെ ഒരു മര്യാദയെ കരുതി മറ്റെന്തെങ്കിലും ആവശ്യങ്ങൾ ഉണ്ടോ എന്നു ചോദിച്ചത് ഒരു അബദ്ധമായി. കിട്ടിയ തക്കം നോക്കി കുറെ പണികൾ കിഴവൻ അയാളെ ഏൽപ്പിച്ചു. അതെല്ലാം തീർത്തിട്ട് യാത്ര പറഞ്ഞു പോകാനായി തുടങ്ങുന്നതിനിടെ അയാൾ അകത്തേക്ക് പോയി കയ്യിൽ കുറച്ചു നോട്ടുകളുമായി വന്നു , കനക ലോചനന്റെ നേരെ നീട്ടിയിട്ട് ചോദിച്ചു 'നാളെ ഈ വഴി ഒന്നു വരാമോ'. നോട്ടുകൾ തിരികെ കൊടുക്കുന്നതിനിടയിൽ കനകലോചൻ ഉറക്കെ പറഞ്ഞു, 'വരാം'. എന്നിട്ട് മനസ്സിൽ ആരും കേൾക്കാതെ പറഞ്ഞു, എഡൊ കിഴവാ, താൻ ഒന്നും തന്നില്ലെന്കിലും ഞാൻ വരും.

ലോറി പണിക്കാരല്ലാതെ വേറെ ആരുമായിട്ടും മറ്റൊരു ബന്ധവും ഈ നഗരത്തിൽ ഇല്ലാത്ത ആൾക്ക് കിഴവനോടു പറഞ്ഞു അറിയിക്കാൻ പറ്റാത്ത ഒരു സ്നേഹം തോന്നി. അയാളുടെ ആഡ്യത്വമാണോ, ദൈന്യത ആണോ കാരണം എന്നറിയില്ല. അന്ന് രാത്രിയിൽ ലോറി ക്യാബിനിൽ കിടന്നുറങ്ങുമ്പോഴും കനക ലോചൻ ആലോചിച്ചത് അത് തന്നെ ആണ്.

കിഴവൻ തന്റെ ആരുമല്ല, എന്നിട്ടും എന്തോ ഒരടുപ്പം. മുതലാളിമാരെ വിശ്വസിക്കരുതെന്നാണ് പണ്ട് പഠിച്ചിട്ടുള്ള പാഠമെങ്കിലും നിലത്തു വീണു കിടന്നപ്പോഴത്തെ അയാളുടെ പേടിച്ച് അരണ്ട മുഖം കനകലോചനെ അലട്ടി. താൻ ഓടി ചെന്നു എഴുന്നേൽപ്പിക്കുമ്പോൾ അയാളുടെ മുഖത്ത് കണ്ട ആശ്വാസവും മനസ്സിൽ നിന്നു മായുന്നില്ല. അതിനാൽ ഒരിക്കൽ കൂടി കിഴവന്റെ വീട്ടിൽ പോകാൻ തീരുമാനിച്ചു.

പിറ്റേന്ന് അവിടെ എത്തിയപ്പോൾ ആഗതനെ പ്രതീക്ഷിച്ചിരുന്നത് പോലെ കിഴവൻ സ്വീകരണ മുറിയിൽ തന്നെ ഉണ്ടായിരുന്നു. തലെ ദിവസത്തെ ക്ഷീണം മാറിയിട്ടുണ്ട്. പുഞ്ചിരിച്ചു കൊണ്ട് അയാൾ പറഞ്ഞു.

'ഞാൻ ഇന്നലെ പേര് ചോദിക്കാൻ മറന്നു'

'കനക ലോചൻ'

ഇത് പറഞ്ഞപ്പോഴും പിന്നീട് ഒരേ ഒരു സഹോദരിയുടെ പേര് സുവർണിനീ ദേവി എന്നു പറഞ്ഞപ്പോഴു അയാൾ പറഞ്ഞു.'നല്ല പേരുകൾ. രണ്ടും ആദ്യമായി കേൾക്കുന്നവ '.

സന്തോഷം. ഒരു സോഹരായി കലാകാരൻ ആയിരുന്ന തന്റെ അച്ഛൻ മക്കൾക്ക് കൊടുത്ത സ്വത്ത് ഈ നല്ല രണ്ടു പേരുകൾ മാത്രമാണെന്ന് അയാൾ ഓർത്തു.. സൊഹരായി കലാകാരൻമാർ വരക്കാൻ മാത്രമേ പഠിച്ചുള്ളൂ. അനാദി കാലത്തുനിന്നും പൈതൃകമായി ലഭിച്ച കലാ സിദ്ധി തലമുറ തോറും കൈ മാറുന്നതിനിടെ എങ്ങനെ ജീവിക്കുമെന്ന് ആരും ആലോചിച്ചില്ല, പഠിപ്പിച്ചുമില്ല. കരിയും വിവിധ വർണങ്ങളിലുള്ള മണ്ണും മരക്കറയും പച്ചില ചാറും ചാലിച്ച് കുടിലുകളുടെ മൺ ചുമരുകളിലും കരുംപാറകളിലും പ്രകൃതിയുടെയും മൃഗങ്ങളുടെയും ചിത്രങ്ങൾ അവരവരുടെ ആയുസ്സ് ഒടുങ്ങുന്നത് വരെ ഓരോ സൊഹരായി കലാകാരനും വരച്ചു തീർത്തു . സൊഹരായി ഗ്രാമവും അവിടുത്തെ കലയും ലോകം മുഴുവൻ പ്രശസ്തമായി. ഇടക്കിടെ ഗ്രാമത്തിലേക്ക് സൊഹരായി സംസ്കാരവും കലയും പഠിക്കാൻ നഗര വാസികളും വിദേശികളും വന്നപ്പോൾ മാത്രം അവരെ കൊണ്ട് വന്ന ഇടനിലക്കാർ എന്തെങ്കിലും തന്നാലായി. പലപ്പോഴും അത് രണ്ടോ മൂന്നോ സാരിയി ൽ ഒതുങ്ങി. ഇത് കൊണ്ട് വയർ നിറയില്ലെന്ന് കണ്ടപ്പോളാണ് താൻ കുലതൊഴിൽ വിട്ടു തെരുവിലേക്ക് വണ്ടിയുമായി ഇറങ്ങേണ്ടി വന്നതെന്ന് പറഞ്ഞപ്പോൾ കിഴവൻ എഴുന്നേറ്റ് വന്നു അയാളുടെ തോളത്തു തട്ടി ഇതൊക്കെ ഓരോ നിയോഗം എന്നു പറഞ്ഞു.

അയാൾ ഒന്നു രണ്ടു കാര്യങ്ങൾ അവിടെ നിന്നും മനസ്സിലാക്കി, കിഴവന്റെ പേരും തന്റേത് പോലെ വിചിത്രമായതു തന്നെ. അലക്സാണ്ടർ കോൺസ്റ്റൻറ്റൈൻ പാദുവ. പകുതി സായിപ്പ്. പെൻഷൻ ആയിട്ട് കാൽ നൂറ്റാണ്ട് ആകുന്നു. സഹായി ആയി വയസ്സായ ഒരു സ്ത്രീ മാത്രം. പാദം തൊട്ട് കഴുത്ത് വരെ നീളുന്ന ഒറ്റ കുപ്പായത്തി ൽ മാത്രം ഒതുങ്ങുന്ന ഒരു വിദേശ ബന്ധം അവർക്കുമുണ്ടു. എല്ലാ നാട്ടിലെയും അദ്ധ്വാനിക്കുന്ന സ്ത്രീകളെപ്പോലെ അവരുടെ മുഖത്തും കരുവാളിപ്പ് കൂട് കെട്ടി പാർതിരിക്കുന്നു .

കുറച്ചു ദിവസത്തേക്കു കനകലോചൻ പാദുവ അപ്പൂപ്പന്റെ സാരഥിയും സഹായിയുമായി. ഒരു ദിവസം ലോറി ഓടിച്ചാൽ കിട്ടുന്ന കൂലി ഓരോ ദിവസവും കിഴവൻ അയാൾക്ക് കൊടുത്തു. പുതിയ സ്ഥലത്തെ പണി ഒഴിഞ്ഞിട്ട് പുറത്തിറങ്ങാൻ പറ്റാത്തത് കൊണ്ട് അയാൾക്കു തൽക്കാലം നാട്ടിലേക്കുള്ള യാത്ര മാറ്റി വയ്ക്കേണ്ടി വന്നു. സാരഥി എത്താത്തതുകൊണ്ടു കനകലോചന്റെ വണ്ടി നടപ്പാതയുടെ ഓരത്ത് തന്നെ വിശ്രമിച്ചു. കിഴവൻ ഇത് വരെ മരിക്കാതെ ദൈവം കാത്തത് കനകലോചൻ വരാൻ വേണ്ടിയായിരുന്നിരിക്കണം. നേരത്തെ പറഞ്ഞ നിയോഗം.

ഇത്രയും അപരിചിതനായ ഒരു അന്യ നാട്ടുകാരനെ അതും ലോകം മുഴുവൻ വണ്ടിഓടിച്ചു നടന്ന ഒരു ഡ്രൈവറെ സ്വന്തക്കാരനാക്കാൻ ഒരു മനുഷ്യരെയും അടുപ്പിക്കാത്ത

തനിക്ക് എങ്ങനെ പറ്റിയെന്ന് പലരും ചോദിച്ചു. 'കാലവും പ്രായവും പഠിപ്പിച്ച പാഠം' എന്നായിരുന്നു അവർക്കെല്ലാം അയാൾ കൊടുത്ത ഉത്തരം. കിഴവന്റെ കണക്ക് കൂട്ടൽ ഒട്ടും തെറ്റിയില്ല. ഇക്കാലത്തിനിടക്ക് ലോകമെങ്ങുമുള്ള അനേകം ആൾക്കാരെ കണ്ട അയാൾക്ക് തെറ്റാൻപാടില്ല. കനക ലോചൻ അയാളുടെ വിശ്വസ്തനായി തുടർന്നു.

അതിനിടെ അലക്സാണ്ടർ പാദുവ തൻറെ പുതിയ സേവകന്റെ പേരിന്റെ വാൽ മുറിച്ച് നീക്കി 'കനകൻ' എന്നു മാറ്റിയിരുന്നു. ആദ്യത്തെ വീഴ്ചയുടെ അസ്കിതകൾ എല്ലാം മാറിയപ്പോൾ അയാൾ വീണ്ടും കായൽക്കരയിൽ വ്യായാമത്തിന് പോയി തുടങ്ങി. പണ്ടത്തെതിൽ നിന്നും ഒരു വ്യത്യാസം മാത്രം. ഇപ്പോൾ സെക്യൂരിറ്റിയും സഹചാരിയുമൊക്കെയായ കനകലോചൻ കൂടെയുണ്ട്. അതിനാൽ കൂടുതൽ ശക്തിയിലും കൂടുതൽ ആവൃത്തിയിലും അയാൾ ഭും ഭും വായു തള്ളൽ പുനരാരംഭിച്ചു. കിഴവനുമായി അവിടെ ചെല്ലുംബോഴൊക്കെ ആജാനുബാഹുവായ ഒരു ആൾ തന്നെ സൂക്ഷ്മമായി നിരീക്ഷിക്കുന്നത് കനകൻ കണ്ടു. അയാളും കിഴവനെപ്പോലെ ഒരു സ്റ്റൈലൻ. പുരികത്തിൽ നിന്നും ചെവിയിൽ നിന്നും പുറത്തേക്ക് വിരിഞ്ഞു നിൽക്കുന്ന രോമങ്ങളും ചെറിയ കണ്ണുകളും അയാളെ ആൾക്കൂട്ടത്തിൽ എടുത്തു കാണിക്കും. അതിൽ ഒരു കണ്ണു പലപ്പോഴും പാതി അടഞ്ഞാണിരിക്കുന്നത്. കൂടുതൽ ശ്രദ്ധ വേണ്ട കാഴ്ചകൾ അയാൾ ആ കണ്ണിലൂടെയാണ് കാണുന്നത് എന്നു തോന്നും. അയാൾക്കു കൂടെ നടക്കാൻ ഭാര്യ എപ്പോഴും ഉണ്ട്. അവർ ഒരു ഉത്തമ കുടുംബിനിയെ പോലെ അയാളുടെ തൊട്ട് പിറകെ അയാളുടെ കാൽപാടുകളിൽ ചവിട്ടി നടന്നു. സിഗരറ്റ് പുകച്ചു നിൽക്കുന്ന കനകന്റെ അടുക്കൽ എത്തുമ്പോഴോക്കെ അയാൾ അവനെ നേരെ രൂക്ഷമായി നോക്കി. എന്തിനാണ് തന്നെ ഇങ്ങനെ സൂക്ഷിച്ചു നോക്കുന്നത് എന്നതിന്റെ കാരണം കുറച്ചു കഴിഞ്ഞാണ് കനകന് മനസ്സിലായത്. അയാളാണ് നമ്മുടെ പാദുവ അപ്പൂപ്പന്റെ ബാങ്ക് മാനേജർ . കിഴവന്റെ പെൻഷൻ മുഴുവൻ അയാളുടെ ബാങ്കിലായിരുന്നു. അതെല്ലാം അടിച്ചു മാറ്റാൻ കൂടെ കൂടിയിട്ടുള്ള പുതിയ ആളെ സൂത്രത്തിൽ നിരീക്ഷിക്കുകയായിരുന്നു അയാൾ.

ഒരിക്കൽ വീട്ടിൽ വച്ച് ഒരു സുന്ദരൻറെയും സുന്ദരിയുടെയും പഴയ ഒരു ഫോട്ടോ അപ്പൂപ്പൻ തന്റെ പുതിയ സുഹൃത്തിന് കാണുവാൻ കൊടുത്തിട്ടു പറഞ്ഞു. 'ദിസ് ഇസ് മിസ്റ്റർ. ആൻഡ് മിസ്സിസ്സ് പാദുവ ഓൺ ദെയർ മാര്യേജ്. ഒരു പുഞ്ചിരിയോടെ ആ ഫോടോയിലെ സുന്ദരിയെ കണ്ടു കൊണ്ടിരിക്കുമ്പോൾ പാദുവ വിളിച്ചു. "കനകൻ , കം."
'നിനക്കു ചെസ്സ് കളിയ്ക്കാൻ അറിയുമോ' അയാ ൾ ആരാഞ്ഞു.
കനകൻ ചിരിച്ചു. ട്രക്ക് ഓടിച്ചു ഇന്ത്യ മുഴുവൻ കറങ്ങുന്നതിനിടയിൽ അനേക ശതം തവണ വിശാലമായ ഈ രാജ്യത്തെ അറിയപ്പെടാത്ത എത്രയോ എതിരാളികളുമായി പോരാടിയിരിക്കുന്നു. സ്വീകരണ മുറിയിലെ കോണിൽ ഇട്ടിരുന്ന കൊത്തു പണികൾ ചെയ്ത മനോഹരമാക്കിയ ടീ പ്പോയിൽ ആനക്കോമ്പിൽ തീർത്ത കരുക്കൾ നിരത്തി അവർ കളിയ്ക്കാൻ തുടങ്ങി. വെളുത്ത രാജാവിന്റെ മുൻപിലെ കാലാളിനെ രണ്ടു കളം നീക്കി കളി ആരംഭിച്ചു കൊണ്ട് കിഴവൻ പറഞ്ഞു,' ഞാൻ എപ്പോഴും ഇങ്ങനെയാണ് കളി ആരംഭിക്കുന്നത്. കാരണം, ആദ്യം രാജാവിന് നീങ്ങാൻ ഇടമുണ്ടാകണം. പിന്നെ, മറ്റുള്ളവർക്കു. കറുത്ത രാജാവിന്റെ മുമ്പിൽ രക്ഷക്ക് നിന്നിരുന്ന കാലാളിനെ രണ്ടു കളം നീക്കി അയാളെ കനകലോചൻ പ്രധിരോധിച്ചു. കരു എടുത്തു കളത്തിൽ വച്ച് തിരുകി തിരുകി ഉറപ്പിക്കുന്നത് പോലെ ആണ് കിളവൻ കളിക്കുന്നത്. പടയാളികളെ അടർ കളത്തിൽ തനിയെ വിട്ടു പോരാൻ മടിക്കുന്ന സേനാനായകനെപ്പോലെ. അതേ സമയം കരുക്കളെ യുദ്ധത്തിന്നു വേണ്ടി കളത്തിലേക്ക് എറിഞ്ഞിട്ട് എതിരാളിയുടെ നീക്കങ്ങൾ നിസ്സംഗനായി സൂക്ഷ്മതയോടെ വീക്ഷിക്കുന്ന നായകന്റെ രീതിയാണ് കനകലോചന്റേത്. കളി റൂയി ലോപസ് എന്ന തന്ത്രത്തിലൂടെ പുരോഗമിച്ചു കൊണ്ടിരുന്നപ്പോൾ, പാദുവ സായിപ്പ് ഒരു കാര്യം മനസ്സിലാക്കി, തിയറി

പഠിച്ചിട്ടില്ലെങ്കിലും തന്റെ പുതിയ സേവകനു ഈ കളി നന്നായി വഴങ്ങും.
കളിക്കുന്നതിനിടെ അയാൾ തുടർന്നു; 'ജീവിതത്തിലും ഞാൻ അങ്ങനെ തന്നെയാണ്. ഇവിടത്തെ രാജാവു ഞാൻ ആയിരുന്നു. രാജാവിനെ അംഗീകരിക്കാൻ പറ്റാത്തത് കൊണ്ട് എൻറെ റാണി എന്നെ വിട്ടു പോയി."
കനകൻ മൂളി കേട്ടു.
കളി പിന്നീടുള്ള മിക്ക ദിവസങ്ങളിലും തുടർന്നു. ജയിച്ചത് മിക്കപ്പോഴും സേവകൻ ആയിരുന്നെങ്കിലും മുതലാളിക്ക് പരിഭവമുണ്ടായില്ല. എന്നും ഒരു ഗെയിം കളിക്കുക എന്നതാണു അയാളെ സംബന്ധിച്ചു പ്രധാനം. ഈ കളിക്കളം ജീവിത ചര്യയുടെ ഭാഗമായി തീർന്നിട്ട് വർഷങ്ങളായി. കളിയ്ക്കാൻ എതിരാളിയെ ലഭിക്കാത്തപ്പോൾ കളത്തിൽ കരുക്കൾ നിരത്തി വച്ച് വെറുതെ പഴയ കാര്യങ്ങൾ ആലോചിച്ചു കൊണ്ടിരിക്കും. കൂട്ടിന് ഒരു പെഗ് വിസ്കിയും . ഒരേ ഒരു പേഗ് മാത്രം. അതു തന്റെ പഴയ ബോസ്സുമാരായ ഇങ്ഗ്ലീഷുകാരിൽ നിന്നു കിട്ടിയ ഒരു ശീലമാണ്. ഒരിക്കൽ അയാൾ പറഞ്ഞു,' അറുപത് വർഷമായി ഞാൻ ഈ ഒരു പെഗ് ദിവസേന കഴിക്കുന്നു. ഒരു കണക്കിൽ ഇപ്പോൾ ജീവിക്കുന്നതു തന്നെ വൈകുന്നേരത്തെ ഈ ഒരു പെഗിനുവേണ്ടി മാത്രമാണു. എൻറെ വ്യായാമങ്ങളും ഈ പെഗിന് വേണ്ടി ശരീരത്തെ ഒരുക്കാനാണ്'. അനുസാരികയായി അയാൾ ഉപയോഗിക്കുന്നത് ഒരു കഷണം ചീസും ആപ്പിളും മാത്രം . അത് ആദ്യം കണ്ടപ്പോൾ കനകൻ ചിരിച്ചു. കിഴവന്റെ മദ്യപാനം കാണുംബോഴൊക്കെ കനകൻ തന്നെകുറിച്ചും തന്റെ സഹ ഡ്രൈവർമാരെ കുറിചും ആലോചിച്ചു വീണ്ടും വീണ്ടും ചിരിച്ചു. കാരണം അവരുടെയിടയിൽ പെഗ് എന്ന അളവില്ല. കുപ്പികണക്ക് മാത്രം .

ഒരു ദിവസം, അന്നത്തെ ചെസ്സുകളി പകുതിയായപ്പോൾ ജയവും തോൽവിയും ആരുടെ പക്ഷത്താണെന്ന് നിർണയമാവുന്നതിന് മുൻപ് കിഴവൻ ചോദിച്ചു, 'കനകൻ എനിക്കിനി ആരുമില്ല. എൻറെ സ്വത്ത് മുഴുവൻ ഞാൻ നിനക്കു തന്നാൽ നീ എന്തു ചെയ്യും' ? മുന്നോട്ട് നീക്കാൻ എടുത്ത കാലാളിനെ കയ്യിൽ തന്നെ വചുകൊണ്ടു പാദുവ അപ്പൂപ്പൻ എന്താണ് പറഞ്ഞതെന്ന് മനസ്സിലാക്കാൻ അയാൾ ഇത്തിരി സമയമെടുത്ത് ആലോചിച്ചു നോക്കി. ചോദ്യം ഒന്നുകൂടി മനസ്സിൽ പറഞ്ഞു നോക്കിയെങ്കിലും മറുപടി ഒന്നും പറയാൻ അയാൾക്ക് പറ്റിയില്ല. തന്നെ തീർത്തും ബാധിക്കാത്ത ഒരു തമാശ എന്ന ഒരു തീരുമാനത്തിലെത്തി ഒന്നു കൂടി ചിരിച്ചിട്ട് അവ ൻ കളി തുടർന്നു. ആ ഗെയിം തീർന്നപ്പോൾ കിഴവ ൻ ചോദ്യം ഒന്നു കൂടി ആവർത്തിച്ചു. ഉത്തരം കിട്ടുന്നതിന് മുൻപെ കനകന്റെ തോളിൽ കൈ വച്ച് അയാൾ ഒരു കാര്യം കൂടി പറഞ്ഞു. 'ഞാൻ മരിക്കും വരെ നീ എൻറെ അടുക്കൽ ഉണ്ടാകണം'. അവന്റെ കണ്ണു നിറഞ്ഞു . തനാരാണ് എന്ന പഴയ ചോദ്യം അയാളുടെ ഉള്ളിൽ വീണ്ടും ഉറവ പൊട്ടി . വെറും ഒരു ഡ്രൈവർ അതുമല്ലെങ്കിൽ വെറുമൊരു യാത്രക്കാരൻ. വെറുതെ അങ്ങോട്ടും ഇങ്ങോട്ടും ഓടുന്നവൻ.

കരുത്തൻ ആണെങ്കിലും സന്തോഷം വരുമ്പോളും സങ്കടം വരുമ്പോളും കനകന് കുറച്ചു നേരത്തേക്ക് ഒന്നും മിണ്ടാൻ പറ്റാറില്ല. തൊണ്ടയിൽ അക്ഷരങ്ങൾ കുടുങ്ങിയതുകൊണ്ടു അവൻ വേഗം എഴുന്നേറ്റ് മുറിയുടെ അതിരിലേക്ക് പോയി. മുറിയുടെ മുഴുവൻ വീതിയിൽ വിരിച്ചിട്ടിരുന്ന കർടൻ ഒരരികിലേക്ക് നീക്കി, പുറത്തേക്ക് നോക്കി. കായലിന് മുകളിലെ ഓവർ ബ്രിഡ്ജിൽക്കൂടി വാഹനങ്ങളുടെ പ്രളയം. ഏതൊക്കെ വണ്ടിയാണെന്ന് അവ എന്നു തിരിച്ചറിയാൻ തന്നെ പ്രയാസം. ഗദ്ഗദം മാറിയപ്പോൾ അവൻ വീണ്ടും അയാളുടെ മുന്പിൽ പോയി ഇരുന്നു. പക്ഷേ കിഴവന്റെ മുഖത്ത് യാതൊരു ഭാവവുമില്ല.
പിറ്റേന്നു കളിക്കിടെ ചോദ്യം പാദുവ അപ്പൂപ്പൻ ആവർത്തിച്ചു. ഇത്തവണ സേവകന്റെ കണ്ണു നിറഞ്ഞില്ല പകരം അവൻ ചെസ്സ് ബോർഡിൻറെ മറു തലക്കൽ ഇരിക്കുന്ന തന്റെ എതിരാളിയെ

നിർവികാരമായി നോക്കി . യാതൊരു അർത്ഥവും കല്പിക്കാനാവാത്ത ഒരു വരണ്ട നോട്ടം.
അന്ന് കനക ലോചന് കളിക്കളത്തിൽ നീക്കങ്ങൾ തെറ്റി. 'മെയിറ്റ് ' എന്ന കിഴവന്റെ ശബ്ദം കളിക്കിടെ ഉയർന്നപ്പോൾ അവന് അത് ബോദ്യപ്പെട്ടു, തന്റെ രാജാവിന് നീങ്ങാൻ സ്ഥലമില്ലാതായിരിക്കുന്നു.
'അടിയറവ്' അവൻ തോൽവി സമ്മതിച്ചു.
പതിവില്ലാതെയുള്ള ഒരു ഭാവം കിഴവൻറെ മുഖത്തു സേവകൻ ശ്രദ്ധിച്ചു. ആ മുഖത്തു ജേതാവിന്റെ രാജ ഭാവമില്ല. ജൗത്തിന്റെ നിർജീവ നിഴൽ മാത്രം. കനകന് ഒന്നും മനസ്സിലായില്ല. അന്ന് രാത്രി കനകൻ ആലോചിച്ചത് മുഴുവൻ എന്തുകൊണ്ട് തന്റെ നീക്കങ്ങൾ പിഴച്ചു എന്നായിരുന്നു. താൻ തോറ്റു കൊടുത്തതല്ല. അപ്പൂപ്പനോടുള്ള തോൽവിയും സുഖമാണെന്ന് മനസ്സിലാക്കി ഇനി മുതൽ കിഴവന് തോറ്റ് കൊടുത്തേക്കാം എന്ന ഒരു തീരുമാനത്തിലെത്തി അവൻ അന്ന് ഉറങ്ങി. ആ തീരുമാനം അവനെ സ്വയം അദ്ഭുതപ്പെടുത്തുകയും ചെയ്തു. ഇന്നേ വരെ ആർക്കും ഒരിടത്തും തോറ്റ് കൊടുക്കാത്ത ആൾ ഒരാളുടെ മുൻപില മാത്രം തോൽക്കാൻ പോകുന്നു.
രാവിലെ കനകലോചനെ കാത്തു ഞെട്ടിപ്പിക്കുന്ന ഒരു വാർത്ത ഉണ്ടായിരുന്നു. പാദുവാ അപ്പൂപ്പൻ എല്ലാ കളികളും അവസാനിപ്പിച്ചിരിക്കുന്നു. തലേന്ന് അപ്പൂപ്പന്റെ മുഖത്ത് കണ്ട ജൗത്തിന്റെ നിറം തനിക്ക് വേണ്ടി മാത്രം തന്ന ഒരു സൂചന ആയിരുന്നുവെന്ന് അപ്പോൾ അവന് മനസ്സിലായി. രാജാവും റാണിയും അടർക്കളവും ഇല്ലാത്തിടത്തേക്ക് സ്ഥിരമായി അടിയറവ് ഏറ്റുവാങ്ങി അയാൾ പോയി. കുറച്ചു നാളത്തെക്കെങ്കിലും ജീവിതത്തിൽ സുഖം എന്താണെന്ന് തന്നെ പഠിപ്പിച്ച ആളെ ഓർത്ത് തേങ്ങി കഴിയുന്നതിനിടെ കനകനെ തേടി തീരെ പ്രതീക്ഷിക്കാത്ത ഒരാൾ വന്നു. അപ്പൂപ്പന്റെ ബാങ്കർ . പാതി അടഞ്ഞ ചെറിയ കണ്ണുകളിൽ കൂടി കനകലോചനെ ഒന്നു രൂക്ഷമായി നോക്കിയിട്ട് അയാൾ പറഞ്ഞു. 'ഒന്നു ബാങ്കിൽ വരണം. ' പിറ്റെന്നു ബാങ്കിൽ അയാളെ കാത്തിരുന്നത് എന്താണെന്ന് വ്യക്തമായപ്പോൾ അയാൾ വീണ്ടും ഞെട്ടി. ഞെട്ടലിനൊപ്പം ഗദ്ഗദവും അവനെ പിടികൂടി. കനകലോചനന് ആയുഷ്കാലത്തേക്ക് കഴിയാനുള്ള വക കിഴവൻ എഴുതി വച്ചിരിക്കുന്നു. ബാക്കി ഉള്ളത് അയാളെ ദീർഘ നാൾ നോക്കിയ വാല്യക്കാരത്തി കർമലിക്കും .

ഒരു ദിവസം കൊണ്ട് ധനികനായ കനകൻ തൊട്ടടുത്ത ദിവസം തന്നെ തന്റെ ജീവിതത്തിൻറെ ഗതി തിരുത്തിയ പഴയ നടപ്പാതയിൽ എത്തി. അവിടെ പന്തലിച്ച് കിടന്ന കണ്ടൽ മരങ്ങളിൽ പടർന്ന് കയറിയ പേരറിയാത്ത വള്ളികളിൽ നിറയെ പല നിറത്തിലുള്ള പൂവുകൾ അന്ന് ആദ്യമായി അവന്റെ ശ്രദ്ധയിൽപ്പെട്ടു . കുറെ ദിവസം കൂടി അയാൾ രാവിലെ അവിടെ വന്നു. പതിവ് പോലെ സിഗരറ്റ് വലി അവിടെ നിന്നു ആസ്വദിച്ചെങ്കിലും ബാങ്ക് മാനേജർ അല്ലാതെ വേറെ ആരും അയാളുടെ അവിടത്തെ സാന്നിധ്യം അറിഞ്ഞില്ല. അല്ലെങ്കിൽ അറിഞ്ഞതായി ഭാവിച്ചില്ല. എല്ലാവരും അവരവരുടെ പതിവ് ക്രിയകളിൽ തന്നെ വ്യാപൃതരായി. കനകനിലെ പഥികൻ അപ്പോഴേക്കും ഉണർന്നിരുന്നു. ഓരോ നിമിഷം കഴിയുന്തോറും യാത്ര തുടരാൻ അയാൾ വെമ്പി. യാത്രക്ക് തടസ്സം അപ്രതീക്ഷിതമായി വന്നു ചേർന്ന സംപത്ത് മാത്രം . അതെന്താണ് ചെയ്യേണ്ടതെന്ന് അവനറിയില്ല. സമ്പത്തു കൈ കാര്യം ചെയ്ത് ഒരു ശീലവും ഇല്ല. അതിനെ കുറിച്ച് ആലോചിച്ചു കനകലൊചൻ ഒരുപാടു സിഗരറ്റ് വലിച്ചു തള്ളി. അവസാനം ഒരു വഴി അവന്റെ മനസ്സിൽ തെളിഞ്ഞു. അപ്പൂപ്പന്റെ പഴയ വീട്ടു സഹായി കർമലിക്കു ഇതെല്ലാം കൈമാറുക. ഈ തീരുമാനം അറിയിച്ചപ്പോൾ ബാങ്കിലെ മാനേജർ പറഞ്ഞു, 'ഇതാണ് ഒരു സാധാരണക്കാരന്റെ കുഴപ്പം. കുറച്ചുപണം കയ്യിൽ വന്നാൽ അതെങ്ങനെ എങ്കിലും തീർത്താലെ അവന് സമാധാനമാകുകയുള്ളൂ. പിന്നെ എങ്ങനെ നിങ്ങളെപ്പോലെയുള്ളവർ നന്നാകും. '
വെറുതെ കിട്ടിയ സ്വത്തെല്ലാം വെറുതെ കൊടുത്തിട്ട് വീണ്ടും വളയത്തിനു പിന്നിൽ ഇരുന്നപ്പോൾ കനകലോചന്റെ മനസ്സ് ശാന്തമായി .

യാത്ര പുനരാരംഭിച്ച അയാൾ ഒരിക്കൽ കൂടി വിന്ധ്യനെ കടന്നു മാഗധത്തിലെ രാജപാതകളിൽ കൂടി സഞ്ചരിച്ചു. കൽക്കരി പാടങ്ങളിൽ നിന്നും കള്ള ഖനനം ചെയ്തു നിറച്ച ചാക്കുകളുമായി പോകുന്ന അനേകം സൈക്കിളുകാരെയും തലങ്ങും വിലങ്ങും കൂട്ടം കൂടി നിന്ന കാലികളെയും കടന്നു അയാൾ തന്റെ യാത്ര തുടങ്ങിയെടത്ത് തന്നെ എത്തി. പാടലീപുത്രത്തിൻറെ സീമയിലെ ആയിരം പൂന്തോട്ടങ്ങളുടെ നാടായ ഹസാരിബാഗിലെ ക്രുത്രിമ തടാകത്തിലൊന്നിന്റെ കരയിൽ അവൻ വാഹനം ഒതുക്കി നിറുത്തി പുറത്തിറങ്ങി, ഒരു സിഗരട്ടിനു തീ കൊളുത്തി . തടാകത്തിന്റെ അരികിൽ നിന്നു കൊണ്ട് അവിടെയും ഓടി ചാടി വ്യായമം ചെയ്യുന്നവരെ കണ്ടപ്പോൾ അയാൾ ചിന്തിച്ചു,, മനുഷ്യർ എല്ലായിടത്തും ഒന്നു തന്നെ. എല്ലാവരും ഓടുന്നു, ചാടുന്നു. ആകെ വ്യത്യാസം ഒരിടത്ത് കായൽ ആണെങ്കിൽ മറ്റൊരിടത്ത് തടാകം എന്നത് മാത്രം.

വിചിത്രമായ ഒരു കാഴ്ച അവിടെ അവന് വേണ്ടി പ്രകൃതി കാത്തു വച്ചിരുന്നു. ഒരു പശുവിന്റെ അകിടിൽ തള്ളയെക്കാളും വളർന്ന അതിൻറെ കിടാവ് പാലിന് വേണ്ടി ശ്രമിക്കുന്നു. വാലാട്ടുന്ന കിടാവിന്റെ വായിൽ ആകാശ വെണ്മ നുരഞ്ഞു പതഞ്ഞപ്പോൾ കനക ലോചനന് പാരമ്പര്യ കല അന്യം നിന്നു പോകാതിരിക്കാൻ പട്ടിണി കിടന്നു മരിക്കേണ്ടി വന്ന തന്റെ അമ്മയെ ഓർമ വന്നു. കിടാവ് കുടി നിറുത്തി പോയിട്ടും തള്ള പശുവിന്റെ മുലകൾ ചുരന്നു തന്നെ നിന്നു. പശുവിന്റെ കാഴ്ച അവിടെ ഉപേക്ഷിച്ചിട്ട് അയാൾ അധികം ദൂരെ അല്ലാത്ത തന്റെ കുടിലിനെ ലക്ഷ്യമായി വീണ്ടും യാത്ര തുടങ്ങി. സാല വൃക്ഷങ്ങൾ അതിരിട്ട പാതയിലൂടെ ഭാരതവർഷം നെടുനീളം ഓടിയെത്തിയ അയാളുടെ വണ്ടി അവസാന ലാപ്പു ഓടി. തവിട്ടു കായകൾ നിറയെ തൂങ്ങുന്ന കരഞ്ചിയത്തിന്റെയും കുണുങ്ങി ആടുന്ന വെള്ളപ്പൂക്കൾ നിറഞ്ഞ ചമേലി മരത്തിന്റെയും നടുവിലെ ചെളി നിറമുള്ള കുടിലിന്റെ വാതിൽക്കൽ എത്തി അത് കിതച്ചു കിതച്ചു നിശ്ചലമായി. സൊഹരായി കലാകാരൻമാർ കുടിലിന്റെ മൺ ഭിത്തിയി ൽ കോറിയിട്ട കാട്ടുമൃഗങ്ങളുടെ വിവിധ രൂപത്തിലും ഭാവത്തിലും ഉള്ള ചിത്രങ്ങളെ നിറമനസ്സോടെ നോക്കിക്കൊണ്ട് കനകലോചൻ വണ്ടിയിൽ നിന്നും പുറത്തിറങ്ങി മൂരി നിവർന്നു. കുടിലിന്റെ ഒരുവശത്തുള്ള മലയുടെ മുകളിലെ കൃഷ്ണ മന്ദിരത്തെയും മറുവശത്തെ കൃഷ്ണ സഹോദരി സുഭദ്രയുടെ മന്ദിരത്തെയും നോക്കി വണങ്ങി കുടിലിന്റെ തറയും തൊട്ട് വന്ദിച്ചു അകത്തു കയറാൻ ഒരുങ്ങുംബോഴേക്കും കുഞ്ഞനിയത്തി സുവർനിനീ ദേവി പുറത്തേക്കിറങ്ങി വന്നു. ഓടി വന്ന അവൾ ജ്യേഷ്ഠനെ വാരി വാരി പുണർന്നു .

ഈ ആലിംഗനത്തിന് വേണ്ടിയാണ് അയാൾ വെറുതെ കിട്ടിയ സ്വത്തെല്ലാം ഉപേക്ഷിച്ചു പോന്നതു . ഈ സ്നേഹാലിംഗനത്തിന്റെ മൂല്യം ഉപേക്ഷിച്ച സ്വത്തിന്റെ അനേകം ഇരട്ടി .

‘എന്തൊക്കെ പുതിയ കഥകൾ’? അവൾ ചോദിച്ചു.

‘പറയാം ’

സഹോദരി ചുട്ട് കൊടുത്ത റൊട്ടി പരിപ്പ് കറിയിൽ മുക്കി രുചിച്ചു കൊണ്ട് പാദുവ അപ്പൂപ്പനെ കണ്ടു മുട്ടിയ കഥ പറയാൻ അയാൾ ഒരുങ്ങി.

ജിമ്മി ജോസഫ്,
അസിസ്റ്റൻറ് കമ്മീഷണർ

# ചരക്കു സേവന നികുതിയും
# ചില വിധി നിർണയങ്ങളും

ജിഎസ്ടി രണ്ടരവർഷം പൂർത്തിയാക്കുന്ന വേളയിൽ വിവിധവിധി നിർണയങ്ങൾ പുതിയ പരോക്ഷനികുതി സംബ്രദായത്തിൽ പ്രത്യക്ഷമായ സ്വാധീനം ചെലുത്തുകയുണ്ടായി. ഇതിൽ ബഹുമാനപ്പെട്ട വിവിധ ഹൈകോടതികളുടെ ഉത്തരവുകൾക്കൊപ്പം അഡ്വാൻസ് റൂളിംഗ് അതോറിറ്റികളുടെയും ആന്റി പ്രോഫിറ്ററിങ് അതോറിറ്റികളുടെയും നിർണയങ്ങൽ ഉൾപ്പെടുന്നു. പുതിയ നികുതിയുടെ ഘടന, വകുപ്പുകളിലെ അവ്യക്തത, പ്രയോഗം, ഒഴിവു കിഴിവുകൾ, വകുപ്പുതല അന്വേഷണങ്ങൾ, ഡിപ്പാർട്മെൻറ് നടപടികൾ എന്നിവമൂലം ഈ ചെറിയ കാലയളവിനുള്ളിൽ ആയിരകണക്കിന് കേസുകൾ വിവിധ കോടതികളിലും മറ്റു അതോറിറ്റികൾ മുമ്പാകെയും നല്കപ്പെട്ടതിൽ ചില പ്രധാന വിധികൾ ഈ അവസരത്തിൽ ഒന്നെത്തി നോക്കുകയാണിവിടെ. ബഹുമാനപ്പെട്ട സുപ്രീം കോടതിയുടെയോ ബഹുമാനപ്പെട്ട ഹൈ കോടതി വിധികളുടെയോ പ്രഥമഗണന പ്രാധാന്യമില്ലെങ്കിലും ഇത്തരം റൂളിംഗുകൾ ആസന്ന ഭാവിയിൽ അനുനയ ക്ഷമതയുള്ള ചൂണ്ടു പലകയായി നിലകൊള്ളുന്നതാണ്.

## ട്രാൻ 2 തിരുത്തലും പുനരവലോകനവും

ജിഎസ്ടി നിലവിൽ വന്ന സമയത്ത് കൈവശമുണ്ടായിരുന്ന അസംസ്കൃത വസ്തുക്കൾ അടക്കമുള്ള ശേഖരത്തിന്മേൽ നൽകിയ നികുതി സംബന്ധിച്ചു തങ്ങൾ ഫയൽ ചെയ്തട്രാൻ 2 സ്റ്റേറ്റ്മെന്റ് തിരുത്തുന്നതിനും പുനരവലോകന സ്റ്റേറ്റ്മെന്റ് ഫയൽ ചെയ്യുന്നതിന് അനുവദിക്കണം എന്നും ആവശ്യപ്പെട്ടുകൊണ്ട് M/s. ഒപ്റ്റിവൽ ഹെൽത്ത ്സൊല്യൂഷൻസ് Pvt Ltd കൊൽക്കത്ത ഹൈ കോടതി മുമ്പാകെ പെറ്റീഷൻ കൊടുക്കുകയുണ്ടായി. ഇതിൽ അനുകൂല വിധി നൽകിയ ബഹുമാനപ്പെട്ട കോടതി ടാക്സ് ഡിപ്പാർട്മെന്റിന് അസ്സസ്മെന്റ് ആവശ്യത്തിലേക്കായി ഒറിജിനൽ ട്രാൻ 2 പിടിച്ചുവെക്കാമെന്നും തിരുത്തലിന്റെയും / പുനരവലോകനത്തിന്റെയും കാരണമായ ശരിയായ വിശദീകരണം ചോദിച്ചു അന്തിമ തീരുമാനമെടുക്കാമെന്നും ഉത്തരവിട്ടു.

## വാഹന പരിശോധനയുംതടഞ്ഞുവെക്കലും

ഒരു ഉല്പന്നത്തിന്റെ ഉത്തമവിശ്വാസപൂർവ്വമായ ക്ലസ്സിഫിക്കേഷൻ തർക്കം (GENUINE CLASSIFICATION DISPUTE) നില നിൽക്കുന്ന സാഹചര്യങ്ങളിൽ വാഹന പരിശോധന നടത്തുന്ന ടാക്സ് ഉദ്യോഗസ്ഥർ പരിശോധിക്കപ്പെട്ട വസ്തുക്കൾ തെറ്റായ ക്ലാസ്സിഫിക്കേഷനിലാണ് സപ്ലൈ ചെയ്തിരിക്കുന്നത് എന്ന കാരണത്താൽ യുക്തിസഹമായ സമയത്തിൽ കൂടുതൽ അവ പിടിച്ചു വെക്കുവാൻ പാടില്ലായെന്നും റീസണബിൾ സമയത്തിനുള്ളിൽ നിയമപരമായി ആവശ്യമായ രേഖകൾ ഉണ്ടാക്കിയ ശേഷം നിയമ പരിപാലനാധികാരമുള്ള അസ്സസ്മെന്റ് ആപ്പീസർക്കു നൽകണമെന്നും അദ്ദേഹത്തിനാണ് അതിൽ തുടർ നടപടികൾ തീരുമാനിക്കുവാനുള്ള അധികാരമെന്നും M/s. ജെയ്യംഗ്ലോബൽഫുഡ്സ് (P)Ltd ഫയൽ ചെയ്ത ഒരു റിട്ട് പെറ്റീഷനിൽ ബഹുമാനപ്പെട്ട മദ്രാസ് ഹൈകോടതി

വിധി പറയുകയുണ്ടായി. നികുതി നിരക്ക് തർക്കം നില നിൽക്കുന്ന ഇത്തരം ഒരു സന്ദർഭം പരിശോധക ആപ്പീസറുടെ ശ്രദ്ധയിൽപെട്ടാൽ ആ വിവരം ജൂറിസ്ഡിക്ഷണൽ അസ്സസ്മെന്റ് ഉദ്യോഗസ്ഥനെ ജാഗരൂകനാക്കി നടപടികൾ എടുപ്പിക്കേണ്ടതാണെന്നും അതിനു മുൻപ് പരാതിക്കാരന് തന്റെ ഭാഗം അവതരിപ്പിക്കുവാനുള്ള അവസരം നൽകേണ്ടതാണെന്നുമുള്ള ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരള ഹൈ കോടതിയുടെ ഉത്തരവും ഇത്തരുണത്തിൽ പ്രതിപാദിക്കുകയുണ്ടായി. [2018 (1) TMI 1503 (N.V.K.MohammedSulthanRawther and Sons and WilsonVs. Union of India)].

## തൊഴിലിടങ്ങളിലെ കാന്റീൻസേവനം

കമ്പനികൾ തൊഴിലിടങ്ങളിൽ കാന്റീൻ സേവനം നൽകി ജീവനക്കാരിൽ നിന്നും ഭക്ഷണത്തിന് പ്രതിഫലം വാങ്ങുന്നത് ജിഎസ്ടി നിയമ പ്രകാരം (സെക്ഷൻ 2 ( 83 ) സി.ജി.സ്.ടി.ആക്ട്, 2017 ) ജിഎസ്ടി ബാധകമായ സേവനമാണെന്ന് കേരള അപ്പലറ്റ് അതോറിറ്റി ഓഫ് അഡ്വാൻസ് റൂളിംഗ് ഒരു സുപ്രധാന വിധിപറയുകയുണ്ടായി. ലാഭ വിഹിതമൊന്നും ജീവനക്കാരിൽ നിന്നും ഈടാക്കുന്ന തുകയിൽ ഉൾപ്പെട്ടിട്ടില്ല എന്നും ഫാക്ടറീസ് ആക്ട് പ്രകാരം നടത്തുന്നതാണെന്നും കാൽടെക് പോളിമേഴ്സ് പ്രൈവറ് ലിമിറ്റഡ് വാദിച്ചുവെങ്കിലും മേല്പറഞ്ഞ ഭക്ഷണ വിതരണം ജിഎസ്ടി നിയമം വിവക്ഷിക്കുന്ന സപ്ലൈ എന്ന പദത്തിന്റെ നിർവചനത്തിനു കീഴിൽ വരുമെന്നതിനാൽ ജിഎസ്ടി വിധേയമായിരിക്കും എന്നാണ് അഡ്വാൻസ് റൂളിംഗ് അപ്പലറ്റ് അതോറിറ്റിറൂളിംഗ് നൽകിയത്.

## ഇൻപുട്ട് ടാക്സ് ക്രെഡിറ്റ് / നികുതി നിരക്ക് തുടങ്ങിയവയിലെ ബനഫിറ്റ് കൈമാറ്റം (input tax credit/ gst rate)

സിജിഎസ്ടിസെക്ഷൻ 171 പ്രകാരം ഒരു സപ്ലയർക്കു നിലവിലെ നികുതി നിരക്കുകൾ കുറയുന്നതു മൂലമോ ഇൻപുട്ട് ടാക്സ് ഉപയോഗിക്കുന്നത് വഴിയോ എന്തെങ്കിലും ടാകസ് ബെനഫിറ്റ് ലഭിക്കുകയാണെങ്കിൽ ആ ബെനഫിറ്റിനു തത്തുല്യമായകുറവ് വിലയിൽ വരുത്തി ഉപഭോക്താവിന് കൈമാറേണ്ടതാണെന്നു നിഷ്കർഷിക്കുന്നു. ഇങ്ങനെ ഇൻപുട്ട് ടാക്സ് ക്രെഡിറ്റ് ഉപയോഗത്തിലൂടെ ലഭിച്ച ലാഭവിഹിതം ഉപഭോക്താക്കളായ ഫ്ലാറ്റ് ഉടമകൾക്ക് കൈമാറാത്ത ഒരു ബിൽഡർക്കു (കൺസ്ട്രക്ഷൻ സർവീസ്) മേൽ ഫ്ലാറ്റുടമകളുടെ പെറ്റീഷനുകളുടെ അടിസ്ഥാനത്തിൽ നാഷണൽ ആന്റിപ്രോഫിറ്ററിങ് അതോറിറ്റി (NAA) പിഴ ചുമത്തിക്കൊണ്ടു വിധിക്കുകയുണ്ടായി.

## ഇറക്കുമതിചെയ്യപ്പെടുന്നവസ്തുവിന് IGST

ഇന്ത്യയിലേക്കു ഇറക്കുമതി ചെയ്യപ്പെടുന്ന വസ്തുവിന് മത്രമാണ് IGST ചുമത്തപ്പെടുന്നത്. അത് ഈടാക്കുന്നതാകട്ടെ ഇന്ത്യയിലേക്കു ഇറക്കുമതിചെയ്യപ്പെടുമ്പോഴും. സിന്തെറ്റ് ഇൻഡസ്ട്രീസ് നൽകിയ പരാതിയിൽ കേരള അഡ്വാൻസ് റൂളിംഗ് അതോറിറ്റി വളരെ ദൂരവ്യാപകമായ ഫലമുളവാക്കുന്ന

വിധിപറയുകയുണ്ടായി. വിദേശത്തുനിന്നും ശേഖരിച്ചവസ്തുവഹകൾ ഇന്ത്യയിലേക്കു കൊണ്ടുവരാതെ ( ഇറക്കുമതിചെയ്യാതെ ) അവിടെനിന്നും നേരിട്ട് മറ്റൊരു വിദേശ രാജ്യത്ത് കൊണ്ടുപോയി ശേഖരിച്ചുവച്ചശേഷം വില്പനനടത്തിയാൽ അത്തരം സപ്ലൈകൾക്കു IGST ബാധകമാവില്ല എന്ന വിധി പറഞ്ഞു. എന്തെന്നാൽ ആവസ്തുക്കൾ ഇന്ത്യയിലേക്ക് ഒരുസമയത്തു പോലും ഇറക്കുമതി ചെയ്യപെടുകയുണ്ടായിട്ടില്ല.

## കൃഷി കല്യാൺ സെസ്സ് ഇൻപുട്ട് ടാക്സ് ക്രെഡിറ്റ്

കൃഷി കല്യാൺ സെസ്സ് ആയി നൽകിയതുക ജിഎസ്ടിയിൽ ഇൻപുട്ട് ടാക്സ് ക്രെഡിറ്റ് എടുക്കുവാൻ ഉപയോഗിക്കുവാൻ കഴിയുകയില്ല. സർവീസ് ടാക്സ് റിട്ടേൺ പ്രകാരം കുമിഞ്ഞു കൂടിയ കൃഷി കല്യാൺ സെസ്സ് CGST നിയമപ്രകാരം ഇലക്ട്രോണിക്രെഡിറ് ലെഡ്ജറിലേക്കു മാറ്റിയതുക ഇൻപുട്ട് ടാക്സ് ക്രെഡിറ്റ് ആയി ഉപയോഗിക്കുവാൻ കഴിയുമോ എന്ന അപേക്ഷയിലാണ് AAR ഇങ്ങനെ വ്യക്തമാക്കിയത്. ഡ്യൂട്ടിയും സെസും വ്യത്യസ്തമായ ലെവികളാണെന്നും അവയെ ഒന്നായി കാണുവാൻ കഴിയില്ലെന്നും കൃഷി കല്യാൺ സെസ്സിന്റെ ക്രെഡിറ്റ് KKC -ക്കുമാത്രമാണുപയോഗിക്കുവാൻ കഴിയുകയെന്നും മഹാരാഷ്ട്ര AAAR പിന്നീടൊരു റൂളിങ്ങിലും വിധിക്കുകയുണ്ടായി.

## കോർപറേറ്റ് ഓഫീസും യൂണിറ്റുകളും വ്യത്യസ്ത വ്യക്തികളാണ്

കോർപറേറ്റ് ഓഫീസിലെ എംപ്ലോയീസ് തങ്ങളുടെ മറ്റു യൂണിറ്റുകൾക്ക് നൽകുന്ന സേവനങ്ങൾക്കു GST ബാധകമായിരിക്കുമെന്നു AAR കൊളംബിയ ഏഷ്യ ഹോസ്പിറ്റൽ നൽകിയ പരാതിയിൽ റൂളിംഗ് നൽകിയത് പിന്നീട് കർണാടക അപ്പലേറ്റ് അതോറിറ്റിയും (AAAR) ശരിവക്കുകയുണ്ടായി. കോർപറേറ്റ് ഓഫീസും മറ്റു യൂണിറ്റുകളും വ്യത്യസ്ത വ്യക്തികളാണ് ആയതിനാൽ കോർപറേറ്റ് ഓഫീസിലെ ജീവനക്കാർ മറ്റുള്ള യൂണിറ്റുകൾക്ക് നൽകുന്ന സേവനങ്ങൾ CGST നിയമപ്രകാരം സപ്ലൈ എന്നതിന്റെ കീഴിൽ വരുമെന്നും പ്രതിഫലം ഒന്നും ഇല്ലെങ്കിൽ കൂടി GST ബാധകമായിരിക്കുമെന്നും ഈ റൂളിംഗ് പറയുന്നു.

## തെറ്റായി അടച്ചുപോയ നികുതി അഡ്ജസ്റ്റ്മെന്റ്

തെറ്റായ ഹെഡിൽ മനഃപൂർവമല്ലാത്ത അടച്ചുപോയ നികുതി ശരിയായ ഹെഡിലേക്കു അഡ്ജസ്റ്റ് ചെയ്ത് കൊടുക്കേണ്ടതാണെന്നു ബഹുമാനപ്പെട്ട കേരള ഹൈകോടതി വിധിക്കുകയുണ്ടായി. സെക്ഷൻ 77 പ്രകാരം മറ്റൊന്നിനു പകരം ഹെഡ്ഡുമാറി തെറ്റായി അടച്ചുപോയ നികുതി റീഫണ്ടായി നൽകുന്ന കാര്യം പറയുന്നു. എന്നാൽ റൂൾ നാല് പ്രകാരം ഇത്തരം സന്ദർഭങ്ങളിൽ ശരിയായ ഹെഡിലേക്കു അഡ്ജസ്റ്റ് ചെയ്തു കൊടുക്കുന്നതിനെ പറ്റിയാണ് പറയുന്നത്. ഇത്തരത്തിൽ നികുതി ക്രമീകരണം മുഴുവൻ കുടിശ്ശികയായ തുകക്കും നടത്തിയശേഷം FORM GST RFD-07 -പാർട്ട്- A നൽകേണ്ടതുമാണ്. ഇതിനു പ്രാമുഖ്യം നൽകിക്കൊണ്ട് IGST യ്ക്ക് പകരം തെറ്റായി SGST യിൽ അടച്ചുപോയ നികുതി അഡ്ജസ്റ്റ ചെയ്യണമെന്ന പെറ്റിഷണറുടെ അപേക്ഷപരിഗണിച്ചു ഹെഡ്ഡുമാറി തെറ്റായി അടച്ചു പോയനികുതി IGST യിലേക്ക് ട്രാൻസ്ഫർ ചെയ്യണമെന്ന് വിധിച്ചത്.

## പ്രവർത്തിച്ചുകൊണ്ടിരിക്കുന്ന ഫാക്ടറി വില്പന

പ്രവർത്തിച്ചുകൊണ്ടിരിക്കുന്ന തങ്ങളുടെ ഒരു ഉത്പാദന ഫാക്ടറി നിശ്ചിത തുക പ്രതിഫലമായി വാങ്ങി മൊത്തമായി വില്പനനടത്തുകയാണെങ്കിൽ ആ ട്രാൻസാക്ഷൻ ജീയെസ്റ്റിയിൽ ഏതുഗണത്തിലാണ് കരുതുക എന്ന സംശയനിവാരണത്തിനായി രാജശ്രീഫുഡ്സ് പ്രൈവറ്റ്ലിമിറ്റഡ് എന്നസ്ഥാപനം അതോറിറ്റി ഫോർ അഡ്വാൻസ് റൂളിംഗ് (AAR ) കർണാടക ബെഞ്ച് മുമ്പാകെ സമർപ്പിച്ച ഹർജിതീർപ്പാക്കികൊണ്ട് അതോറിറ്റി പറഞ്ഞത് പ്രവർത്തന ത്വരിതമായ ഒരു വ്യവസായ സ്ഥാപനം അതിന്റെ മൊത്തം ആസ്തിവഹകൾ ബാങ്ക് വായ്പ അടക്കമുള്ള ബാധ്യതളോടൊപ്പം ഒരു നിശ്ചിത തുകയ്ക്ക് വില്പന നടത്തിയാൽ ഇത്തരം സ്ഥാപനങ്ങൾ വാങ്ങുന്ന ആൾ മറ്റൊരു സ്ഥാപനമായി അത് തുടർന്ന് പോകുമെന്നും അത്തരം ഇടപാടുകൾ ഗോയിംങ് കൺസേൺ എന്ന ഗണത്തിൽ വരാമെന്നും അങ്ങിനെ വന്നാൽ അതൊരു ചരക്കുവിതരണമല്ല മറിച്ച സേവന വിതരണമാണെന്നും അതുകൊണ്ട് നിലവിലെ നിയമപ്രകാരം നികുതി ഒഴിവുഗണത്തിൽപെടുമെന്നും റൂളിംഗ് നൽകുകയുണ്ടായി (നോട്ടിഫിക്കേഷൻ 12 / 2017 CT (R) 28 .06 .2017 ).

## സഹ ഉടമകളുടെ വാടക വിഹിതത്തിനുള്ള ഒഴിവുകൾ

ഒരു ജോയിന്റ് പ്രോപ്പർട്ടിയുടെ സഹഉടമകളായ എല്ലാവർക്കും SSI എക്സെമ്പ്ഷനു അർഹതയുണ്ടായിരിക്കുന്നതാണെന്നു അഡ്വാൻസ് റൂളിംഗ് അതോറിറ്റി (GST AAR, KERALA) തീരുമാക്കുകയുണ്ടായി. അതായത് ജിഎസ്ടി രെജിസ്ട്രേഷൻ എടുക്കുന്നതിനു മുൻപ് ചെറുകിട ബിസ്സിനസ്സുകാർക്കു ലഭിക്കുന്ന ഇരുപതുലക്ഷം വരെയുള്ള ഒഴിവുകിഴിവുകൾക്കു സഹ ഉടമകൾ ഓരോരുത്തർക്കും പ്രത്യേകം പ്രത്യേകം അവകാശമുണ്ടായിരിക്കുന്നതാണ്. (SECTION 22 OF GST ACT,2017) ഒരുജോയിന്റ് പ്രോപ്പർട്ടിവാടകക്ക് കൊടുക്കുമ്പോൾ കിട്ടുന്ന മൊത്തം വാടകത്തുക നികുതി നിശ്ചയിക്കുന്നതിനുള്ള ഘടകമല്ലെന്നു സാരം.

ആലുവ,
30-12-2019.

എം.ആർ.രാമചന്ദ്രൻ
സൂപ്രണ്ടന്റ്
mrramachandranmr@gmail.com